5

आंतरिक पुनर्निर्माण

[INTERNAL RECONSTRUCTION]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- **"पुनर्निर्माण" शब्द का अर्थ समझने में।**
- **अंशों के उप-विभाजन** (Sub-divide) **एवं समेकन** (Consolidate) **में।**
- **अंशों के स्टॉक में एवं स्टॉक के अंशों में बदलने में।**
- **आंतरिक पुनर्निर्माण के समय पर समायोजनों के लेखे करने में।**

1. पुनर्निर्माण का अर्थ

(MEANING OF RECONSTRUCTION)

जब एक कम्पनी में लगातार कई वर्षों से हानि कि स्थिति बनी हुई हो, कम्पनी के स्थिति विवरण, वित्तीय स्थिति के सत्य एवं सही दृश्य नहीं दर्शाते हों। ऐसी कम्पनी में सम्पत्तियों का अधिमूल्य रहता है, चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में काल्पनिक (अवास्तविक) सम्पत्तियाँ, अनुपयोगी अमूर्त सम्पत्तियाँ तथा लाभ और हानि खाते का विकलन (Debit) शेष होता है। ऐसी स्थिति में वित्तीय विवरण सही चित्रण प्रस्तुत नहीं करते हैं तथा वास्तविक शुद्ध सम्पत्ति (जो उचित होनी चाहिए) से अधिक शुद्ध सम्पत्ति दर्शाते हैं। संक्षेप में कम्पनी अति-पूँजीकृत हो जाती है। ऐसी स्थिति में पुनर्निर्माण की आवश्यकता होती है।

पुनर्निर्माण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन, दायित्वों के पुनःनिर्धारण द्वारा तथा अंशों के चुकता मूल्य को कम करके या/और अंशों के विभिन्न वर्गों से जुड़े अधिकारों में परिवर्तन द्वारा पूर्व में उठाई गयी हानियों को अपलिखित करके एक कम्पनी के मामलों को पुनर्गठित किया जाता है। पुनर्निर्माण का उद्देश्य आमतौर पर पूँजी का पुनर्गठन करना या लेनदारों के साथ समझौते करना या अर्थव्यवस्था को प्रभावित करना रहता है। इस तरह की प्रक्रिया आंतरिक पुनर्निर्माण कहलाती है, जिसको कम्पनी के समापन किये बिना एक नई कम्पनी बनाकर किया जाता है। तथापि, बाह्य पुनर्निमाण भी किया जा सकता है। जब किसी संस्थान को किसी कम्पनी द्वारा लिया जा रहा हो तथा उसका हस्तान्तरण हो रहा हो, किसी बाहरी पक्षकार को नहीं वरन् एक अन्य कम्पनी को जिसमें पर्याप्त वे

© The Institute of Chartered Accountants of India

ही अंशधारक हों ताकि हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा उसको चलाया जा सके तो वह बाह्य हस्तान्तरण कहलाता है। ऐसा बाह्य हस्तान्तरण अनिवार्यतः AS-14 में 'विलयन की प्रकृति के एकीकरण' शीर्षक के अन्तर्गत समझाये गए हैं।

1.1 आंतरिक एवं बाह्य पुनर्निर्माण में अन्तर (Difference between Internal and External

आधार (Basis)	आंतरिक पुनर्निर्माण (Internal Reconstruction)	बाह्य पुनर्निर्माण (External Reconstruction)
परिशोधन	मौजूदा कम्पनी परिशोधित नहीं होती।	मौजूदा कम्पनी परिशोधित हो जाती है।
गठन	किसी नई कम्पनी का गठन नहीं होता सिर्फ अंशधारकों एवं ऋण दाताओं के अधिकारों में परिवर्तन किया जाता है।	परिशोधित कम्पनी को संभालने हेतु नई कम्पनी का गठन किया जाता है।
पूँजी का पराभव	पूँजी का पराभव होता है तथा कई बार बाहरी देनदारों को अपने दावों में कमी करनी पड़ती है।	पूँजी का कोई पराभव नहीं होता, दरअसल यहाँ कम्पनी की नई अंश पूँजी होती है।
वैधानिक स्थिति	आंतरिक पुनर्निर्माण कम्पनी अधिनियम के 1956 के प्रावधान की धारा 100 के अंतर्गत किया जाता है।	बाह्य पुनर्निर्माण कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 494 के अंतर्गत किया जाता है।

2. आंतरिक पुनर्निर्माण की विधियाँ

(METHODS OF INTERNAL RECONSTRUCTION)

आंतरिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को परिनियोजित करने के लिए सामान्यतः निम्नलिखित विधियाँ कार्यरत हैं या एक साथ प्रयुक्त हैं—

(1) अंश पूँजी में परिवर्तन (Alteration of Share Capital) कम्पनी अधिनियम की धारा 94, 95, 97 के अनुसार।

(2) अंशधारियों के अधिकारों में रूपान्तर कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 106 के अनुसार।

(3) अंश पूँजी में पराभव कम्पनी अधिनियम, 1956, धारा 100 से 105 के अनुसार।

(4) कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 391 से 393 तथा धारा 394A के अनुसार समझौता / व्यवस्थापन।

(5) अंशों का समर्पण।

2.1 अंश पूँजी में परिवर्तन (Alteration of Share Capital)

अंशों का उपविभाजन एवं समेकन (Sub-division and Consolidation of Shares)—यदि कम्पनी के अन्तर्नियम अनुमति प्रदान करें तो कम्पनी सामान्य सभा में निर्णय करके कम अंक के मूल्य के अंशों को अधिक मूल्य के अंशों में समेकित कर सकती है या अधिक अंकित मूल्य के अंशों में उपविभाजित कर सकती है। यदि अंश पूर्णदत्त नहीं हैं तो विभाजित अंशों में अंकित मूल्य और चुकता मूल्य का अनुपात वही होना चाहिए, जो उप-विभाजन से पहले था।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण के लिए, ₹ 10,00,000 की पूँजी ₹ 75 पर चुकता ₹ 100 वाले 10,000 समता अंशों के साथ एक कम्पनी अपनी पूँजी को प्रत्येक ₹ 100 के समता अंश को ₹ 10 प्रति वाले 10 अंशों में विखंडन द्वारा मान्यता देने का निर्णय करती है। ऐसी स्थिति में परिणामी प्रविष्टि पारित की जायेगी—

		Dr.	Cr.
		₹	₹
Equity Share Capital (₹ 100) A/c	Dr.	7,50,000	
To Equity Share Capital (₹ 10) A/c			7,50,000
(Being the sub-division of 10,000 shares of ₹ 100 each with ₹ 75 paid up thereon into 1,00,000 shares of ₹ 10 each with ₹ 7.50 paid up thereon as per the resolution of shareholders passed in the General Meeting held on....)			

कम मूल्य के अंशों को अधिक मूल्य के अंशों में समेकित करने एवं पूर्णदत्त अंशों को स्टॉक में परिवर्तन करने पर समान प्रविष्टि की जाएगी।

उदाहरण (Illustration) 1

31.12.2006 पर, बी लिमिटेड के पास ₹ 10 वाले 20,000 समता अंश अधिकृत पूँजी के रूप में थे तथा सभी अंशों का निर्गमन ₹ 8 चुकता पर हुआ था। जून 2007 में कम्पनी की सामान्य सभा में प्रत्येक अंश का उपविभाजन ₹ 5 वाले ₹ 4 चुकता के साथ करने का निर्णय लिया गया। जून 2008 में कम्पनी की सामान्य सभा में ₹ 5 वाले ₹ 4 प्रति अंश चुकता के 20 अंशों का मिश्रण ₹ 100 प्रत्येक ₹ 80 चुकता के अंशों में करने का प्रस्ताव पारित हुआ।

पंजी प्रविष्टियाँ पारित कीजिए तथा 31.12.2006, 31.12.2007 और 31.12.2008 पर आर्थिक चिट्ठे में अंश पूँजी को कैसे दर्शायेंगे।

समाधान (Solution)

Journal Entries

2007			₹	₹
June	Equity Share Capital (₹ 10) A/c	Dr.	1,60,000	
	To Equity Share Capital (₹ 5) A/c			1,60,000
	(Being the sub-division of 20,000 ₹ 10 share with ₹ 8 paid up into 40,000 shares ₹ 5 each with ₹ 4 paid up by resolution in general meeting dated....)			
2008			₹	₹
June	Equity Share Capital (₹ 5) A/c	Dr.	1,60,000	
	To Equity Share Capital (₹ 100) A/c			1,60,000
	(Being consolidation of 40,000 shares of ₹ 5 with ₹ 4 paid up into 2,000 ₹ 100 shares with ₹ 80 paid up as per resolution in general meeting dated....)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

Balance Sheet (includes)

Liabilities :	₹
As on 31-12-2004	
1. Share Capital	
Authorised :	
20,000 Equity Shares of ₹ 10 each	2,00,000
Issued and Subscribed :	
20,000 Equity Shares of ₹ 10 each ₹ 8 per share called up	1,60,000
As on 31-12-2005	
1. Share Capital	₹
Authorised :	
40,000 Equity Shares of ₹ 5 each	2,00,000
Issued and Subscribed :	
40,000 Equity Shares of ₹ 5 each ₹ 4 per share called up	1,60,000
As on 31-12-2006	
1. Share Capital	₹
Authorised :	
2,000 Equity Shares of ₹ 100 each	2,00,000
Issued and Subscribed :	
20,000 Equity Shares of ₹ 100 each ₹ 80 per share called up	1,60,000

टिप्पणी (Notes)—कुछ लेखाकार रकम के समान रहने पर कोई प्रविष्टि ना करना पसंद करते हैं। यहाँ तक कि ये याचित हिस्से हेतु एक प्रविष्टि करते हैं, तथा अंश पूँजी के आयाचित या अनिर्गमित हिस्से के लिए नहीं करते हैं।

पूर्णदत्त अंशों का स्टॉक में एवं स्टॉक का अंशों में परिवर्तन (Conversion of fully paid up Shares into stock and Stock into Shares)—स्टॉक का अर्थ है अंश पूँजी का एक इकाई में समेकन करना जो विभाज्य भागों में बटी हो। यद्यपि अंशपूँजी का एक अंश में बदलना असंभव है, स्टॉक की किसी भी राशि को अंतरित किया जा सकता है। व्यवहार में कम्पनियाँ स्टॉक के अंतरण को गुणकों (जैसे-₹ 100 के गुणकों) तक सीमित रखती है। एक कम्पनी अपने पूर्णदत्त अंशों को स्टॉक में परिवर्तित कर सकती है [धारा 94 (c)]। कम्पनी द्वारा अंशों को स्टॉक में परिवर्तन करने के पश्चात् पुस्तपालन प्रविष्टियों में केवल अंश पूँजी का स्टॉक में अंतरण रिकार्ड किया जाता है। परन्तु एक अलग से स्टॉक लेखा रखा जाता है जिसमें सदस्यों की धारकता का विवरण रखा जाता है और इसके अंतरगत वार्षिक रिटर्न को संशोधित किया जाता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) 2

31.12.2006 पर, सी लिमिटेड की अधिकृत अंश पूँजी ₹50,000, ₹100 प्रति के अंशों में विभाजित थी, जिसमें से ₹4,000 समता अंश निर्गमित हुए और पूर्ण चुकता हुए। जून 2007 में कम्पनी ने निर्गमित अंशों को स्टॉक में परिवर्तित करने का निर्णय लिया। परन्तु जून 2008 में कम्पनी ने स्टॉक को ₹10 प्रति पूर्ण चुकता अंशों में पुनःपरिवर्तित कर दिया। कम्पनी की सामान्य सभा में ₹5 वाले ₹4 प्रति अंश चुकता के 20 अंशों का मिश्रण ₹100 प्रत्येक ₹80 चुकता के अंशों में करने का प्रस्ताव पारित हुआ।

पंजी प्रविष्टियाँ पारित कीजिए तथा 31.12.2006, 31.12.2007 और 31.12.2008 पर आर्थिक चिट्ठे में अंश पूँजी को कैसे दर्शायेंगे।

समाधान (Solution)

Journal Entries

2007			₹	₹
June	Equity Share Capital A/c	Dr.	4,00,000	
	To Equity Stock A/c			4,00,000
	(Being conversion of ₹ 4,000 fully paid Equity Shares of ₹ 100 into ₹ 4,00,000 Equity Stock as per resolution in general meeting dated....)			
2008			₹	₹
June	Equity Stock A/c	Dr.	4,00,000	
	To Equity Share Capital A/c			4,00,000
	(Being re-conversion of ₹ 4,00,000 Equity Stock into 40,000 Shares of ₹10 fully paid Equity Shares as per resolution in general meeting dated....)			

Balance Sheet (includes)

Liabilities :	₹
As on 31-12-2006	
1. Share Capital	
Authorised :	
5,000 Equity Shares of ₹ 100 each	5,00,000
Issued and Subscribed :	
4,000 Equity Shares of ₹ 100 each fully called up	4,00,000
As on 31-12-2007	

© The Institute of Chartered Accountants of India

1. Share Capital	₹
Authorised :	
5,000 Equity Shares of ₹ 100 each	5,00,000
Issued and Subscribed :	
Equity Stock 4,000 Equity Shares of ₹ 100 converted into stock	4,00,000

As on 31-12-2008

1. Share Capital	
Authorised :	
50,000 Equity Shares of ₹ 10 each	5,00,000
Issued and Subscribed :	
40,000 Equity Shares of ₹ 10 each fully called up	4,00,000

2.2 अंशधारियों के अधिकारों में तबदीली (Variation of Shareholders Rights)

जब किसी कम्पनी ने विभिन्न श्रेणी के अंश, जिनके साथ विभिन्न प्रकार के अधिकार या विशेषाधिकार संलग्न हों, निर्गमित किए हों, जैसे कि, लाभांश के लिए अधिकार, मतदान का अधिकार इत्यादि। ऐसे किसी भी अधिकार को, किसी भी प्रकार से परिवर्तित किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप कम्पनी वरीयता अंशों पर लाभांश की दर में परिवर्तन कर सकती है, संचयी वरीयता अंशों को अंश पूँजी की राशि बदले बिना, गैर संचयी वरीयता अंशों में परिवर्तित कर सकती है।

2.3 अंश पूँजी में कमी (Reduction of Share Capital)

कम्पनी अधिनियम की धारा 100 अंश पूँजी में पराभव की प्रक्रिया को निर्धारित करता है। यह करने का एक तरीका है प्रदत्त पूँजी को कम करना। वास्तविकता में, कम्पनी की सम्पत्ति, उस अंश पूँजी को नहीं दर्शाती जो दीर्घ समय से हानि उठा रही हो। ऐसी अवस्था में पूँजी पराभव की किसी भी योजना द्वारा लॉस्ट पूँजी का अपलेखन करना चाहिए।

यह पराभव अंशधारियों को भुगतना होगा तथा पराभव की राशि को Capital reduction account अथवा Reconstruction account में क्रेडिट कर दिया जाता है।

(1) **प्रदत्त मूल्य में पराभव**—यहाँ अंकित मूल्य समान रहता है केवल प्रदत्त मूल्य कम हो जाता है।

(a) सिर्फ चुकता मूल्य में कमी— यहाँ अंश का अंकित मूल्य एकसमान ही रहता है और सिर्फ चुकता मूल्य ही कम होता है। उदाहरण हेतु ₹ 100 प्रति अंश की चुकता पूँजी को ₹ 10 प्रति अंश चुकता मूल्य तक घटाने पर अंशधारी सहमत हो सकते हैं। ₹ 90 का त्याग है तथा प्रविष्टि होगी—

Share Capital Account	Dr.	(₹ 90 × No. of Shares)
To capital Reduction Account		(₹ 90 × No. of Shares)

© The Institute of Chartered Accountants of India

(b) चुकता तथा अंकित दोनों मूल्यों में कमी— इस दशा में, चुकता पूँजी एवं अंशों का अंकित मूल्य दोनों ही कम हो रहे हैं। उपर्युक्त उदाहरण को जारी रखते हुए, प्रविष्टि होगी—

Share Capital Account (₹ 100 Share)	Dr.	(₹ 100 × No. of Shares)
To Share Capital (₹ 10 Share)		(₹ 10 × No. of Shares)
To Capital Reduction Account		(₹ 90 × No. of Shares)

इस प्रकार इस तरह के उपचार में वास्तविक अंश पूँजी खाते को बंद करने के रूप में नाम (डेबिट) करेंगे। चुकता के रूप में उपचारित राशि के साथ नए अंश पूँजी खाते को जमा (क्रेडिट) करेंगे; तथा अन्तर कि राशि से पूँजी कम खाता जमा (क्रेडिट) करेंगे।

2.4 समझौता / व्यवस्था (Compromise/Arrangement)

समझौता तथा व्यवस्था की योजना एक कम्पनी और उसके सदस्यों एवं उसके बाहरी दायित्वों के बीच अनुबंध बताती है, जब कम्पनी का वित्तीय समस्याओं से सामना होता है। इस प्रक्रिया में अंशधारकों, देनदारों, ऋणपत्र धारकों अथवा सभी के द्वारा हानि सहना शामिल है। कुछ दशाओं हेतु, लेखांकन उपचार निम्नलिखित हैं—

(1) जब इक्विटी अंश धारक अपने संचय एवं संचित लाभ के अधिकार को त्यागते हैं।

प्रविष्टि—Reserves Account	Dr.	With the amount
To Reconstruction Account		of reserve

(2) बाहरी दायित्वों का कम राशि पर समाधान दायित्वों जैसे कि विविध लेनदार, अंतिम भुगतान के रूप में कम राशि स्वीकार करने को सहमत हो सकते हैं इसका उपचार निम्नानुसार किया जायेगा—

प्रविष्टि—Outside Liabilities Account	Dr.	With the amount of sacrifice
Provision Account if any	Dr.	made by creditors
To Reconstruction Account		debentureholders etc.

2.5 अंशों का समर्पण (Surrender of Shares)

अंशधारकों द्वारा अंशों को समर्पण किया जाता है। इन अंशों को फिर ऋणपत्र धारकों एवं देनदारों को आंवटित कर दिये जाते हैं, जिससे उनके दायित्व कम किए जा सकें। बचे हुए समर्पित अंशों को रद्द कर दिया जाता है।

3. आंतरिक पुनर्निर्माण की दशा में प्रविष्टियाँ

(ENTRIES IN CASE OF INTERNAT RECONSTRUCTION)

पुनर्निर्माण की योजना के लागू हो जाने पर न्यायालय द्वारा विशेष प्रस्ताव की सम्पुष्टी के माध्यम से निम्न लेखे बनाए जायेंगे—

(1) किसी संपत्ति के मूल्य में कोई वृद्धि या किसी दायित्व की राशि में कमी को सम्बद्ध खाते में डेबिट करें तथा पूँजी कटौती खाते को क्रेडिट करें।

(2) सभी नाम मात्र की संपत्तियों के खाते अपलिखित करें (ख्याति तथा पेटेन्टों सहित) तथा सम्बद्ध खातों को क्रेडिट करके सम्पत्तियों के अधिमूल्यन को दूर करें और पूँजी

© The Institute of Chartered Accountants of India

कटौती खाता या (पुनर्निर्माण खाता) डेबिट करें। इस उद्देश्य के लिए कम्पनी की पुस्तकों में किसी भी संचय को काम में लाया जा सकता है।

यदि पूँजी कटौती खाते में कोई शेष बचता है तो उसे पूँजी खाते में अन्तरित कर दिया जाना चाहिए।

पुनर्निर्मित कम्पनी का चिट्ठा तैयार करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए—

(a) कम्पनी के नाम के पश्चात् शब्द "and reduced" जोड़ा जाना चाहिए, यदि न्यायालय ऐसा आदेश दे तो।

(b) स्थायी सम्पत्तियों की दशा में, पुनर्निर्माण योजना के अन्तर्गत अपलिखित राशि को पाँच तक दिखाया जाना चाहिए।

उदाहरण (Illustration) 3

	₹	₹
सम्पत्तियाँ (Assets)—		
स्थायी सम्पत्तियाँ—		
स्वतंत्र सम्पत्तियाँ	4,25,000	
संयंत्र	50,000	
एकस्व	37,500	
ख्याति	1,30,000	6,42,500
व्यापारिक निवेश (लागत पर)		55,000
चालू सम्पत्तियाँ—		
देनदार		4,85,000
रहतिया	4,25,000	
अस्थिगत विज्ञापन	1,00,000	10,10,000
लाभ एवं हानि खाता		4,35,000
योग		21,42,500
दायित्व (Liabilities)—		
अंश पूँजी —		
4,000 6% ₹ 100 प्रत्येक के संचयी पूर्वाधिकार अंश	4,00,000	
₹ 10 प्रत्येक के 75,000 समता अंश	7,50,000	11,50,000
6% ऋणपत्र (स्वतंत्र सम्पत्तियों पर रक्षित)	3,75,000	
उपार्जित ब्याज	22,500	3,97,500
चालू दायित्व—		
अधिकोष अधिविकर्ष	1,95,000	
लेनदार	3,00,000	
निदेशक ऋण	1,00,000	5,95,000
योग		21,42,500

© The Institute of Chartered Accountants of India

1.1.2006 पर प्रभावी पुनर्गठन कि एक योजना न्यायालय द्वारा स्वीकृत की गयी, जिससे—

(i) पूर्वाधिकार अंश ₹75 प्रति तक एवं समता अंश ₹2 प्रति तक अपलिखित करें।

(ii) पूर्वाधिकार अंश लाभांश का, जो चार वर्षों हेतु बकाया है 3/4 भाग माफ किया तथा शेष त्रिमास हेतु ₹2 प्रति के समता अंशों को आवंटित किया।

(iii) ऋणपत्रों पर उपार्जित ब्याज नकद में भुगतान किया।

(iv) ऋणपत्र धारक अपने धारण के अंशतः पुनःभुगतान में ₹1,00,000 पुस्तकीय मूल्य की स्वतंत्र सम्पत्तियों को ₹1,20,000 पर मूल्यांकन कर लेने तथा 8% प्रति वर्ष कि ब्याज दर पर कम्पनी की सम्पत्तियों पर अस्थायी प्रभार द्वारा रक्षित ₹1,30,000 की अतिरिक्त रोकड़ उपलब्ध कराने के लिए सहमत हुए।

(v) एकस्व, ख्याति तथा आस्थगित विज्ञापन को अपलिखित करना है।

(vi) रहतिये ₹65,000 द्वारा अपलिखित होगा।

(vii) ₹68,500 की रकम से अशोध्य ऋण हेतु प्रावधान करना है।

(viii) शेष स्वतंत्र सम्पत्तियाँ ₹3,87,500 पर पुनः मूल्यांकित होंगी।

(ix) व्यापारिक निवेश ₹1,40,000 पर बेचे गये।

(x) निदेशकों ने उनके ऋणों के निपटारे हेतु 90% तत्सम्बन्धी ₹2 प्रति के समता अंशों के आवंटन द्वारा तथा 5% नकद के रूप में लेने एवं शेष 5% को माफ करने हेतु सहमत हैं।

(xi) यहाँ ₹2,50,000 कुल की पूँजी प्रतिबद्धतायें थीं इन अनुबंधों को रद्द किये जाने के दंड के रूप में संविदा मूल्य का 5% का भुगतान किया जाना है।

(xii) कराधान एवं योजना की लागत को अनदेखा करें।

आपसे उपयुक्त व्यवहारों (रोकड़ व्यवहारों सहित) की प्रतिनिधित्व पंजी प्रविष्टियाँ दर्शाने एवं योजना की पूर्णता के पश्चात् कम्पनी का आर्थिक चिट्ठा तैयार करने का अनुरोध है।

समाधान (Solution)

Journal of A & Co. Ltd.

			Dr.	Cr.
2005			₹	₹
Dec. 31	Equity Share Capital A/c (₹ 10)	Dr.	7,50,000	
	To Capital Reduction A/c			6,00,000
	To Equity Share Capital A/c (₹ 2)			1,50,000
	(Reduction of equity shares of ₹ 10 each to shares of ₹ 2 each as per Reconstruction Scheme dated...)			
	6% Cum. Pref. Share Capital A/c (₹100)	Dr.	4,00,000	
	To Capital Reduction A/c			1,00,000
	To Pref. Share Capital A/c (₹ 75)			3,00,000
	(Reduction of preference shares of ₹ 100 each to shares of ₹ 75 each as per Reconstruction Scheme dated...)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

Dec. 31	Freehold Property A/c	Dr.	82,500	
	To Capital Reduction A/c			82,500
	(Appreciation in the value of property :			
	Book value Revalued Figure			
	₹ 1,00,000 ₹ 1,20,000			
	₹ 3,25,000 ₹ 3,87,500			
	Total ₹ 4,25,000 ₹ 7,07,500			
	Profit on revaluation : ₹ 82,500)			
"	6% Debentures A/c	Dr.	1,20,000	
	To Freehold Property A/c			1,20,000
	(Claims of dibenture-holders, in part, in respect of principal discharged by transfer of freehold property vide Scheme of Reconstruction)			
"	Accrued Interest A/c	Dr.	22,500	
	To Bank A/c			22,500
	(Debenture interest paid)			
"	Bank A/c	Dr.	1,30,000	
	To 8% Debentures A/c			1,30,000
	(8% Debentures issued for cash)			
"	Bank A/c	Dr.	1,40,000	
	To Trade Investment A/c			55,000
	To Capital Reduction A/c			85,000
	(Sale of Trade Investment for ₹ 1,40,000 cost being ₹ 55,000; profit credited to Capital Reduction Account)			
"	Director's Loan A/c	Dr.	1,00,000	
	To Equity Share Capital A/c			90,000
	To Bank A/c			5,000
	To Capital Reduction A/c			5,000
	(Directors' loan discharged by issue of equity shares of ₹ 90,000, cash payments of ₹ 5,000, vide Scheme of Reconstruction)			
Dec. 31	Capital Reduction A/c	Dr.	24,000	
	To Equity Share Capital A/c			24,000
	(Arreares of preference dividends satisfied by the issue of equity shares, 25% of the amount due, ₹ 96,000)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

"	Capital Reduction A/c	Dr.	8,48,500	
	To Patents			37,500
	To Goodwill			1,30,000
	To Deferred Advertising			1,00,000
	To Stock			65,500
	To Provision for Doubtful Debts			68,500
	To Bank			12,500
	To Profit & Loss Account			4,35,000
	(Writing off patents, goodwill, deferred advertising, profit and loss account and reducing the value of stock, making the required provision for doubtful debts and payment for cancellation of capital commitments)			

Balance Sheet of A & Co. Ltd. (And Reduced)
as on 1st January, 2006

Liabilities	₹	*Assets*	₹	₹
Share Capital		Fixed Assets		
1,32,000 Equity Shares of		Goodwill	1,30,000	
₹ 2 each	2,64,000	*Less:* Amount written		
(Of the above 45,000 shares)		off under the Scheme		
have been issued for consi-		of reconstruction	1,30,000	—
deration other than cash)		Freehold Property	4,25,000	
4,000 6% Preference shares of		*Add:* Appreciation under		
₹ 75 each	3,00,000	The Scheme of	82,500	
Reserve and Surplus		Reconstruction		
Secured Loans		*Lees:* Disposed of	1,20,000	3,87,500
6% Debentures	2,55,000			
8% Debentures	1,30,000	Plant		50,000
Unsecured Loans	—	Patents	37,500	
Current Liabilities and	—	*Less:* written off		
Provisions		under the Scheme		
Sundry Creditors	3,00,000	of Reconstruction	37,500	—

© The Institute of Chartered Accountants of India

	Current Assets,		
	Loans and Advances		
	A. Current Assets		
	Stock in trade		3,60,000
	Sundry Debtors	4,85,000	
	Less: Provision		
	for Dobtful Debt	68,500	4,16,500
	Cash at Bank		35,000
12,49,000			12,49,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश

(SUMMARY)

- पुनर्निर्माण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी कम्पनी के कामकाज को सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन, दायित्वों के पुनः निर्धारण तथा पहले से उठाई गई हानियों के अपलेखन द्वारा अंशों का प्रदय मूल्य घटाकर तथा/अथवा विभिन्न प्रकार के अंशों के साथ लगे अधिकारों में परिवर्तन करके पुनर्गठित किया जाता है।
- पुनर्निर्माण खाता वह खाता है जिसमें अंशधारियों द्वारा किये गए त्याग को स्थांतरित किया जाता है।
- पुनर्निर्माण के खाते के शेष को पूँजीकृत संचय खाते में स्थानांतरित कर दिया जाता है।
- पुनर्निर्माण खाता काल्पनिक सम्पत्तियों के अपलेखन हेतु, सम्पत्तियों के मूल्य के अपलेखन हेतु, नए दायित्वों के अभिलेखन हेतु, इत्यादि प्रयोग किया जाता है।
- आंतरिक पुनर्निर्माण कि विधियाँ—
  - (1) अंश पूँजी में परिवर्तन—
    - (a) अंशों का उपविभाजन एवं समेकन
    - (b) अंशों का स्टॉक एवं स्टॉक का अंशों में परिवर्तन
  - (2) अंशधारियों के अधिकारों में परिवर्तन
  - (3) अंश पूँजी में पराभव
  - (4) समझौता/व्यवस्था
  - (6) अंशों का समर्पण।

स्व-परीक्षा प्रश्न

(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

दिए गये विकल्पों से अधिक उपयुक्त उत्तर चुनिये—

1. जब पुनर्निर्माण को उद्देश्य सामान्यतः पूँजी को पुनः संगठित करना या लेनदारों के साथ संधि करना या अर्थव्यवस्था को प्रभावित करना हो तो इस प्रकार का पुनर्निर्माण कहलायेगा—
   - (अ) समापन के साथ आंतरिक पुनर्निर्माण
   - (ब) कम्पनी के समापन के बिना आंतरिक पुनर्निर्माण
   - (स) बाह्य पुनर्निर्माण
2. पुनर्निर्माण में निम्नलिखित सभी शामिल हैं सिवाय—
   - (अ) अंशों का उपविभाजन
   - (ब) अंशों का मिश्रण
   - (स) अंशों की पुनर्खरीद

[**उत्तर** (Answer)—1. (ब), 2. (स)।]

© The Institute of Chartered Accountants of India

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

3. एक कम्पनी के 'आंतरिक पुनर्निर्माण' एवं बाह्य पुनर्निर्माण के मध्य संक्षिप्त में अन्तर करें।

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

4. उदाहरण की सहायता से एक कम्पनी के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को समझाएँ।

IV. क्रियात्मक समस्याएँ (Practical Problems)

5. टॉय लिमिटेड की चुकता पूँजी ₹2,50,000 है जो ₹10 प्रति वाले 25,000 समता अंशों में विभक्त है। कम्पनी द्वारा लगातार हानि उठाने के कारण, निदेशकों ने कम्पनी के पुनर्निर्माण के लिए एक योजना तैयार की, जिसे न्यायालय द्वारा विधिवत अनुमोदित किया गया था। पुनर्निर्माण की शर्तें निम्नांकित थीं :

   (i) अपने वर्तमान धारण के स्थान पर, अंशधारक प्राप्त करते हैं :
      (a) अपने 2/5 स्वामित्व के बराबर पूर्णदत्त समता अंश।
      (b) उपर्युक्त नए समता अंशों की 20% की सीमा तक पूर्णदत्त 5% पूर्वाधिकार अंश।
      (c) ₹10 प्रति के 3,000 6% द्वितीय ऋणपत्र।
   (ii) ₹10 प्रति के 2,500 5% प्रथम ऋणपत्र का एक निर्गमन किया गया था जो पूर्णतः नकद में अभियाचित हुआ।
   (iii) सम्पत्तियाँ निम्नांकित तरीके से कम हो गयीं :
      (a) ख्याति ₹1,50,000 से ₹75,000 तक
      (b) यंत्र ₹50,000 से ₹37,500 तक
      (c) पट्टाधृत परिसर ₹75,000 से ₹62,000 तक

   पुनर्निर्माण की योजना में उपर्युक्त प्रभावों को देते हुए पंजी प्रविष्टियाँ दर्शाइए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

6

एकीकरण

[AMALGAMATION]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे :

- **एकीकरण का अर्थ एवं एकीकरण हेतु लेखांकन कि विधियाँ समझने में।**
- **हस्तांतरिती** (Transferee) **कम्पनी एवं हस्तांतरणकर्त्ता** (Transferor) **कम्पनी की अवधारणा के प्रोत्साहन में।**
- **ए. एस.** 14 (AS-14) **के अनुसार एकीकरण की दोनों बिधियों के अंतर्गत क्रय प्रतिफल की गणना करने में।**
- **विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों को बंद करने की प्रविष्टियाँ करने में।**
- **क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में विक्रेता कम्पनी की संपत्तियों एवं दायित्वों को समामेलित करने तथा साथ ही अन्य समायोजनों का प्रभाव देने हेतु प्रविष्टियाँ कर सकने में।**

6.1 एकीकरण का अर्थ (Meaning of Amalgamation)

एक–एकीकरण में, दो या अधिक कम्पनियों द्वारा एक में संयुक्त विलय होता है या एक के द्वारा दूसरे को अधिकार में लिया जाता है। अतः 'एकीकरण' मद निम्नलिखित दो प्रकार की गतिविधियों पर विचार करती है—

(i) दो या अधिक कम्पनियों का एक नई कम्पनी के गठन में शामिल होना।

(ii) एक को अन्य द्वारा अवशोषित और सम्मिश्रण करना।

इस प्रकार एकीकरण में अवशोषण शामिल है।

कम्पनियों के साथ में जुड़ने का प्रयोजन विभिन्न लाभों को सुरक्षित करना है; जैसे कि, बड़े स्तर पर उत्पादन की अर्थव्यवस्था, प्रतियोगिता को रोकना, कुशलता में वृद्धि एवं विस्तार आदि।

परिसमापन होने वाली कम्पनियों या विलय हो जाने वाली कम्पनियों को विक्रेता कम्पनियाँ (Vendor companies) या हस्तान्तरक कम्पनियाँ (Transferor companies) कहते हैं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

एक नई कम्पनी, जिसका गठन परिसमापक कम्पनियों को अधिकार में लेने के लिए हुआ है, या जिस कम्पनी के साथ हस्तान्तरक कम्पनी का विलय हुआ है को, हस्तान्तरी (transferee) या क्रेता (vendee) कहते हैं।

एकीकरण की दशा में हस्तान्तरक कम्पनियों की सम्पत्तियों एवं दायित्वों को एकीकृत करते हैं तथा हस्तान्तरी कम्पनी ऐसी सभी सम्पत्तियों एवं दायित्वों पर अधिकार प्राप्त कर लेती है।

जहाँ एक उपक्रम किसी कम्पनी द्वारा चलाया जा रहा है तथा इसका अस्तित्व हस्तांतरण किसी गैर (outsider) को नहीं, बल्कि एक अन्य कम्पनी (जिसे मूलतः उन्हीं अंशधारकों द्वारा एकमत दृष्टि के साथ हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा जारी रखा जा रहा है) को किया जाता है, तो वह बाह्य पुनर्निर्माण है। ऐसे बाह्य पुनर्निर्माण को मूलतः ए. एस. 14 (AS-14) में सम्मिश्रण स्वभाव के एकीकरण (Amalgamation in the nature of merger) के अन्तर्गत शामिल किया जाता है।

आधार	एकीकरण	अवशोषण	बाह्य पुनिर्माण
अर्थ	दो या अधिक कम्पनियाँ एक साथ मिलकर एक नई कम्पनी के रूप में सामने आती हैं।	इस दशा में एक विद्यमान कम्पनी एक या अधिक विद्यमान कम्पनी को ले लेती हैं।	इस दशा में एक नई कम्पनी एक विद्यमान कम्पनी के व्यवसाय को ले लेती है।
शामिल कंपनियों की संख्या	दो या अधिक कम्पनियाँ मिलती हैं।	एक विद्यमान कम्पनी एक या अधिक विद्यमान कंपनियों के व्यावसाय को लेती है।	नई कम्पनी विद्यमान कम्पनी के व्यवसाय को लेती है।
परिणामी कंपनियों की संख्या	दो कम्पनियाँ एक परिणामी कम्पनी के रूप में सामने आती हैं।	नई परिणामी कम्पनी नहीं होती है।	इस दशा में एक नए प्रारूप की कम्पनी पहले से विद्यमान कम्पनी के व्यवसाय को ले लेती है।
उदाहरण	ए लि. और बी लि., सी लि. के रूप में एकीकृत होती हैं।	ए लि. अन्य विद्यमान कम्पनी के व्यवसाय कों अधिग्रहण करती है।	बी लि. का गठन विद्यमान कम्पनी ए लि. के व्यवसाय को अधिग्रहण करने के लिए होता है।

6.2 एकीकरण के प्रकार (Types of Amalgamation)

कम्पनी अधिनियम 1956 में एकीकरण मद की विशिष्टतः परिभाषा नहीं दी है, लेकिन अनेक वैधानिक निर्णयों से निष्कर्ष द्वारा एकीकरण की परिभाषा निकाली जा सकती है। भारतीय चार्टर्ड लेखाकार संस्थान में एकीकरणों के लेखांकन पर लेखांकन मानक AS-14 लागू किया गया है। यह लेखाकंन मानदण्ड निम्नलिखित दो प्रकार के एकीकरणों को मान्यता देता है—

(1) समिश्रण के स्वभाव का एकीकरण (Nature of merger)।

(2) क्रय की प्रवृति का एकीकरण (Nature of purchase)।

समिश्रण के स्वभाव का एकीकरण एक ऐसा एकीकरण है जो निम्न सभी शर्तों को पूरा करें —

(1) एकीकरण के पश्चात् हस्तांतरण कम्पनी की सभी सम्पत्तियाँ तथा दायित्व हस्तांतरी कम्पनी की सम्पत्तियाँ एवं दायित्व बन जाएँ।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(2) हस्तांतरक कम्पनी के समता अंशों के अंकित मूल्यों का कम से कम 90% भाग को धारण करने वाले अंशधारक (ऐसे अंशधारकों को छोड़कर जिन्होंने एकीकरण से तुरन्त पूर्व हस्तांतरी कम्पनी या उसकी सहायक या उसकी नामित कम्पनी में पहले से ही समता अंश धारित कर रखे हैं) एकीकरण के फलस्वरूप हस्तांतरी कम्पनी के समता अंशधारक बन जायें।

(3) हस्तांतरक कम्पनी के समता अंशधारक जो हस्तातंरी कम्पनी के समता अंशधारक बनने के लिए सहमत हुए हैं उन अंशधारकों को एकीकरण का प्रतिफल हस्तांतरी कम्पनी द्वारा पूर्णतः समता अंशों के निर्गमन द्वारा निपटाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त निम्नात्मक अंशों के लिये रोकड़ चुकाई जा सकती है।

(4) हस्तांतरक कम्पनी का व्यवसाय हस्तांतरी कम्पनी द्वारा एकीकरण के बाद चलाये जाना ज़ाहिर हो।

(5) हस्तांतरक कम्पनी की सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पुस्तकीय मूल्य में कोई समायोजन किये जाने का इरादा न हो। जब उनको हस्तांतरी कम्पनी के वित्तीय विवरणों में शामिल किया जाता है। सिवाय लेखांकन नीतियों में समरूपता के आश्वासन के।

यदि उपरोक्त दी हुई शर्तों में से कोई एक या अधिक शर्त एकीकरण में संतुष्ट नहीं होती है तो ऐसे एकीकरण को क्रय के स्वभाव का एकीकरण (Nature of purchase in amalgamations) कहा जायेगा।

6.3 क्रय प्रतिफल (Purchase Consideration)

एकीकरणों के लेखांकन के उद्देश्य हेतु, हम अनिवार्य रूप से लेखांकन मानदण्ड [AS-14] एकीकरणों के लेखांकन से दिशा-निर्देश पाते हैं। इस मानदण्ड AS-14 के अनुच्छेद 3 (g) में "क्रय प्रतिफल" मद की परिभाषा इस प्रकार है—

"निर्गमित अंशों एवं अन्य प्रतिभूतियों का कुल योग तथा रोकड़ अथवा अन्य सम्पतियों को हस्तांतरी कम्पनी के द्वारा भुगतान के रूप में हस्तांतरण कम्पनी के अंशधारकों को किया जाता है।"

सरल शब्दों में हस्तांतरक कम्पनी के व्यवसाय को लेने हेतु हस्तांतरी कम्पनी द्वारा हस्तातंरक कम्पनी को देय मूल्य है।

यह ध्यान रखना है कि क्रय प्रतिफल में उस राशि का समावेश नहीं होता है जो हस्तांतरी कम्पनी हस्तांतरक कम्पनी के लेनदारों को प्रत्यक्षतः चुकायेंगे। क्रय प्रतिफल में आवश्यक रूप से उसके तत्वों के उचित मूल्य पर निर्भर करता है।

उदाहरण के लिये जब प्रतिफल में प्रतिभूतियों का समावेश होता है तो वैधानिक प्राधिकार द्वारा तय किया गया मूल्य उचित मूल्य के तौर पर लिया जाता है। अन्य सम्पत्तियों की दशा में दी गयी सम्पतियों के संदर्भ में बाजार मूल्य को उचित मूल्य निर्धारित किया जा सकता है अथवा बाजार मूल्य की अनुपस्थिति में सम्पत्तियों का पुस्तकीय मूल्य विचारणीय होता है।

कभी-कभी एक या अधिक भावी घटनाओं के कारण क्रय प्रतिफल में कुछ समायोजन करने पड़ते हैं। प्रायः जब अतिरिक्त भुगतान संभावित हो और तर्कसंगत अनुमान के अन्तर्गत क्रय प्रतिफल की गणना को शामिल किया जाता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **1**

दायित्व (Liabilities)	₹ '000	**सम्पत्तियाँ** (Assets)	₹ '000
अंश पूँजी ₹10 प्रत्येक के समता अंश	75.00	भूमि एवं भवन	50.00
		संयंत्र एवं यंत्र	45.00
₹100 प्रत्येक के 14% पूर्वाधिकार	25.00	उपस्कर	10.50
अंश		विनियोग	5.00
सामान्य संचय	12.50	स्कंध	23.00
12% ऋणपत्र	40.00	देनदार	24.00
विविध लेनदार ओर चालू दायित्व	20.00	रोकड़ और बैंक अधिकोष	15.00
	172.50		172.50

अन्य सूचना (Other Information)—

(i) 10 अप्रैल, 2008 को Y लिमिटेड, X लिमिटेड को अधिग्रहिण कर लेती है।

(ii) X के ऋणपत्रधारियों का भुगतान Y लिमिटेड द्वारा 15% निजी ऋणपत्र 10% पारितोषिक के साथ निर्गमित किये जायेंगे।

(iii) X (एक्स) लिमिडेट के 14% पूर्वाधिकार अंशधारियों का भुगतान Y लिमिटेड द्वारा 15% पूर्वाधिकार अंशों को 20% पारितोषिक के साथ आवश्यक संख्या में निर्गमित किया जायेगा।

(iv) X लिमिटेड के अंश जिनका आन्तरिक मूल्य ₹20 और Y लिमिटेड ₹30, Y लिमिटेड, X लिमिटेड के समता अंशधारियों को संतुष्ट होने पर समता अंश आन्तरिक मूल्य के आधार पर निर्गमित करेगा। इसी प्रकार प्रविष्टि केवल सममूल्य पर की जायेगी। Y लिमिटेड प्रत्येक समता अंश का उचित मूल्य ₹10 है।

क्रय प्रतिफल की गणना कीजिये।

समाधान (Solution)

Computation of Purchase consideration	(₹ in '000)	Form
For Preference Shareholders of X Ltd.	30,00	30,000 15% preference Share in Y Ltd.
For equity shareholders of Y Ltd. (2/3 × 7,50,000) × ₹ 10 of ₹ 10 each	50,00	5,00,000 equity shares of Y Ltd.
Total Purchase consideration	80,00	

Note : Consideration for debenture holders should not be included above. Such debentures will be taken over by Y Ltd. and then discharged.

© The Institute of Chartered Accountants of India

6.4 एकीकरणों के लेखांकन की विधियाँ (Methods of Accounting for Amalgamations)

एकीकरण के लेखांकन की दो मुख्य विधियाँ इस प्रकार हैं—

(1) हितों के समूहीकरण की विधि (Pooling of interest method)

(2) क्रय विधि (The purchase method)

पहली विधि समिश्रण के स्वभाव के एकीकरण की दशा में काम में लाई जाती है। तथा दूसरी विधि क्रय के स्वभाव की दशा में काम में लाई जाती है।

हितों के समूहीकरण की विधि (Pooling of interest method)—हितों के समूहीकरण विधि के अन्तर्गत सभी सम्पत्तियों, दायित्वों और संचयों को हस्तांतरी कम्पनी द्वारा उनके विद्यमान मूल्यों पर लिया जाये, जब तक कि इन कम्पनियों द्वारा अपनाई जा रही लेखाकंन नीतियों में किसी अन्तर के कारण कोई समायोजन अपेक्षित न हो जाये। परिणाम स्वरूप, निर्गमित अंशपूँजी के रूप में रिकार्ड की गयी राशि के मध्य अन्तर (जमा रोकड़ अथवा अन्य सम्पत्तियों के रूप में अतिरिक्त प्रतिफल) तथा हस्तांतरक कम्पनी की अंशपूँजी की राशि के बीच अन्तर को संचयों से समायोजित किया जाना चाहिये।

क्रय विधि (Purchase method)—क्रय विधि के अंतर्गत, हस्तांतरक कम्पनी की सम्पत्तियों एवं दायित्वों को उनके विद्यमान मूल्यों पर शामिल करना चाहिये अथवा क्रय प्रतिफल को व्यक्तिगत रूप से चिन्हित सम्पतियों एवं दायित्वों को एकीकरण की तिथि से उचित के आधार पर प्रभारित किया जाना चाहिये। लेकिन वैधानिक संचयों के अतिरिक्त हस्तांतरक कम्पनी का कोई भी संचय हस्तांतरी कम्पनी के वित्तीय विवरणों में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिये। हस्तातंरक कम्पनी के वैधानिक संचय को निम्न जनरल प्रविष्टि के माध्यम से हस्तांतरी कम्पनी के चिट्टे में दर्शाया जाना चाहिये।

Amalgamation Adjustment A/c Dr.

To Statutary Reserve

जब हस्तांतरी कम्पनी द्वारा उपरोक्त वैधानिक संचयों को बनाये रखा जाना जरूरी न रहे तो लेखे की विपरीत प्रविष्टि बनाकर ऐसे संचयों का निराकरण करना चाहिये। क्रय विधि में हस्तांतरी कम्पनी द्वारा प्राप्त हस्तांतरक कम्पनी की शुद्ध सम्पत्तियों के मूल्य के ऊपर प्राप्त क्रय प्रतिफल की राशि के आधिक्य को हस्तांतरी कम्पनी के वित्तीय विवरणों में ख्याति के रूप में माना जाना चाहिये।

किसी कमी/न्यूनता को पूँजीगत संचय के माध्यम से दिखाया जायेगा। ख्याति को 5 वर्षों की अवधि में अपलिखित किया जाना चाहिये; जब तक एक लंबी अवधि को न्यायोचित न ठहराया जाये।

उदाहरण (Illustration) **2**

X लिमिटेड एवं Y लिमिटेड के चिट्ठे इस प्रकार हैं :

Balance Sheet, 31 March, 2008

दायित्व	X लिमि.	Y लिमि.	सम्पत्तियाँ	X लिमि.	Y लिमि.
	₹	₹		₹	₹
₹10 प्रत्येक के समता अंश पूँजी	50,00	30,00	भूमि एवं भवन	25,00	15,50
			संयंत्र एवं यंत्र	32,50	17,00
₹100 प्रत्येक के 14%	22,00	17,00	उपस्कर	5,75	3,50

© The Institute of Chartered Accountants of India

पूर्वाधिकार अंश पूँजी			विनियोग	7,00	5,00
सामान्य संचय	5,00	2,50	स्कंध	12,50	9,50
निर्यात लाभ संचय	3,00	2,00	देनदार	9,00	10,50
विनियोग अनुलाभ संचय	—	1,00	रोकड़ एवं बैंक	7,25	5,20
लाभ हानि खाता	7,50	5,00			
₹100 प्रत्येक के 13% ऋणपत्र	5,00	3,50			
व्यापारिक लेनदार	4,50	3,50			
अन्य चालू दायित्व	2,00	1,50			
	99,00	66,00		99,00	66,00

X लिमिटेड, Y लिमिटेड के व्यापार को 1 अप्रैल, 2008 को लेना तय करती है, क्रय प्रतिफल इस प्रकार है—

(1) ₹10 प्रत्येक के 3,50,000 समता अंश Y लिमिटेड के समता अंशधारियों को सम मूल्य पर निर्गमित किये जायेंगे।

(2) ₹100 प्रत्येक के 15% पूर्वाधिकार अंश Y लिमिटेड के पूर्वाधिकार अंशधारियों को 10% पारितोषिक के सथ निर्गमित किये जायेंगे।

Y लिमिटेड के ऋणपत्रों को X लिमिटेड के ऋणपत्रों की समान संख्या में परिवर्तित किया जायेगा तथा Y लिमिटेड के वैधानिक संचारों को दो वर्षों तक आगे ले जाया जायेगा।

एकीकरण के पश्चात् X लिमिटेड के चिट्ठे को दर्शाया जाये यह मानते हुए कि—

(1) एकीकरण समिश्रण के स्वभाव का है।

(2) एकीकरण क्रय के स्वभाव का है।

समाधान (Solution)

(a) **Amalgamation in the nature of merger :**

Balance Sheet of X Ltd.

Liabilities	₹ '000	Assets	₹ '000
Equity Share Capital (₹ 100 each)	85,00	Land & Buildings	40,50
15% Preference Share Capital		Plant & Machinery	49,50
(₹ 100)	18,70	Furniture & Fittings	9,25
14% Preference Share Capital	22,00	Investments	12,00
(₹ 100)		Stock	22,00
General Reserve	80	Debtors	19,30
Export Profit Reserve	5,00	Cash & Bank	12,45
Investment Allowance Reserve	1,00		
Profit & Loss A/c	12,50		
13% Debentures (₹ 100 each)	8,50		
Trade Creditors	8,00		
Other current liabilities	3,50		
	165,00		165,00

© The Institute of Chartered Accountants of India

The difference between the amount recorded as share capital issued and the amount of share capital of transferor company should be adjusted in reserves. Thus,

General Reserve = ₹ '000 [7,50 – (53,70 – 47,00)] = ₹ ('000) 80

(b) **Amalgamation in the nature of purchase :**

Balance Sheet of X Ltd.

Liabilities	₹ '000	Assets	₹ '000
Equity Share Capital (₹ 10 each)	85,00	Land & Buildings	40,50
15% Preference Share Capital		Plant & Machinery	49,50
(₹ 100)	18,70	Furniture & Fittings	9,25
14% Preference Share Capital	22,00	Investments	12,00
(₹ 100)		Stock	22,00
General Reserve	5,00*	Debtors	19,30
Capital Reserve (working)	3,80	Cash and Bank	12,45
Profit & Loss A/c	7,50	Amalgamation	
		Adjustments A/c	3,00
Export profit Reserve	5,00		
Investment Allowance Reserve	1,00		
13% Debentures (₹ 100 each)	8,50		
Trade Creditors	8,00		
Other current liabilities	3,50		
	168,00		168,00

Workings : Capital Reserve arising on Amalgamation—

(A)	Net Assets taken over :	₹ '000	₹ '000
	Sundry Asssets		66,00
	Less : 13% Debentures	3,50	
	Trade Creditors	3,50	
	Other current liabilities	1,50	
			8,50
			57,50
(B)	Purchases consideration :		
	To Equity Shareholders of Y Ltd,		35,00
	To Preference Shareholders of Y Ltd,		18,70
			53,70
(C)	Capital Reserve (A-B)		3,80

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **1**

P लिमिटेड, S लिमिटेड का संविलयन करता है। S लिमिटेड का चिट्ठा इस प्रकार है।

चिट्ठा

दायित्व (Liabilities)	₹	**सम्पत्तियाँ** (Assets)	₹
अंश पूँजी ₹100 प्रत्येक के (पूर्णदत्त)	2,00,000	विविध सम्पत्तियाँ	13,00,000
₹ 2,000 7% पूर्वाधिकार अंश ₹ 100 प्रत्येक के (पूर्णदत्त)			
5,000 समता अंश	5,00,000		
संचय	3,00,000		
6% ऋणपत्र	2,00,000		
व्यापारिक लेनदार	1,00,000		
	13,00,000		13,00,000

P लिमिटेड सहमत है—

(i) P लिमिटेड ने ₹100 वाले 9% पूर्वाधिकार अंश निर्गमित किये P लिमिटेड ने 3 अंश के अनुपात में 4 पूर्वाधिकार अंश S लिमिटेड को दिये।

(ii) S लिमिटेड के ऋणपत्रधारियों को S लिमिटेड में 6% ऋणपत्र जो 20% प्रीमियम पर शोधित होने थे, के बदले 8% बंधक ऋणपत्र निर्गमित किये।

(iii) प्रत्येक अंश पर ₹20 नगद में भुगतान किये तथा S लि. में धारित प्रत्येक पाँच अंश के बदले ₹100 वाले (बाजार मूल्य ₹ 125) 6 समता अंश निर्गमित किये।

(iv) व्यापारिक देनदार के दायित्व को मानना।

समाधान (Solution)

The Purchase consideration will be		₹	Form
Preference Shareholders :	2,000 × 3/4 × 100	1,50,000	9% Pref. Shares
Equity Shareholders :	5,000 × 20	1,00,000	Cash
	5,000 × 6/5 × 125	7,50,000	Equity Shares
		10,00,000	

माना की, विनिमय पर उत्पन्न कुछ भिन्नों की संख्या के बीस अंशों (पी लिमिटेड में समता अंशों के तुल्य) हेतु प्रत्येक को एक सौ पच्चीस रुपये प्रति अंश की दर से भुगतान करना होगा, शेष राशि समता अंशों के निर्गमन द्वारा तय की जायेगी। वैकल्पिक रूप से, भिन्नात्मक अंश प्रमाण पत्र निर्गमित होंगे, ये प्रस्तुति पर अंशों में परिवर्तित होंगे–भिन्नात्मक अंश प्रमाण पत्र के धारक ऐसे अन्य प्रमाणपत्र क्रय करेंगे या अपने द्वारा धारित को बेच देंगे।

* ए एस 14 के अनुसार, समामेलन के लिए प्रतिफल हस्तांतरी कम्पनी द्वारा हस्तान्तारक कम्पनी के अंशधारियों को निर्गमित कुल अंशों या अन्य प्रतिभूतियों तथा नकद या अन्य संपत्तियों के रूप में किये गये भुगतान के योग के समान होता है। इसलिए ऋणपत्र धारियों को निर्गमित ऋणपत्रों को क्रय प्रतिफल में शामिल नहीं किया जायेगा। व्यापारिक लेनदारों की तरह, एस लिमिटेड के ऋणपत्रों के दायित्व के सम्बन्ध में इन्हें P लिमिटेड द्वारा नए 8% ऋणपत्रों को जारी कर तय किया जायेगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **2**

Y लिमिटेड, X लिमिटेड के संविलयन का निर्णय लेता है। X लिमिटेड का चिट्टा इस प्रकार है—

चिट्ठा (Balance Sheet)

दायित्व (Liabilities)	₹	**सम्पत्तियाँ** (Assets)	₹
₹100 प्रत्येक के (पूर्णदत्त) 3,000 समता अंश	3,00,000	शुद्ध सम्पत्तियाँ	2,90,000
		लाभ–हानि खाता	70,000
पूर्वाधिकार अंश	60,000		———
	3,60,000		3,60,000

Y लिमिटेड, पूर्वाधिकार अंश धारियों के भुगतान हेतु नकद में ₹ 60,000 चुकाने तथा शेष में उसके ₹ 120 प्रति मूल्य पर समता अंश द्वारा देने के लिए सहमत है। Y लिमिटेड द्वारा चुकता क्रय प्रतिफल की गणना करें तथा इसे कैसे चुकाया जायेगा।

समाधान (Solution)

X लिमिटेड के ₹ 3,000 अंशों का मूलय ₹ 70 = ₹ 2,10,000

क्रय प्रतिफल होगा

⇒ समता अंशो हेतु ₹ 2,10,000 + पूर्वाधिकारी अंशधारियों संबंधित दायित्व हेतु ₹ 60,000

⇒ ₹ 2,70,000

उपरोक्त में से ₹ 60,000 नगद में होगा और Y लिमिटेड के समता अंश के रूप में ₹ 2,10,000, ₹ 120 प्रति अंश निर्गमित है; अंशों की संख्या जो कि निर्गमित कि जायेगी ⇒ ₹ 2,10,000 / ₹ 120

⇒ ₹ 1750 समता अंश

6.5 विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों को बन्द करने की जर्नल प्रविष्टियाँ (Journal Enteries to Close the Books of Vendor Company)

निम्नलिखित उदाहरण में दैनिक प्रविष्टिया की जायेगी। Wye लिमिटेड, Zed लिमिटेड के व्यवसाय को अधिगृहित करता है। जिसका आर्थिक चिट्टा 31 Dec., 2008 को इस प्रकार है :

दायित्व (Liabilities)	₹	**सम्पत्तियाँ** (Assets)	₹
₹100 प्रत्येक के अंश में विभाजित अंश पूँजी		ख्याति	2,00,000
6% पूर्वाधिकार अंश पूँजी	4,00,000	भूमि एवं भवन	4,00,000
समता अंश पूँजी	8,00,000	संयंत्र एवं यंत्र	6,00,000
पूँजीगत संचय	1,00,000	एकस्व	50,000
लाभ हानि खाता	50,000	स्कंध	1,50,000
6% ऋणपत्र	2,00,000	पुस्तकीय ऋण	1,80,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

उपरोक्त पर अदत्त ब्याज	12,000	रोकड़ अधिकोष	70,000
कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय (अनुमानित दायित्व ₹ 5,000)	8,000	अभिगोपक कमीशन	40,000
व्यापारिक लेनदार	1,20,000		
	16,90,000		16,90,000

Wye लिमिटेड सभी सम्पत्तियों (रोकड़ को छोड़ कर) और दायित्व (ऋणपत्रों पर अल्प ब्याज को छोड़कर) को अपने अधिकार में लेगा तथा निम्न भुगतान करेगा—

(i) Zed लि. में विद्यमान ऋणपत्रों हेतु, Wye लि. में ₹ 2,00,000 के 7% ऋणपत्र (₹100 प्रत्येक), इस उद्देश्य हेतु Wye लि. का प्रत्येक ऋणपत्र ₹ 105 मूल्य के समान माना गया है।

(ii) Zed लि. में प्रत्येक पूर्वाधिकार अंश हेतु ₹ 10 नगद तथा Wye लि. में एक 9% ₹100 प्रत्येक का पूर्वाधिकार अंश।

(iii) Zed लि. में प्रत्येक समता अंश हेतु ₹20 नगद में तथा ₹100 प्रत्येक का Wye लि. में एक समता अंश जो ₹140 बाजार मूल्य रखता है।

(iv) Zed लि. के समापन के व्यय ₹10,000 की सीमा तक Wye लि. द्वारा प्रतिपूर्ति किये जायेंगे। वास्तविक व्ययों की राशि ₹12,500 है।

Wye लि. भूमि तथा भवन ₹5,50,000 पर, यंत्र एवं संयत्र ₹ 6,50,000 पर तय एकस्व ₹20,000 पर मूल्यांकित करता है।

Purchase Consideration :

			₹	Form
(i)	Preference Share : ₹ 10 per share	40,000		Cash
	Preference shares	4,00,000	4,40,000	Preference shares
(ii)	Equity shares : 20 per share	1,60,000		Cash
	8,000 equity shares in Wye Ltd. @ ₹ 140	11,20,000	12,80,000	Equity shares
			17,20,000	

विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों को बन्द करने के विभिन्न चरण (Step to Close the Books of the Vendor Company)—

1. वसूली खाता खोलें एवं पुस्तक मूल्य पर सभी सम्पत्तियों को अन्तरित कर दें।

अपवाद : यदि क्रेता कम्पनी द्वारा रोकड़ नहीं ली जा रही है तो उसको अन्तरित न करें।

नोट : लाभ-हानि खाता (डेबिट) और अपलिखित न किये जाने वाले व्यय सम्पत्तियाँ नहीं हैं अतः अव्ययों को वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं करना चाहिये।

उपरोक्त दशा में निम्न जर्नल लेखा होगा—

The journal entry in the above case is :		₹	₹
Realisation A/c	Dr.	15,80,000	
To Sundries—			
Goodwill			2,00,000
Land & Building			4,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Plant & Machinery	6,00,000
Patents	50,000
Stock	1,50,000
Book debts	1,80,000

(Transfer of Assets to Realisation Account on Sale of Business to Wye Ltd.)

2. वसूली खाते में उन दायित्वों को हस्तांतरित करना चाहिये जिनको क्रेता कम्पनी द्वारा लिया जा रहा हो। प्रावधानों की दशा में वह भाग जो भविष्य में उत्पन्न हो सकने वाली दायित्व की राशि को दर्शाता है। इस प्रकार हस्तांतरित किया जाये तथा वह भाग जो आवश्यक नहीं है (अर्थात् संचय वाला भाग) लाभ के रूप में माना जाना चाहिये, तदानुसार उनका लेखा निम्न प्रकार किया जायेगा।

		₹	₹
6% Debentures in Wye Ltd.	Dr.	2,00,000	
Workmen's Compensation Reserve	Dr.	5,000	
Trade Creditors	Dr.	1,20,000	
To Realisation A/c			3,25,000
(Transfer of liabilities taken over by Wye Ltd. to Realisation A/c)			

3. क्रय प्रतिफल की राशि से क्रेता कम्पनी का खाता डेबिट करें एवं वसूली खाता क्रेडिट (Cr.) करें।

		₹	₹
Wye Ltd.	Dr.	17,20,000	
To Realisation A/c			17,20,000
(Amount receivable from Wye Ltd. for sale of business)			

4. क्रय प्रतिफल प्राप्त होने पर जो प्राप्त हो (रोकड़, ऋणपत्र, अंश आदि) डेबिट (Dr.) करें एवं क्रेता कम्पनी को क्रेडिट (Cr.) करें।

		₹	₹
Cash	Dr.	2,00,000	
9% Preference shares in Wye Ltd.	Dr.	4,00,000	
Equity Shares in Wye Ltd.	Dr.	11,20,000	
To Wye Ltd.			17,20,000
(Receipt of purchase consideration from the purchase company)			

5. समापन के व्ययों को प्रत्येक मामले की परिस्थितियों के अनुसार लेना पड़ता है। यदि विक्रेता कम्पनी उनको स्वयं वहन करती है तो वसूली खाते को डेबिट किया जाता है तथा रोकड़/बैंक खाते को क्रेडिट किया जाता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

यदि व्यय क्रेता कम्पनी द्वारा वहन किये जाते हैं तो प्रश्न को निम्न दो तरीकों में से किसी एक तरीके के अन्तर्गत निपटाया जा सकता है।

(i) इसे विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों से चुकाया जा सकता है।

(ii) यदि व्ययों को पहले विक्रेता कम्पनी द्वारा चुकाया जाता है तथा बाद में क्रेता कम्पनी द्वारा भुगतान किया जाता है तो निम्न दो लेखे बनाये जायेंगे।

(a) विक्रेता कम्पनी द्वारा व्ययों का भुगतान किया जाता है तो क्रेता कम्पनी को डेबिट करें एवं रोकड़ खाते को क्रेडिट करें।

(b) जब व्ययों की प्रतिपूर्ति की जाती है तो रोकड़ खाता डेबिट करें एवं क्रेता कम्पनी खाता क्रेडिट करें।

उपरोक्त दशा में Wye लिमिटेड को केवल अधिकतम ₹ 10,000 चुकाना है। जबकि व्यय की गई राशि ₹ 2,500 है अतः ₹ 2,500 Zed लिमिटेड द्वारा वहन की जायेगी। निम्नलिखित अपेक्षित प्रविष्टिया होंगी—

		₹	₹
Wye Ltd.	Dr.	10,000	
Realisation A/c	Dr.	2,500	
To Cash A/c			12,500
(Liquidation expenses out of which ₹ 10,000 is payable by Wye Ltd.)			
Cash A/c	Dr.	10,000	
To Wye Ltd.			10,000
(Account reimbursed by Wye Ltd. for expense)			

6. दायित्वों को क्रेता कम्पनी द्वारा नहीं लिया जाता है। उनकों चुका दिया जाता है दायित्वों का भुगतान करने पर संबद्ध दायित्वों का खाता डेबिट (Dr.) तथा रोकड़ खाता क्रेडिट (Cr.) किया जाता है। वास्तव में भुगतान की गई राशि एवं पुस्तकीय मूल्य के मध्य में कोई अन्तर होता है तो उसे वसूली खाते में हस्तांतरित करते हैं। इस सम्बन्ध में Zed लिमिटेड निम्न लेखें बनायेगी।

		₹	₹
Interest Outstanding	Dr.	12,000	
To Debentureholders A/c			12,000
(Amount due to debenture holders for debentures interest)			
Debentureholders	Dr.	12,000	
To Cash A/c			12,000
(Debentureholders paid cash ₹ 12,000 for outstanding interest)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

7. अधिमान अंशधारियों को उनके देय राशि से क्रेडिट (Cr.) करें एवं अधिमान अंशपूँजी को पुस्तकों में दिखाई गई राशि से डेबिट (Cr.) करें, यदि दोनों के मध्य कोई अन्तर हो तो उसे वसूली खाते में हस्तांतरित करें।

6% Pref. Share Capital A/c	Dr.	4,00,000	
Realisation A/c	Dr.	40,000	
To Preference Shareholders A/c			4,40,000
(The amount due to preference shareholders for capital and the extra amount payable under the scheme of absorption)			

टिप्पणी—किसी संकेत के प्रतिकूल की अनुपस्थिति में पूर्वाधिकार अंशधारी अपने द्वारा केवल संयोजित पूँजी के अधिकारी होंगे लेकिन लेनदारों को भुगतान करने के पश्चात् यदि कोष पूर्ण पूर्वाधिकार अंशों का दावा सन्तुष्ट करने के लिये पर्याप्त नहीं हो तो उन्हें घाटे के परिणाम की स्थिति, यानि हानि से गुजरना पड़ेगा।

8. अधिमान अंशधारकों को डेबिट करें तथा उनको जो भी दिया जाये उसे क्रेडिट करें। उपरोक्त दशा में निम्न लेखा होगा—

		₹	₹
Perference shareholders A/c	Dr.	4,40,000	
To Cash A/c			40,000
To 9% Preference shares in Wye Ltd.			4,00,000
(Cash and preference shares in Wye Ltd. given to preference shareholders)			

9. समता अंशपूँजी और लाभ-हानि का बोध कराने वाले खाते (जिसमें वसूली खाता सम्मलित है) में समता अंशधारियों के खाते में हस्तांतरित करें। इससे समता अंशधारियों को उनकी देय राशि का पता चलेगा।

इस सम्बन्ध में निम्न प्रविष्टियाँ होंगी—

		₹	₹
Equity Share Capital A/c	Dr.	8,00,000	
Capital Reserve A/c	Dr.	1,00,000	

© The Institute of Chartered Accountants of India

Profit and Loss A/c	Dr.	50,000	
Workmen's Compensation Reserve A/c	Dr.	3,000	
Realisation A/c	Dr.	4,22,500*	
To Sundry Equity Shareholders A/c			13,75,500
(Various accounts representing capital and profit transferred to Equity0 Shareholders Account)			
Equity ShareholdersA/c	Dr.	40,000	
To Underwriting Commission A/c			40,000
(Underwriting Commission A/c closed by transfer to Equity Shareholders A/c)			

10. समता अंशधारकों के दावों की संतुष्टि पर उनके खाते को डेबिट (Dr.) करें एवं जो भी उनको दिया जाये उससे क्रेडिट (Cr.) करें।

		₹	₹
Equity Shareholders A/c	Dr.	13,35,500	
To Equity Shares in Wye Ltd.			11,20,000
To Cash A/c**			2,15,500

6.6 क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ (Entries in the Books of Purchasing Company)

(1) क्रय प्रतिफल की राशि से व्यवसाय क्रय खाते को डेबिट करें तथा विक्रेता कम्पनी के सहायक को क्रेडिट (Cr.) करें।

		₹	₹
Business Purchase A/c	Dr.	17,20,000	
To Liquidator of Zed Ltd.			17,20,000
(Amount payable to Zed Ltd. as per agreement dated...)			

---

* The Realisation Account will appear as follows :

Realsation Account

		₹		₹
To	Sundry Assets	15,80,000	By Sundry Liabilities	3,25,000
To	Cash (excess expenses of liquidation)	2,500	By Wye Ltd.	17,20,000
To	Preference Shareholders	40,000		
To	Equity Shareholders A/c-profit transferred	4,22,500		
		20,45,000		20,45,000

** विद्यार्थियों को रोकड़ अधिकोष निकालने के लिये रोकड़ खाता बनाना चाहिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(2) (i) क्रेता कम्पनी द्वारा (ख्याति को छोड़कर) लगाये गये मूल्य पर सम्पत्तियों को डेबिट करें।

(ii) लिये गये दायित्वों को स्वीकृत मूल्य से क्रेडिट करें तथा व्यवसाय क्रय खाते को क्रय प्रतिफल की राशि से क्रेडिट करें।

(iii) विक्रेता कम्पनी द्वारा लिए गये अंशों, यदि कोई हो तो को ऐसी अंशों की लागत से इस खाते को क्रेडिट करें।

(iv) यदि उपरोक्त (ii) एवं (iii) में किये गये क्रेडिट की राशि उपरोक्त (i) में की गई डेबिट की राशि से ज्यादा हो तो इस अन्तर की राशि को ख्याति खाते में डेबिट करना चाहिये। जबकि विपरीत स्थिति में अन्तर की राशि को पूँजी संचय खाते में क्रेडिट करना चाहिये।

टिप्पणी (Notes)—ख्याति या पूँजी संचय की राशि यहाँ शामिल करते हुए सिर्फ पूर्वगामी तरीके से प्राप्त राशि ही ली जायेगी। उपरोक्त दशा में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ पारित होंगी—

		₹	₹
Sundries	Dr.		
Land and Building A/c		5,50,000	
Plant and Machinery A/c		6,50,000	
Patents A/c		20,000	
Stock A/c		1,50,000	
Sundry Debtors		1,80,000	
Goodwill		5,05,000	
To Sundries			
Provision for Workmen's Compenasation A/c			5,000
Trade Creditors			1,20,000
Debentures in Zed Ltd.			2,10,000
Business Purchases Account			17,20,000
(Various assets and liabilities taken over from Zed Ltd. Goodwill ascertained as a balancing figure)			

(3) On the payment to the vendor company the balance at its credit, the entry to be made by Wye Ltd. shall be :

		₹	₹
Liquidator of Zed Ltd.	Dr.	17,20,000	
To Cash			2,00,000
To 9% Preference Share Capital A/c			4,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

	To Equity Share Capital A/c			8,00,000
	To Securities Premium A/c			3,20,000
	(Payment of cash and issue of shares in satisfaction of purchase consideration)			
(4)	Debentures in Zed Ltd. A/c	Dr.	2,10,000	
	To 7% Debentures A/c			2,00,000
	To Premium on Debentures A/c			10,000

(5) यदि क्रेता कम्पनी को विक्रेता कम्पनी के समापन के व्यय भी चुकाने होते हैं तो राशि को ख्याति या पूँजीगत संचय खाता, जैसी भी स्थिति हो में डेबिट किया जाना चाहिय।

Goodwill Account	Dr.	10,000	
To Cash Account			10,000
(Amount paid towards liquidation expenses on Zed Ltd.)			

क्रय मूल्य पर प्रविष्टि (Entries at par value)—विद्यार्थी नोट करेंगे कि क्रेता कम्पनी के ख्याति खाते में (चरण नं. 2) डेबिट किया जायेगा। लेकिन बड़ी राशि अंश प्रीमियम खाते में रहेगी (चरण नं. 3)। दोनों का समयोजन नहीं किया जा सकता है। लेकिन, स्वीकार्य रहेगा यदि अंशों के बाजार मूल्य के आधार पर समझौता किया जाये लेकिन क्रेता कम्पनी के अंशों के सममूल्य के आधर पर ही केवल प्रविष्टियाँ बनाई जायें। इसका अर्थ होगा कि ख्याति खाता (अथवा पूँजी संचय) अंश प्रीमियम स्वतः ही समायोजित होंगे।

अतः कम्पनी ऋण यदि क्रेता कम्पनी विक्रेता के प्रति किसी राशि से ऋणी है अथवा इसके विपरीत है तो ऐसी राशि को एक कम्पनी के देनदारों में शामिल किया जाये तथा दूसरी कम्पनी के लेनदारों में इसको निम्नलिखित लेखे द्वारा समायोजित किया जाना चाहिये।

Sundry Creditors	Dr.	
To Sundry Debtors		

सामान्य अधिग्रहण की प्रविष्टियों को पारित करने के बाद, प्रविष्टि की जानी चाहिए।

वसूली खाता तैयार करने के समय तथा व्यवसाय क्रय के लेखे बनाने के समय इस तथ्य की और ध्यान देने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि दोनों कम्पनियाँ एक दूसरे से पारस्परिक रूप से ऋणी है।

स्कन्ध के मूल्य का समायोजन (Adjustment of the value of stock)—व्यवसाय के अधिग्रहण के पश्चात् अन्तःकम्पनी ऋण सामान्यतः माल के क्रय तथा विक्रय से उत्पन्न होता है। अतः व्यवसाय के विक्रय के समय पर देनदार कम्पनी के स्टॉक में ऐसा माल बचा रह सकता है, या ऐसा लाभ भी शामिल हुआ हो सकता है, जो उसने लेनदार कम्पनी से खरीदा हो या लेनदार की लागत में लेनदार कम्पनी द्वारा कमाया गया लाभ हो। व्यवसाय के अधिग्रहण के पश्चात् ऐसे लाभ को दरकिनार कर देना आवश्यक हो जाता है।

इस प्रकार का लेखा क्रेता कम्पनी द्वारा किया जायेगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

यदि यह विक्रेता कम्पनी है, जिसके स्कन्ध/रहतिये में ऐसे अधिग्रहण की प्रविष्टियाँ बनाते समय स्कन्ध के मूल्य को कम्पनी की लागत तक कम किया जायेगा जो व्यवसाय का अधिगृहण कर रही है तथा स्वतः ही ख्याति अथवा पूँजीगत संचय (जैसी भी स्थिति में हो) समायोजित हो जायेगा।

लेकिन यदि विक्रेता कम्पनी द्वारा विक्रय किया जाता है तथा रहतिया व्यवसाय कम्पनी अधिग्रहित कर रही है तो बाद वाली कम्पनी को ख्याति (पूँजी संचय खाता) डेबिट करना होगा तथा स्कंध में शामिल लाभ की राशि से स्कंध को क्रेडिट करना होगा।

उदाहरण (Illustration) **3**

31 March, 2008 को आर्थिक चिट्ठा इस प्रकार है।

Best Ltd. Better Ltd.

	(₹ लाखों में)			*(₹ लाखों में)*	
	Best Ltd.	Better Ltd.		Best Ltd.	Better Ltd.
अंश पूँजी :	₹	₹		₹	₹
₹ 100 प्रत्येक के पूर्णदत्त अंश	20	10	स्थायी सम्पतियाँ	25	15
संचय एवं आधिक्य	10	8	विनियोग	5	—
अन्य दायित्व	20	2	चालू दायित्व	20	5
	50	20		50	20

निम्न सूचनाएँ इस प्रकार हैं—

(a) Better लिमिटेड के अंशों में Best लिमिटेड के ₹ 3,00,000 के विनियोग सम्मलित हैं जिनकी फेस वेल्यू ₹ 2,00,000 है।

(b) 1 April, 2008 को Better लिमिटेड द्वारा प्रत्येक दो अंशों के बदले में संचय और आधिक्य के अतिरिक्त एक अंश निर्गमित किया।

(c) यह सहमति हुयी थी कि पिछले चिट्ठे के आधार पर Best लिमिटेड Better लिमिटेड का व्यवसाय क्रय कर लेगी। यह निर्णय Best लिमिटेड में प्रतिफल अंशों के आबंटन का रूप ले लेता है।

(d) बोनस अंश के निर्गमन के पश्चात् Best लिमिटेड के अंशों मूल्य ₹ 150 है और Better लिमिटेड के अंशों का मूल्य (बोनस शेयर देने के पश्चात्) ₹ 100 हैं। अंशों का आबंटन इन्हीं मूल्यों के आधार पर किया जायेगा।

(e) Better लिमिटेड के दायित्वों में Best लिमिटेड के ₹ 1 लाख सम्मलित हैं। Best लिमिटेड को इस खरीद की लागत पर 25% लाभ मिलता है। इन क्रयों में से ₹ 50,000 का माल उपरोक्त आर्थिक चिट्ठे की तिथि पर स्कंध के रूप में रखा जाता है।

Better लिमिटेड की पुस्तकों में अंतिम खाता बही बनाइये एवं Best लिमिटेड की पुस्तकों में प्रारंभिक प्रविष्टियाँ कीजिये तथा 1 अप्रैल, 2008 को अधिग्रहण के बाद आर्थिक चिट्ठा बनाइये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

LEDGER OF BETTER LIMITED

Fixed Assets Account

		₹			₹
To	Balance b/d	15,00,000	By	Realisation A/c (Transfer)	15,00,000

Current Assets Account

		₹			₹
To	Balance b/d	5,00,000	By	Realisation A/c (Transfer)	5,00,000

Liabilities Account

		₹			₹
To	Realisation A/c	2,00,000	By	Balance b/d	2,00,000

Realisation Account

		₹			₹
To	Fixed Assets A/c	15,00,000	By	Liabilities A/c	2,00,000
To	Current Assets A/c	5,00,0000	By	Best Limited (Purchase Consideration)	15,00,000
			By	Shareholders' A/c (Loss on Realisation)	3,00,000
		20,00,000			20,00,000

Share Capital Account

		₹			₹
To	Sundry Shareholders A/c - (transfer)	15,00,000	By	Balance b/d	10,00,000
			By	Reserves & Surplus A/c (Bonus issue)	5,00,000
		15,00,000			15,00,0000

Reserves & Surplus A/c

		₹			₹
To	Share Capital (Bouns issue)	5,00,000	By	Balance b/d	8,00,000
"	Sundry Shareholders	3,00,000			
		8,00,000			8,00,000

Best Ltd.

		₹			₹
To	Realisation A/c-Purchase Consideration	15,00,000	By	Sundry Shareholders (1/5 of Purchases Consideration)	3,00,000
			By	Shares in Best Ltd.	12,00,000
		15,00,000			15,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Shares in Best Ltd.

		₹			₹
To	Best Ltd.	12,00,000	By	Sundry Shareholders A/c	12,00,000

Sundry Shareholders A/c

		₹			₹
To	Realisation A/c (Loss)	3,00,000	By	Share Capital A/c	15,00,000
			By	Reserves & Surplus A/c	3,00,000
To	Best Ltd.	3,00,000			
To	Shares in Best Ltd.	12,00,000			
		18,00,000			18,00,000

JOURNAL OF BEST LTD.

2008			Dr.	Cr.
			₹	₹
Apr.1	Fixed Assts A/c	Dr.	15,00,000	
	Current Assets A/c	Dr.	5,00,000	
	To Liabilities A/c			2,00,000
	To Liquidator of Better Ltd.			12,00,000
	To Capital Reserve A/c			3,00,000
	To Shares in Better Ltd.			3,00,000
	(Assets & Liabilities of Better Ltd. taken over for an agreed purchase consideration of ₹ 12,00,000 and cancellation of investments, held in Better Ltd., at ₹ 3,00,000 as per agreement dated....)			
	Liquidator of Better Ltd.	Dr.	12,00,000	
	To Share Capital A/c			8,00,000
	To Securities Premium A/c			4,00,000
	(Discharge of purchase consideration by the issue of equity shares of ₹ 8,00,000 at a premium of ₹ 50 per share as per agreement)			
	Sundry Creditors A/c	Dr.	1,00,000	
	To Sundry Debtors A/c			1,00,000
	(Amount due from better Ltd., and included in its creditors taken over, cancelled against own sundry debtors)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

Capital Reserve A/c	Dr.	10,000	
To Current Assets (Stock) A/c			10,000
(Unrealized profit on stock included in current assets of Better Ltd. written off to reserve Account)			

Working Note—

Calculation of Purchase consideration—

	₹
Issued Capital of Better Ltd. (after bonus issue) at ₹ 100 per share	15,00,000
Less : Held by Best Ltd.	3,00,000
Held by outsiders, valued at ₹ 100 per share	12,00,000

Purchase consideration has been discharged by Best Ltd. by the issue of shares for ₹ 8,00,000 at a premium of ₹ 4,00,000 This gives the value of ₹ 150 per share.

Balance Sheet of Bets Ltd. (After absorption)

	₹		₹	₹
Share Capital		Fixed Assets		
Authorised		Opening Balance	25,00,000	
..shares of ₹ 100 each		Acquired during		
Issued & Subscribed		the year	15,00,000	40,00,000
28,000 shares of ₹ 100		Investment		2,00,000
each fully paid	28,00,000	Current Assets		23,90,000
of the above (8,000 shares have been issued for consideration other than cash)				
Reserves & Surplus :				
Securities Premium	4,00,000			
Capital reserves	2,90,000			
Other Reserves and Surplus	10,00,000			
Current Liabilities	21,00,000			
	65,90,000			65,90,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **4**

K लिमिटेड और L लिमिटेड एक नयी कम्पनी LK लिमिटेड के रूप में एकीकृत होती है। एकीकरण की तिथि पर दोनों कम्पनियों की वित्तीय स्थिति इस प्रकार है :

	K Ltd.	*L Ltd.*		*K Ltd.*	*L Ltd.*
	₹	₹		₹	₹
अंश पूँजी ₹ 100 प्रत्येक			ख्याति	80,000	
के समता अंश	8,00,000	3,00,000	भूमि एवं भवन	4,50,000	3,00,000
₹ 100 प्रत्येक के 7%	4,00,000	3,00,000	संयंत्र एवं यंत्र	6,20,000	5,00,000
पूर्वाधिकार अंश					
5% ऋणपत्र	2,00,000		उपस्कर	60,000	20,000
सामान्य संचय	—	1,00,000	विविध देनदार	2,75,000	1,75,000
लाभ–हानि खाता	4,31,375	87,175	भण्डार एवं स्कंध	2,25,000	1,40,000
विविध लेनदार	1,00,000	2,20,000	रोकड़ अधिकोष	1,20,000	55,000
सुरक्षित ऋण	—	2,00,000	हस्तस्थ रोकड़	41,375	17,175
			प्रारम्भिक व्यय	60,000	
	19,31,375	12,07,175		19,31,375	12,07,175

एकीकरण की शर्तें इस प्रकार हैं—

(1) दोनों कम्पनियों के दायित्वों का पुर्वानुमान माना गया है।

(2) ₹ 20 प्रत्येक के ₹ 5 पूर्वाधिकार अंश LK लिमिटेड द्वारा चुकता पूँजी ₹ 18 प्रत्याजी प्रति अंश ₹ 4 दोनों कम्पनियों द्वारा अधिग्रहित पूर्वाधिकार अंश निर्गमित किये जायेंगे।

अधिकता में, दोनों कम्पनियों के समता अंशधारियों को आवश्यक नगद भुगतान करना चाहिये। दोनों कम्पनियों के अंशों का आंतरिक मूल्य के अनुसार, दोनों कम्पनियों के अंशधारियों के अधिकार को समायोजित करना आवश्यक है। LK लि. में ₹ 20 प्रत्येक के छः समता अंशों का निर्गमन ₹ 18 चुकता की दर से ₹ 4 प्रति अंश प्रिमियम पर दो कम्पनियों में प्रत्येक धारित समता अंश हेतु किया गया।

(3) LK लिमिटेड ने 6% ऋणपत्र पूर्णदत्त मूल्य पर निर्गमित किये ताकि K लिमिटेड के 5% ऋणपत्रों का 5% बट्टे पर भुगतान हो जाये।

(4) (i) सभी सम्पत्तियों एवं दायित्वों को उनके पुस्तकीय मूल्य पर ले लिया गया, स्कंध एवं देनदारो पर क्रमशः 2% एवं 2½% का प्रावधान किया गया है।

(ii) K लिमिटेड के विविध देनदारों में L लिमिटेड के ₹ 20,000 सम्मलित हैं।

(5) K लिमिटेड के विविध देनदारों ने L लिमिटेड से देय ₹ 20,000 शामिल हैं।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

BOOKS OF K LTD.
Realisation Account

		₹			₹
To	Goodwill	80,000	By	5% Debentures	2,00,000
To	Land & Building	4,50,000	By	Sundry creditors	1,00,000
To	Plant & Machinery	6,20,000	By	L K Ltd.	15,60,000
To	Furniture & Fitting	60,000		(Purchase consideration)	
To	Sundry debtors	2,75,000	By	Equity shareholders A/c	51,375
To	Stores & Stock	2,25,000		(loss)	
To	Cash at Bank	1,20,000			
To	Cash in hand	41,375			
To	Preference shareholders				
	(excess payment)	40,000			
		19,11,375			19,11,375

Equity Shareholders A/c

		₹			₹
To	Preliminary Expenses	60,000	By	Share capital	8,00,000
To	Realisation A/c (loss)	51,375	By	Profit & Loss A/c	4,31,375
To	Equity Shares in LK Ltd.	10,56,000			
To	Cash	64,000			
		12,31,375			12,31,375

L K Ltd. A/c

		₹				₹
To	Realisation A/c	15,60,000	By	Equity Shares in LK Ltd.		
				For Equity	10,56,000	
				Pref.	4,40,000	14,96,000
				By Cash		64,000
		15,60,000				15,60,000

BOOKS OF K LTD.
Realisation Account

		₹			₹
To	Land & Building	3,00,000	By	Sundry creditors	2,10,000
To	Plant & Machinery	5,00,000	By	Secured loan	2,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

To	Furnitures & Fittings	20,000	By	L K Ltd. (Purchase	
To	Sundry debtors	1,75,000		consideration)	7,90,000
To	Stock of stores	1,40,000	By	Equity shareholders A/c—	
To	Cash at bank	55,000		Loss	37,175
To	Cash in hand	17,175			
To	Pref. Shareholders	30,000			
		12,37,175			12,37,175

Equity Shareholders Account

		₹			₹
To	Equity shares in LK Ltd.	3,96,000	By	Share Capital	3,00,000
To	Realisation	37,175	By	Profit & Loss A/c	97,175
To	Cash	64,000	By	Reserve	1,00,000
		4,97,175			4,97,175

LK Ltd. Account

		₹				₹
To	Realisation A/c	7,90,000	By	Equity Shares in LK Ltd.		
				For Equity	3,96,000	
				Preference	3,30,000	7,26,000
			By	Cash		64,000
		7,90,000				7,90,000

Workings Notes :

(i) **Purchase consideration**

	K Ltd.	*L Ltd.*
	₹	₹
Payable to preference shareholders :		
Preference shares at ₹ 22 per share	4,40,000	3,30,000
Equity Shares at ₹ 22 per share	10,56,000	3,96,000
Cash [See W.N. (ii)]	64,000	64,000
	15,60,000	7,90,000

(ii) **Value of Net Assets**

	K Ltd.	*L Ltd.*
	₹	₹
Goodwill	80,000	
Land & Building	4,50,000	3,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Plant & Machinery		6,20,000		5,00,000
Fumiture & Fittings		60,000		20,000
Debtors less 2.5%		2,68,125		1,70,625
Stock less 2%		2,20,500		1,37,200
Cash at Bank		1,20,000		55,000
Cash in hand		41,375		17,175
		18,60,000		12,00,000
Less : Debentures	2,00,000		—	
Creditors	1,00,000		2,10,000	
Secured Loans		3,00,000	2,00,000	4,10,000
		15,60,000		7,90,000
Payable in shares		14,96,000		7,26,000
Payable in cash		64,000		64,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश
(SUMMARY)

- किसी भी कम्पनी को वित्त/कोष के अनेक स्रोत उपलब्ध हैं।
- एकीकरण का तात्पर्य दो या दो से अधिक कम्पनियाँ जो पहले से अस्तित्व में हैं एक नयीं कम्पनी के रूप में सम्मिलित होती हैं। सम्मलित हुई कम्पनियाँ अपनी एकरूपता को खो देती हैं एवं एक नयी कम्पनी के रूप में स्वतः अस्तित्व में आती है।
- संविलयन, एक कम्पनी जो पहले से ही अस्तित्व में है। एक को अन्य द्वारा साथ में संविलयन करना इस प्रकार एक कम्पनी का समापन होता है तथा कम्पनी उसमें सम्मिश्रण हो जाती है।
- एक कम्पनी जो किसी अन्य कम्पनी में विलय होता है, उस कम्पनी को हस्तांतरक कम्पनी या विक्रेता कम्पनी कहते हैं।
- एक कम्पनी जिसका विक्रेता कम्पनी को एकीकृत कर लेती है उसे हस्तांतरी कम्पनी या क्रेता कम्पनी कहते हैं।
- एकीकरण विलयन के स्वभाव का है, वहाँ हितों का समूहीकरण निम्न ढंग से होता है —
  (1) कम्पनियों द्वारा सम्पत्तियों एवं दायित्वों का एकीकरण किया जायेगा तथा अंश धारकों को ब्याज।
  (2) हस्तांतरक कम्पनी भी हस्तांतरी कम्पनी के व्यवसाय को लेने का इरादा रखती है।
- एकीकरण क्रय के स्वभाव का है एक कम्पनी दूसरी कम्पनी का व्यवसाय को अधिगृहित करती है।
- क्रय प्रतिफल शेयरों और प्रतिभूतियों का निर्गमन हो जाता है और हस्तांतरी कम्पनी द्वारा नकद या अन्य संपत्ति के रूप में हस्तांतरी कम्पनी को अंशधारक के लिये किये गये भुगतान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- एकीकरण के लेखांकन के लिये दो मुख्य विधियाँ हैं —
  (1) हितों के समूहीकरण की विधि तथा
  (2) क्रय विधि
- हितों के समूहीकरण विधि के अर्न्तगत हस्तांतरक कम्पनी की सम्पत्तियाँ, दायित्वों एवं संचयों को हस्तांतरी कम्पनी विद्यमान मूल्य पर लेती है।
- क्रय विधि के अन्तर्गत हस्तांतरण करती कम्पनी की सम्पत्तियों और दायित्वों के मौजूद परिचालन राशि अथवा क्रय प्रतिफल उनके उचित मूल्यों के आधार पर होता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

स्व-परीक्षण प्रश्न
(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

दिए गये विकल्पों से अधिक उपयुक्त उत्तर चुनिये

1. एकीकरण के समय क्रय प्रतिफल में जोड़ा नहीं जायेगा–
   (अ) धनराशि, हस्तांतरी कम्पनी, हस्तांतरक कम्पनी के लेनदार को प्रत्यक्षता भुगतान करेंगी।
   (ब) भुगतान जो हस्तांतरी कम्पनी, हस्तांतरक कम्पनी के अंशधारकों को सम्पतियों के रूप में देगी।
   (स) हस्तांतरक कम्पनी के पूर्वाधिकार अंशधारकों को हस्तातरी कम्पनी पूर्वाधिकार अंश निर्गमित करेगी।
2. लेखाकंन मानक [AS-14] के अनुसार क्रय प्रतिफल वह धनराशि है जो मिलेगी—
   (अ) अंशधारकों को
   (ब) अंशधारकों, ऋणपत्रों एवं लेनदारों को
   (स) अंशधारको और ऋणपत्र धारकों को

   [**उत्तर** (Answer)—1. (अ), 2. (अ)]

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

3. निम्नलिखित पर लघु टिप्पणियाँ कीजिये।
   (अ) कम्पनियों का एकीकरण ओर संविलयन की तुलना
   (ब) एकीकरण में हितों की समूहीकरण विधि।

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

4. विलयन की प्रकृति के एकीकरण के लिए लेखांकन मानक [AS-14] एकीकरण हेतु लेखांकन के अनुसार कौन सी शर्ते पूरी होनी चाहिये?
5. एकीकरण के लेन-देन के सम्बन्ध में (1) हितों की समूहीकरण विधि (2) क्रय विधि में अन्तर कीजिये।

IV. क्रियात्मक प्रश्न (Practical Problems)

6. (अ) Exe लिमिटेड का आर्थिक चिट्ठा 30 जून, 2008 को इस प्रकार है :

दायित्व	₹	सम्पत्तियाँ	₹
अंशपूँजी		ख्याति	80,000
₹ 100 प्रत्येक पूर्णदत्त अंश	4,00,000		
सामान्य संचय	80,000	भूमि तथा भवन	1,10,000
लाभ–हानि खाता	38,000	यंत्र तथा संयंत्र	2,05,000
कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय	15,000	रहतिया	90,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

(अनुमानित दायित्व ₹ 8,000)

अग्नि बीमा कोष	60,000	देनदार	50,000
लेनदार	70,000	अभिगोपन कमीशन	10,000
कर के लिए प्रावधान	50,000	पूर्व दतव्यय	50,000
		बैंक में रोकड़	1,18,000
	7,13,000		7,13,000

Wye लिमिटेड द्वारा कम्पनी को ले लिया क्रय प्रतिफल निम्नलिखित दशाओं में निर्धारित किया गया—

(1) रोकड़ को छोड़कर सभी सम्पत्तियाँ तुलनपत्र में प्रदर्शित मूल्य पर ले ली गईं तथा दायित्व कर के लिए प्रावधान को छोड़ना मान लिया गया।

(2) सभी सम्पत्तियाँ एवं दायित्व के लिये प्रत्येक अंशधारी को ₹ 20 नकद तथा ₹ 100 प्रत्येक का अंश निर्गमित किया।

(3) Exe लिमिटेड मे प्रत्येक अंश ₹ 150 पर मूल्यांकित है, ₹ 200 पर मूल्यांकित Wye लिमिटेड में अंश के रूप में क्रय प्रतिफल Discharge कर दिया गया है। (प्रविष्टियाँ ₹ 100 के सम मूल्य पर बनाई गईं)।

Exe लिमिटेड के लिए प्रत्येक दशा में वसूली पर लाभ या हानि को भी दर्शाया गया है। माना कि कराधान के लिये दायित्व प्रत्येक दशा में ₹ 55,000 है तथा समापन का व्यय ₹ 15,000 है।

(i) ₹ 5,07,000 : वसूली पर हानि ₹ 15,000

(ii) ₹ 6,56,000 : वसूली पर लाभ ₹ 61,000

(iii) ₹ 3,00,000 : वसूली पर हानि ₹ 2,95,000

(वास्तविक मूल्य ₹ 5,000 होता है क्योंकि अंश का वास्तविक मूल्य ₹ 6,00,000 प्राप्त हुआ है।)

(ब) Wye लिमिटेड द्वारा प्रत्येक में उपरोक्त दशाओं की ख्याति पर स्थानीय मूल्य क्या होगा जबकि यह माना गया है कि भूमि और भवन ₹ 1,50,000 पर मूल्यांकित हैं तथा यन्त्र तथा संयंत्र ₹ 2,30,000 पर ?

(i) ₹ 60,000 (ii) पूँजी, गत संचय ₹ 2,20,000

7. (अ) Careful लिमिटेड Reakless लिमिटेड का पुनर्निमार्ण करती है तथा Reakless लिमिटेड की सभी सम्पत्तियों एवं दायित्वों को अधिग्रहीत करती है। 31 दिसम्बर, 2007 को कम्पनी का आर्थिक चिट्ठा इस प्रकार है :

दायित्व	₹	**सम्पत्तियाँ**	₹
अंशपूँजी		एकस्व	1,20,000
(₹ 100 प्रत्येक के पूर्णदत्त अंश)	10,00,000	यंत्र तथा संयंत्र	5,00,000
5% ऋणपत्र	2,00,000	रहतिया	1,20,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

लेनदार	3,00,000	देनदार	60,000
		रोकड़ अधिकोषस्थ	5,000
		बट्टे पर निर्गमित ऋणपत्र	10,000
		लाभ–हानि खाता	6,85,000
	15,00,000		15,00,000

Careful लिमिटेड, Reakless के एक अंश के बदले अपना ₹ 20 का पूर्णदत्त अंश जारी करेगा और Reakless के ऋणपत्रधारकों को 6% वाले ऋणपत्र जिनका सममूल्य ₹ 1,15,000 है देगा। Careful लि. अंशधारियों को अतिरिक्त ₹ 20,000 अंश प्रत्येक ₹ 20 का जारी करेगा। यह अंश पूरे ही याचित कर लिये गये और इनसे प्राप्त राशि से ₹ 1,00,000 का लेनदारों को भुगतान किया गया। एकस्व मूल्य विहीन हो गये हैं और Careful लिमिटेड आवश्यकतानुसार यंत्र व संयंत्र के मूल्य को समायोजित करेंगे।

उपरोक्त दिये गये सभी व्यवहारों को सम्मलित करते हुए Careful लिमिटेड का तुलन पत्र बनाइये।

(ब) यह मानते हुए कि एक नई कम्पनी के प्रारूप को कोर्ट की मंजूरी मिल चुकी है। उपरोक्त दिये गये समस्त व्यवस्था की प्रविष्टियाँ कीजिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

7

औसत देय तिथि और चालू खाता

[AVERAGE DUE DATE AND ACCOUNT CURRENT]

भाग 1 : औसत देय तिथि

(UNIT–1 : AVERAGE DUE DATE)

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- **औसत देय तिथि क्या है और औसत देय तिथि की गणना करने के लिए 0 (शून्य) दिवस का चुनाव कैसे करें को समझने में।**
- **औसत देय तिथि की गणना करना सीखने में, जब रकम अनेक किस्तों में उधार दी जाती है।**
- **आहरण पर ब्याज को निर्धारित करने के लिए औसत देय तिथि की गणना करने में।**
- **औसत देय तिथि निकालने के सम्बन्ध में विभिन्न चरणों से परिचित होने में, जब रकम एक मुश्त में उधार दी जाती है लेकिन उसका भुगतान कई किश्तों में करना होता है, साथ ही अनुग्रह दिवसों को समझने में तथा अनुग्रह दिवस से गिनते हुए परिपक्वता (Maturity) तिथि की तकनीक को सीखने में।**
- **देय तिथि निकालने की तकनीक को सीखने में जब परिपक्वता (Maturity) तिथि अवकाश (Holiday) के दिन हो।**

1.1 परिचय (Introduction)

व्यावसायिक उपक्रमों में, किसी एकाकी पक्षकार के साथ ही विभिन्न समय बिन्दुओं पर बड़ी संख्या में प्राप्ति एवं भुगतान हो सकते हैं। इन लेनदेनों में सन्निहित (Involved) ब्याज की गणना को सरल बनाने के लिए औसत देय तिथि के विचार को विकसित किया गया है। इस इकाई में हम औसत देय तिथि ज्ञात करने में निहित सिद्धान्तों पर विचार करेंगे जिनमें ऐसी स्थितियाँ भी शामिल हैं जब रकम

© The Institute of Chartered Accountants of India

अनेक किश्तों में उधार दी जाती है, लेकिन पुनः भुगतान एकमुश्त ही कर दिया जाता है तथा साथ-ही जब रकम एक ही किश्त में उधार दी जाती है लेकिन पुनः भुगतान अनेक किश्तों में किया जाता है। व्यावसायिक फर्म के स्वामियों या साझेदारों द्वारा विभिन्न समय बिन्दुओं पर किये गये आहरणों पर ब्याज की गणना में भी औसत देय तिथि की तकनीक उपयोगी होती है।

1.2 समस्याओं के प्रकार (Types of Problems)

यहाँ दो प्रकार की समस्यायें हैं—

1. समानीकृत तिथि (Equated date) की गणना, जब रकम विभिन्न किश्तों में उधार दी जाती है और पुनः भुगतान एक ही किश्त में किया जाता है।
2. समानीकृत तिथि (Equated date) की गणना, जब रकम एक ही किश्त में उधार दी जाती है तथा पुनः भुगतान विभिन्न किश्तों में किया जाता है।

1.2.1 दशा (Case) 1. **जब रकम कई किश्तों** (Installments) **में उधार दी जाती है**—इस प्रकार की समस्या में औसत देय तिथि की गणना (Calculation of average due date) निम्न प्रकार से की जाती है—

(a) सुविधा के लिए शीघ्रातिशीघ्र देय तिथि को प्रारम्भिक दिवस या आधार दिवस या "0" दिवस के रूप में मान लें। किसी भी तिथि को "0" दिवस के रूप में माना जा सकता है।

(b) आधार दिवस से प्रत्येक देय तिथि तक के दिनों की संख्या को निकालें। गणना महीनों में भी की जा सकती है।

(c) तत्सम्बन्धी रकमों से दिनों की संख्या का गुणा करें।

(d) राशियों एवं गुणनफलों का योग करें।

(e) गुणनफलों के योग को राशियों के योग से विभाजित करें और जहाँ तक हो सके परिणाम को पूर्णाकों में निकालें। यह संख्या प्रारम्भ बिन्दु से औसत देय तिथि तक के दिनों की संख्या है।

(f) प्रत्येक माह में सन्निहित (Involved) दिनों को ध्यान में रखकर प्रारम्भिक दिवस से उपरोक्त दिनों की संख्या को गिनें।

इस प्रकार, औसत देय तिथि के लिए निम्न सूत्र हो सकता है—

$$\text{औसत देय तिथि} = \text{आधार तिथि} \pm \frac{\text{गुणनफलों का योग}}{\text{राशियों का यागे}}$$

उदाहरण (Illustration) **1**

समान पक्षकारों के बीच में विभिन्न तिथियों पर निम्नलिखित राशियाँ देय हैं—

राशि ₹	देय तिथि
500	3rd जुलाई
800	2nd अगस्त
1,000	11th सितम्बर

एक तिथि सुझाएँ जिस पर सभी विपत्रों का भुगतान किसी भी पक्षकार को ब्याज की हानि हुए बिना चुकाया जा सके।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

3rd जुलाई को प्रारम्भिक दिवस के रूप में लेते हुए निम्नलिखित तालिका तैयार की गयी है—

देय तिथियाँ	राशि	3rd जुलाई से दिनों की संख्या	गुणनफल
3rd जुलाई	500	0	0
2nd अगस्त	800	30	24,000
11th सितम्बर	1,000	70	70,000
	2,300		94,000

$$\text{औसत देय तिथि} = 3 \text{ तक जुलाई} + \frac{94,000}{2,300}$$

= 3rd जुलाई + 41 दिन = 13th अगस्त

माना कि 5% ब्याज दर है, देनदार को पूर्व भुगतान से 29 दिनों (13th अगस्त से 11th सितम्बर तक) हेतु ₹ 1,000 पर ब्याज की हानि होगी यानि कि ₹4। हालांकि उसे, ₹500 पर 41 दिनों (3rd जुलाई से 13th अगस्त तक) हेतु एवं ₹800 पर 11 दिनों हेतु विलम्ब भुगतान पर ब्याज का लाभ होगा यानि कि, ₹ 2.80 + ₹ 1.20 यानि कि, ₹ 4। इसलिए सभी राशियों का 13th अगस्त पर भुगतान द्वारा देनदार को न ही हानि होगी और न ही लाभ।

दिनों कि संख्या की गणना हेतु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि तिथियों की गणना में या तो प्रारम्भिक तिथि या देय तिथि में से किसी भी एक दिन को गिना जाएगा।

इसी प्रकार से एक पक्षकार द्वारा एक ही पक्षकार से उतनी ही देय राशि के विपत्र के हित में दो औसत देय तिथियों के बीच व्यतीत अवधि हेतु ब्याज के समायोजन के पश्चात् निरस्त किया जा सकता है। उपरोक्त अनुसार एक ही तिथि पर कई विपत्रों का भगुतान करने के स्थान पर, औसत देय तिथि से प्रारम्भ एक अन्य सहमत अवधि हेतु ब्याज सहित अन्य विपत्र को भी उस अवधि हेतु स्वीकार किया जा सकता है।

उदाहरण (Illustration) **2**

दो व्यापारी X और Y आपस में माल खरीदते हैं, वे एक-दूसरे से एक माह के उधार की अनुमति देते हैं। तीसरे माह के अंत पर प्रस्तुत खाते निम्नानुसार हैं—

X द्वारा Y को माल की बिक्री		**Y द्वारा X को माल की बिक्री**	
Date	₹	Date	₹
18 अप्रैल	60.00	23 अप्रैल	52.00
15 मई	70.00	24 मई	50.00
16 मई	80.00		

उस तिथि की गणना कीजिये जिस पर शेष भुगतान इस प्रकार होना चाहिए ताकि X या Y में से किसी पर भी ब्याज देय न हो।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

18th मई को आधार दिवस या शून्य के रूप में लेते हुए—

Y के भुगतानों के लिए

सौदों की तिथि	देय तिथि	राशि	आधार तिथि से दिनों की संख्या	गुणनफल
(1)	**(2)**	**(3)**	**(4)**	**(5)**
18 अप्रैल	18 मई	60	0	0
15 मई	15 जून	70	28	1,960
16 जून	16 जुलाई	80	59	4,720
X को देय राशि		**210**	गुणनफलों का योग	**6,680**

X के भुगतानों के लिए

विद्यार्थियों को ध्यान रखना चाहिए कि, समान आधार तिथि लेना चाहिए। इसलिए इस दशा में भी आधार तिथि 18th मई ही होगी।

सौदों की तिथि	देय तिथि	राशि	आधार तिथि से दिनों की संख्या	गुणनफल
(1)	**(2)**	**(3)**	**(4)**	**(5)**
23 अप्रैल	23 मई	52	5	260
24 मई	24 जून	50	37	1,850
Y को देय राशि		**102**	गुणनफलों का योग	**2,110**

Y के गुणनफलों पर X का आधिक्य = 6,680 – 2,110

= 4,570

X को आधिक्य देय राशि ₹ 210 – 102 = ₹ 108.

आधार तिथि से निपटारे की तिथि तक के दिनों की संख्या है—

$$\frac{4,570}{108} = 42 \text{ days}$$

इसलिए शेष के निपटारे कि तिथि 18 मई 42 दिनों के बाद यानि कि, 29 जून पर होगी। 29 जून पर, Y द्वारा X को ₹ 108 चुका कर खाते को समाप्त किया जायेगा।

1.2.2 आहरणों पर ब्याज की गणना (Calculation of interest on drawings)—जब विभिन्न तिथियों पर विभिन्न राशियाँ देय हों, लेकिन वे अंततः एक दिन में ही निपटाई जाएँ तो औसत देय तिथि के माध्य द्वारा ब्याज की गणना की जा सकती है। जब आहरणों पर ब्याज लगाया जाता है, और आहरण विभिन्न तिथियों पर होते हैं तब उपरोक्त आधार पर आहरणों के औसत देय तिथि के आधार पर ब्याज की गणना का निर्धारण किया जा सकता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **3**

एक फर्म के दो साझेदार A तथा B, 31st मार्च, 20..... पर समाप्त होने वाले वर्ष में निम्नलिखित राशियाँ फर्म से आहरित करते हैं—

तिथि	**A ₹**	**तिथि**	**B ₹**
1.7	500	12.6	1,000
30.9	800	11.8	500
1.11	1,000	9.2	400
28.2	400	7.3	900

सभी अहरणों पर 6% वार्षिक की दर से ब्याज लगाना है। ब्याज की गणना कीजिये। (फरवरी के 28 दिन मानें)

समाधान (Solution)

(1) **साधारण प्रणाली** (Ordinary system)—

A.	9 माह हेतु 500	= 1 माह हेतु 4,500
	6 माह हेतु 800	= 1 माह हेतु 4,800
	5 माह हेतु 1,000	= 1 माह हेतु 5,000
	1 माह हेतु 400	= 1 माह हेतु 400
		1 माह हेतु 14,700
	14,700 पर 1 माह हेतु 6%	= 14,700 का 1/2%
		= ₹ 73.50
B.	292 दिनों हेतु 1,000	= 2,92,000
	232 दिनों हेतु 500	= 1,16,000
	50 दिनों हेतु 400	= 20,000
	24 दिनों हेतु 900	= 21,600
		4,49,600

$$4,49,600 \times \frac{6}{100} \times \frac{1}{365} = ₹\ 73.91$$

(2) **औसत देय तिथि प्रणाली** (Average due date system)—

(a) 1.7 को 0 – दिवस के रूप में लेते हुए—

	तिथियाँ	₹	0 - दिवस से माह	गुणनफल
	1.7	500	0	0
A :	30.9	800	3	2,400
	1.11	1,000	4	4,000
	28.2	400	8	3,200
		2,700		**9,600**

© The Institute of Chartered Accountants of India

औसत देय तिथि = $\frac{9,600}{2,700}$ 1.7 ..... से माह, यानि कि, 3.556 माह, यानि कि 17th अक्टूबर.

17th अक्टूबर से 31 मार्च यानि कि 5.444 माह, तक प्रभारित ब्याज

$$2,700 \times \frac{6}{100} \times \frac{161}{365} = ₹ 73.49$$

Or,

1st अप्रैल को 0 - दिवस के रूप में लेते हुए—

	तिथियाँ	₹	0 - दिवस से माह	गुणनफल
	1.7	500	3	1,500
A:	30.9	800	6	4,800
	1.11	1,000	7	7,000
	28.2	400	11	4,400
		2,700		**17,700**

औसत देय तिथि = $\frac{17,700}{2,700}$ 1.4 ..... से माह, यानि कि, 6.556 माह, यानि कि 17th अक्टूबर.

17th अक्टूबर से 31 मार्च यानि कि 5.444 माह, तक प्रभारित ब्याज

$$2,700 \times \frac{6}{100} \times \frac{5,444}{12} = ₹ 73.49$$

(b) 12th जून को 0 - दिवस के रूप में लेते हुए—

	तिथियाँ	₹	0 - दिवस से माह	गुणनफल
	12.6	1,000	0	0
B :	11.8	500	60	30,000
	9.2	400	242	96,800
	7.3	900	268	2,41,200
		2,800		**3,68,000**

औसत देय तिथि = $\frac{3,68,000}{2,800}$ 12.6 ..... से माह, यानि कि, 131 दिन

जून	18
जुलाई	31
अगस्त	31
सितम्बर	30
	110

© The Institute of Chartered Accountants of India

131 दिन –110 दिन यानि कि, 21st अक्टूबर

इसलिए 21.10. .... से to 31.3. .... तक यानि कि 161 दिनों हेतु प्रभारित ब्याज

$$2{,}800 \times \frac{6}{100} \times \frac{161}{365} = ₹\ 74.10$$

दोनों प्रणालियों (1) और (2) में राशियों में अन्तर सन्निकटन (approximation) के कारण हैं।

उदाहरण (Illustration) **4**

Y द्वारा X को निम्नलिखित राशियाँ देय हैं Y चुकाना चाहता है (a) 18.3. .... पर या (b) 14.7. .... पर। ध्यान रहे 8% प्रति वर्ष ब्याज की दर है।

देय तिथियाँ	₹
10.1	500
26.1 (गणतंत्र दिवस)	1,000
23.3	3,000
18.8 (रविवार)	4,000

(a) तथा (b) में चुकता राशि का निर्धारण करें।

समाधान (Solution)

देय तिथि (सामान्य)	**देय तिथि (वास्तविक)**	**10.1. .... को 0 दिवस के रूप में लेते हुए, से दिनों की संख्या**	**राशि ₹**	**गुणनफल**
10.1	10.1	0	500	0
26.1	25.1	15	1,000	15,000
23.3	23.3	72	3,000	2,16,000
18.8	17.8	219	4,000	8,76,000
			8,500	11,07,000

$$\text{औसत देय तिथि} = 10^{th}\ \text{जनवरी} + \frac{11{,}07{,}000}{8{,}500} = 10^{th}\ \text{जनवरी} + 130\ \text{दिन} = 20^{th}\ \text{मई}$$

जनवरी	21
फरवरी	28
मार्च	31
अप्रैल	30
	110

(a) यदि 18.3 ..... पर भुगतान होता है तो असमाप्त समय 18.3 .... से 20.5. .... तक यानि कि, 13 + 30 + 20 यानि कि, 63 दिनों हेतु छूट घोषित होगी। वह कुल राशि के बट्टात्मक राशि को चुकायेगा।

$$\text{बट्टा} = 8{,}500 \times \frac{8}{100} \times \frac{63}{365} = 680 \times \frac{63}{365} = ₹\ 117.37$$

18.3 ..... पर चुकता राशि ₹ 8,500 – 117.37 = 8,382.63

© The Institute of Chartered Accountants of India

(b) यदि भुगतान 14.7 .... तक किया जाता है, तो 20.5 .... से 14.7 .... तक यानि कि, 11 + 30 +14 = 55 दिनों तक का ब्याज चुकाया जायेगा।

$$\text{ब्याज} = 8{,}500 \times \frac{8}{100} \times \frac{55}{365} = 680 \times \frac{55}{365} = ₹\ 102.47$$

14.7 ..... पर चुकता राशि होगी

₹ 8,500 + 102.47 = 8,602.47

1.2.3 दशा (Case) 2 **जब रकम एक किश्त में उधार दी जाती है**—उस दशा में औसत देय तिथि की गणना जब रकम एक किश्त में उधार दी जाती है तथा पुनः भुगतान विभिन्न किश्तों में किया जाता है (प्रथम दशा में हम जो कर चुके हैं के विपरीत)। समस्या एक भिन्न स्वरूप ले लेती है। औसत देय तिथि की गणना की प्रक्रिया को निम्नांकित रूप में सारांशीकृत कर सकते हैं।

चरण (Step) 1. उधार देने की तिथि से प्रत्येक पुनः भुगतान की तिथि तक दिनों/महीनों/वर्षों की संख्या की गणना।

चरण (Step) 2. इन दिनों/महीनों/वर्षों के योग को ज्ञात करना।

चरण (Step) 3. दिनों/महीनों/वर्षों की संख्या भागित होगी उनसे जो ऋण की प्रारम्भ तिथि से औसत देय तिथि तक गुजरे हैं।

इस प्रकार, औसत देय तिथि हेतु सूत्र को निम्नांकित रूप में लिखा जा सकता है।

$$\text{औसत देय तिथि} = \text{ऋण की तिथि} + \frac{\text{उधार देने की तिथि से प्रत्येक किश्त के पुनः भुगतान की तिथि तक दिनों/महीनों/वर्षों की संख्या का योग}}{\text{किश्तों की संख्या}}$$

उदाहरण (Illustration) **5**

दास ब्रदर्स ने 1st जनवरी, 2006 को कुमार & संस को ₹ 10,000 उधार दिये, जिसका पाँच समान वार्षिक किश्तों में 1st जनवरी, 2007 से पुनः भुगतान प्रारम्भ किया जायेगा। औसत देय तिथि ज्ञात कीजिये एवं 5% प्रति वर्ष की दर से ब्याज की राशि की गणना कीजिए, जो दास ब्रदर्स द्वारा कुमार & संस से वसूल करेगा।

समाधान (Solution)

$$\text{औसत देय तिथि} = \text{ऋण की तिथि} + \frac{\text{उधार देने की तिथि से प्रत्येक किश्त के पुनः भुगतान की तिथि तक दिनों/महीनों/वर्षों की संख्या का योग}}{\text{किश्तों की संख्या}}$$

$$\text{औसत देय तिथि} = 1, \text{जनवरी}, 2006 + \frac{1+2+3+4+5}{5}$$

$$= 1, \text{जनवरी}, 2006 + 3 \text{ बर्ष}$$

$$= 1, \text{जनवरी}, 2009$$

© The Institute of Chartered Accountants of India

भुगतान की तिथि से किसी स्थायी तिथि तक भुगतान किश्तों पर निश्चित दर से ब्याज को ₹ 10,000 की तरह किया जायेगा (यदि उधार 1 जनवरी, 2009 की स्थायी तिथि तक है) यहाँ किसी पक्ष को कोई हानि नहीं होगी। माना कि ब्याज की दर 5% प्रतिवर्ष तथा निपटारे की तिथि 31 दिसम्बर, 2007 हो, तब ब्याज की गणना गुणनफल विधि द्वारा दोनों पक्षों के दृष्टिकोण से निम्न प्रकार से होगी।

कुमार & संस निम्नलिखित ब्याज चुकायेगा—

राशि ₹	**पर चुकता**	**कुमार & संस द्वारा 31st दिसम्बर 2011 तक प्रयोग किये गये धन की अवधि**	**गुणनफल ₹**
2,000	1, जनवरी, 2007	5 वर्ष	10,000
2,000	1, जनवरी, 2008	4 वर्ष	8,000
2,000	1, जनवरी, 2009	3 वर्ष	6,000
2,000	1, जनवरी 2010	2 वर्ष	4,000
2,000	1, जनवरी 2011	1 वर्ष	2,000
			30,000

एक वर्ष के लिए ₹ 30,000 पर 5% प्रतिवर्ष से ब्याज = $\frac{₹\,30,000 \times 5}{100} = ₹\,1,500$

दास ब्रदर्स को ₹ 10,000 पर ब्याज (यदि 1 जनवरी 2009 को दिए हैं) औसत देय तिथि से 31 दिसम्बर, 2011 यानी 3 वर्षों के लिए 5% प्रतिवर्ष से प्राप्त होगा।

$= \frac{5 \times 3 \times ₹\,10,000}{100} = ₹\,1,500$

उपरोक्त से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि उधारकर्ता 1 जनवरी, 2007 से 5 वर्षों के लिए ₹ 2,000 वार्षिक भुगतान करता है तथा यदि ऋणदाता 1 जनवरी, 2009 को ₹ 10,000 देता है तब दोनों एक दूसरे से समान ब्याज प्रभार करेंगे। यहाँ किसी भी पक्ष को कोई हानि नहीं होगी, लेकिन वास्तव में, ऋणदाता 1 जनवरी, 2006 को ₹ 10,000 देता है, इसीलिए उसे 3 वर्षों का ऋण अग्रिम में दिया गया तथा 3 वर्षों के लिए ₹ 10,000 पर ब्याज प्रभार होगा।

ब्याज = $\frac{₹\,10,000 \times 5}{100} \times 3 = ₹\,1,500$ (दास ब्रदर्स के द्वारा लगाया गया)

1.3. अनुग्रह दिवसों को विचार करने के बाद देय तिथि की गणना (Calculation of due date after taking into consideration days of grace)

विनिमय विपत्र की देय तिथि वह तिथि है जब आयदाता द्वारा विपत्र की राशि देय हो। एक विनिमय विपत्र या प्रतिज्ञा पत्र उस तिथि पर परिपक्व होता है जिस पर देय है। और प्रत्येक प्रतिज्ञा पत्र या विनिमय विपत्र (सिवाय उनके जो मांग पर, दर्शनी या प्रस्तुतीकरण पर देय) जिस पर देय तिथि लिखी गयी है, उससे तीन दिन बाद देय होती है।

उदाहरण (Example)—

(i) 30 सितम्बर को बनाया गया एक विपत्र तिथि के तीन महीने बाद देय है, वह 2 जनवरी को देय होगा।

(ii) 1 जनवरी की तिथि का पत्र दर्शनी के एक माह बाद देय है, वह 4 फरवरी को देय होगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

1.4 कुछ महीनों में चुकता 'तिथि के पश्चात्' या 'दर्शनी' विपत्रों या पत्रों की देय तिथि की गणना (Calculating due date of bill or note payable few months after date or sight)

जब कोई विपत्र दर्शनी या महीने की घोषित संख्याओं या निश्चित घटना के पश्चात देय होता है तो अवधि उस तिथि पर समाप्त मानी जायेगी जो तिथि उस प्रपत्र में लिखी गयी है, यदि अवधि के माह में वह तिथि न पड़े तो अवधि की समाप्ति उस माह के अंतिम दिन मानी जायेगी।

उदाहरण (Example)—29 जनवरी 2007 को एक देय विपत्र की तिथि के एक माह के पश्चात देय बनाया जाता है। विपत्र की देय तिथि 28 फरवरी के तीन दिन बाद अर्थात् 3rd मार्च होगी (2007 में फरवरी केवल 28 दिनों की है)।

1.5 परिपक्वता के दिन अवकाश होने पर देय तिथि की गणना (Calculation of due date when the maturity day is holiday)

जब कोई विनिमय विपत्र या प्रतिज्ञा पत्र सार्वजनिक अवकाश के दिन परिपक्व होता है(अनुग्रह दिवस शामिल करके) तब उस प्रपत्र को पिछले व्यावसायिक दिवस को माना जायेगा। "सार्वजनिक अवकाश" की व्याख्या में रविवार तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा सरकारी राजपत्र में अधिसूचना घोषित किये गए अन्य दिवस सार्वजनिक अवकाश में शामिल हैं। लेकिन, यदि अवकाश किसी आकस्मिक या अदृश्य अवकाश हो तब तिथि आने वाले अगले दिन को मानी जायेगी।

उदाहरण (Illustration) **6**

एक व्यापारी ने निम्नलिखित कुछ विपत्रों को जो विभिन्न तिथियों पर देय हैं, स्वीकार किये हैं। अब वह इन विपत्रों को निरस्त करके समस्त राशि का एक नया विपत्र स्वीकार करना चाहता है जो निम्न औसत भुगतान तिथि पर देय होगा—

क्र. सं.	विपत्र की तिथि	राशि ₹	विपत्र की अवधि
1.	1st मार्च, 2005	400.00	2 माह
2.	10th मार्च, 2005	300.00	3 माह
3.	5th अप्रैल, 2005	200.00	2 माह
4.	20th अप्रैल, 2005	375.00	1 माह
5.	10th मई, 2005	500.00	2 माह

आपको नियत औसत देय तिथि ज्ञात करना आवश्यक है।

समाधान (Solution)

औसत देय तिथि की गणना

क्र. सं.	विपत्र की तिथि	परिपक्वता की देय तिथि	राशि ₹	प्रारंभिक तिथि से दिनों की संख्या (4th May)	गुणनफल
1.	1st मार्च, 2005	4th May	400.00	0	0
2.	10th मार्च, 2005	13th June	300.00	40	12,000
3.	5th अप्रैल, 2005	8th Jnue	200.00	35	7,000
4.	20th अप्रैल, 2005	23rd May	375.00	19	7,125
5.	10th मई, 2005	13th July	500.00	70	35,000
	योग :		**1,775.00**		**61,125**

© The Institute of Chartered Accountants of India

मान्य देय तिथि 4 मई, 2005 के 34 दिनों बाद औसत देय तिथि = 61,125/1,775 को देय है। नया विपत्र ₹ 1,775 के लिए 7 जून 2005 देय होना चाहिए।

उदाहरण (Illustration) **7**

A 1 जनवरी, 2005 को B के ₹ 890 का ऋणी है। 2005 में A व B के मध्य निम्न अधिक सौदे जनवरी से मार्च के मध्य हुए—

16 जनवरी	A ने माल क्रय किया	₹ 910
2 फरवरी	A ने नगद ऋण प्राप्त किया	₹ 750
5 मार्च	A ने माल क्रय किया	₹ 810

A समस्त राशि का भुगतान 31 मार्च, 2005 को 5% प्रतिवर्ष ब्याज के साथ करता है, ब्याज की गणना औसत देय तिथि द्वारा कीजिये।

समाधान (Solution)

देय तिथि 2005	**राशि ₹**	**1 जनवरी से दिनों की संख्या**	**गुणनफल**
1 Jan.	890	0	0
16 Jan.	910	15	13,650
2 Feb.	750	32	24,000
5 March	810	64	51,840
योग :	**3,360**		**89,490**

औसत देय तिथि की गणना

$$\text{औसत देय तिथि} = \text{आधार तिथि} \pm \frac{\text{गुणनफलों का योग}}{\text{राशियों का यागे}}$$

= Jan. 1 + [89,490/3,360] i.e., 27 days or Jan. 28

Interest therefore has been calculated on ₹ 3,360 from 28th Jan. to 31st March, i.e., for 63 days.

$$3{,}360 \times \frac{5}{100} \times \frac{63}{365} = ₹\ 29$$

उदाहरण (Illustration) **8**

राधेश्याम ने हरिराम से माल क्रय किया, भुगतान के लिए देय तिथियों पर नगदी निम्नलिखित है—

15 मार्च	₹ 400, 18 अप्रैल को देय
21 अप्रैल	₹ 300, 24 मई को देय
27 अप्रैल	₹ 200, 30 जून को देय
15 मई	₹ 250, 18 जुलाई को देय

हरिराम कुल देय राशि के लिए औसत देय तिथि पर प्रपत्र बनाने के लिए सहमत है उस तिथि का निश्चय कीजिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

देय तिथि	राशि ₹	18 अप्रैल से दिनों की संख्या	गुणनफल
18th अप्रैल	400	0	0
24th मई	300	36	10,800
30th जून	200	73	14,600
18th जुलाई	250	91	22,750
योग :	**1,150**		**48,150**

आधार तिथि 18 अप्रैल के 42 दिनों के बाद औसत देय तिथि = 48,150/1,150, यानि 30 May.

उदाहरण (Illustration) 9

निम्नलिखित सूचनाओं से औसत देय तिथि की गणना कीजिये—

विपत्र की तिथि	अवधि	राशि ₹
10 अगस्त, 2007	3 माह	6,000
23 अक्टूबर, 2007	60 दिन	5,000
4 दिसम्बर, 2007	2 माह	4,000
14 जनवरी, 2008	60 दिन	2,000
8 मार्च, 2008	2 माह	3,000

समाधान (Solution)

औसत देय तिथि की गणना (Calculation of Average due date)

विपत्र की तिथि	अवधि	देय तिथि	10 अगस्त 1994 से दिनों की संख्या	राशि ₹	गुणनफल
10 Aug., 2007	3 months	13 Nov., 2007	95	6,000	5,70,000
23 Oct., 2007	60 days	25 Dec., 2007	137	5,000	6,85,000
4 Dec., 2007	2 months	07 Feb., 2008	181	4,000	7,24,000
14 Jan., 2008	60 days	18 Mar., 2008	220	2,000	4,40,000
8 Mar., 2008	2 months	11 May, 2008	274	3,000	8,22,000
	Total :			**20,000**	**32,41,000**

$$\text{औसत देय तिथि} = \text{आधार तिथि} \pm \frac{\text{गुणनफलों का योग}}{\text{राशियों का यागे}}$$

$= 10^{th}$ Aug., 2007 + [32,41,000 / 20,000]

$= 10^{th}$ Aug., 2007 + 162.05 days i.e. January. 19, 2008

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **10**

श्री ग्रीन व श्री रेड के निम्नलिखित आपसी सौदे थे और वे अपना हिसाब औसत भुगतान तिथि पर करना चाहते हैं—

ग्रीन ने रेड से क्रय किया :	₹
6th जनवरी, 2008	6,000
2nd फरवरी, 2008	2,800
31st मार्च, 2008	2,000
ग्रीन ने रेड को विक्रय किया—	₹
6th जनवरी, 2008	6,600
9th मार्च, 2008	2,400
20th मार्च, 2008	500

आपको नियत औसत देय तिथि ज्ञात करना आवश्यक है।

समाधान (Solution)

औसत देय तिथि की गणना (Calculation of Average due date)

6 फरवरी, 2008 को आधार तिथि के रूप में ग्रीन के भुगतान के लिए लीजिए—

देय तिथि 2008	**राशि ₹**	**आधार तिथि यानि 6 जनवरी 2008 से दिनों की संख्या**	**गुणनफल**
6th जनवरी	6,000	0	0
2nd फरवरी	2,800	27	75,600
31st मार्च	2,000	84	1,68,000
योग :	**10,800**		**2,43,600**

रेड के भुगतान के लिए

देय तिथि 2008	**राशि ₹**	**आधार तिथि यानि 6 जनवरी 2008 से दिनों की संख्या**	**गुणनफल**
6th जनवरी	6,600	0	0
9th मार्च	2,400	62	1,48,800
20th मार्च	500	73	36,500
योग :	**9,500**		**1,85,300**

ग्रीन के गुणनफलों पर रेड का आधिक्य = ₹ 2, 43,600 – ₹ 1,85,300
= ₹ 58,300
= ₹ 10,800 – ₹ 9,500
= ₹ 1,300

आधार तिथि से निपटारे की तिथि तक के दिनों की संख्या है—

58,300 / 1,300 = 45 days निकटतम (approx.)

इसलिए शेष के निपटारे की तिथि 6 जनवरी से 45 दिनों के बाद यानि कि, 20 फरवरी पर होगी। 20 फरवरी 2008 पर, ग्रीन द्वारा रेड को ₹ 1,300 चुकाकर खाते को समाप्त किया जाये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश

(SUMMARY)

- औसत देय तिथि वह तिथि है जिसमें शुद्ध देय राशि का निपटारा ऋणकर्ता या ऋणदाता को बिना किसी ब्याज की हानि हुए हो सकता है।
- यह कई दशाओं में प्रयोग होता है; जैसे—
  (i) साझेदार के आहरण पर ब्याज की गणना।
  (ii) कई विभिन्न तिथियों पर देय विनिमय विपत्रों तथा एक अकेले विपत्र के निर्गमन की गणना।
  (iii) एक किश्त में राशि उधार लेना तथा कई किश्तों में पुनः भुगतान।
- जब रकम कई किश्तों में उधार ली जाती है तब औसत देय तिथि की गणना निम्न प्रकार से की जायेगी—

$$\text{औसत देय तिथि} = \text{आधार तिथि} \pm \frac{\text{गुणनफलों का योग}}{\text{राशियों का यागे}}$$

- जब आहरणों पर ब्याज प्रभार है तथा आहरण विभिन्न तिथियों पर होते हैं तब ब्याज की गणना आहरणों की औसत देय तिथि के आधार पर की जा सकती है।
- जब रकम एक किश्त में उधार ली जाती है तथा पुनः भुगतान कई किश्तों में होता है, इस दशा में औसत देय तिथि होगी—

$$\text{आसैत देय तिथि} = \text{ऋण की तिथि} = \frac{\text{उधार देने की तिथि से प्रत्येक किश्त के पुनः भुगतान की तिथि तक दिनों / महीनों / वर्षों की संख्या का योग}}{\text{किश्तों कि संख्या}}$$

- प्रत्येक प्रतिज्ञा पत्र या विनिमय विपत्र (जो माँग पर या दर्शनी या प्रस्तुत करने पर देय हैं, को छोड़कर) उस तिथि के तीन दिन बाद देय होते हैं जिस पर ये चुकता होना व्यक्त हैं। तीन दिन की यह छूट अवधि 'अनुग्रह दिवस' कहलाती है।

स्व-परीक्षा प्रश्न

(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

नीचे दिए गये विकल्पों से अधिक उपयुक्त उत्तर चुनिये—

1. यदि भुगतान औसत देय तिथि पर किया है, उसमें परिणाम होगा—
   (अ) लेनदारों को ब्याज की हानि
   (ब) देनदारों को ब्याज की हानि
   (स) इनमें से किसी को ब्याज की हानि नहीं
   (द) उपरोक्त से कोई नहीं।
2. माध्य तिथि की गणना होती है
   (अ) प्रति खातों के निपटारे के सम्बन्ध में
   (ब) एक मुश्त भुगतान हेतु नहीं

© The Institute of Chartered Accountants of India

(स) विभिन्न तिथियों पर कई भुगतान हेतु
(द) एक मुश्त भुगतान हेतु

3. यदि भुगतान औसत देय तिथि के पश्चात् होता है तो pa.....
(अ) लेनदार
(ब) देनदार
(स) बैंक
(द) उपरोक्त से कोई नहीं

[**उत्तर** (Answer)— 1. (स), 2. (ब), 3. (अ)।]

4. उपयुक्त कारण देते हुए बताइए इनमें से कौन से कथन सत्य या असत्य हैं?
(अ) औसत देय तिथि भुगतानों हेतु अनेक देय तिथियों की माध्यिका है।
(ब) यदि भुगतान औसत देय तिथि पर किया जाता है तो इसके परिणाम में लेनदारों को ब्याज की हानि होती है।
(स) औसत देय तिथि की गणना में केवल पहले सौदे की देय तिथि को आधार के रूप में माना जाना चाहिये।
(द) यदि भुगतान औसत देय तिथि से पूर्व किया है तो ब्याज पाने वाला पक्ष लेनदार है।

[**उत्तर** (Answer)—(अ) असत्य—बराबर या माध्य, (ब) असत्य—किसी पक्ष को ब्याज की हानि नहीं होगी, (स) असत्य—किसी भी सौदे कि, (द) असत्य—देनदार।]

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

3. औसत देय तिथि का क्या अर्थ है?
4. औसत देय तिथि गणना के महत्व की व्याख्या कीजिये।
5. आप औसत देय तिथि की गणना कैसे करेंगे जब विनिमय विपत्र की परिपक्व तिथि को अवकाश है ?

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

6. औसत देय तिथि गणना करने की प्रक्रिया समझाएँ जब राशि कई किश्तों में उधार दी हो, लेकिन भुगतान एक मुश्त हो?

IV. क्रियात्मक प्रश्न (Practical Problems)

7. औसत देय तिथि निकालिये—

5.2.2005 पर देय ₹ 6,000	15.7.2005 पर देय ₹ 5,700
7.4.2005 पर देय ₹ 3,200	18.9.2005 पर देय ₹ 7,000

8. A के विभिन्न तिथियों पर देय विपत्र निम्नलिखित है, वे खाते की पूर्ण राशि का निपटारा चैक द्वारा करने को तैयार हैं, चैक की तिथि तय कीजिये।
17/7 पर देय ₹ 3,000
15/8 पर देय ₹ 2,000 (स्वतंत्रता दिवस)
18/9 पर देय ₹ 7,000 (रविवार)
3/10 पर देय ₹ 3,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

9. सुदर्शन के पास सोहन से प्राप्त विपत्र तथा देय विपत्र निम्नलिखित हैं, औसत देय तिथि की गणना कीजिये, जब बिना कोई ब्याज की हानि हुए भुगतान प्राप्त या चुकता किया जा सकता है।

तिथि	राशि ₹	प्राप्त विपत्र की अवधि (माह)	तिथि	देय विपत्र राशि ₹	अवधि (माह)
01/06/2006	3,000	3	29/05/2006	2,000	2
05/06/2006	2,500	3	03/06/2006	3,000	3
09/06/2006	6,000	1	10/06/2006	6,000	2
12/06/2006	10,000	2	13/06/2006	9,000	2
20/06/2006	15,000	3	27/06/2006	13,000	1

अवकाश : 15 अगस्त 2006, 16th अगस्त, 2006 और 6 सितम्बर, 2006.

10. 'A' ने 1st जनवरी, 2007 को 'B' को ₹ 10,000 उधार दिये, जिसका पाँच समान अर्ध वार्षिक किश्तों में 1st जनवरी, 2008 से पुनः भुगतान प्रारम्भ किया जायेगा। औसत देय तिथि ज्ञात कीजिये एवं 10% प्रति वर्ष की दर से ब्याज की राशि की गणना कीजिए।

11. E ने F को निम्नलिखित राशियाँ उधार दीं—

10th मार्च, 2008 पर देय ₹ 5,000

2nd अप्रैल, 2008 पर देय ₹ 18,000

30th अप्रैल, 2008 पर देय ₹ 60,000

10th जून, 2008 पर देय ₹ 2,000

वह औसत देय तिथि से 10% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज के साथ पूरा भुगतान चाहता है, औसत देय तिथि और ब्याज की राशि की गणना कीजिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

भाग 2 : चालू खाता
(UNIT–2 : ACCOUNT CURRENT)

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप सक्षम होंगे—

- **चालू लेखा विवरण के अर्थ को समझने में।**
- **चालू लेखा विवरण तैयार करने की विधियों को सीखने में। चालू लेखा विवरण तैयार करने की विधियाँ; जैसे—ब्याज सारणी की सहायता द्वारा, गुणनफलों के माध्यम द्वारा तथा गुणनफल के शेषों द्वारा।**
- **चालू लेखा विवरण को तैयार करने में निहित प्रक्रिया की गणना सीखने में।**

2.1 परिचय (Introduction)

एक चालू लेखा दी गयी समय अवधि हेतु पक्षकारों के मध्य हुए व्यवहारों तथा विभिन्न मदों पर देय या प्रभारित ब्याज को शामिल करते हुए एक निरन्तर विवरण है। इसे एक खाते के रूप में लिया जाता है।

कुछ स्थितियाँ जब चालू लेखा विवरण तैयार किया जाता है—

1. यह तब बनाया जाता है जब दो पक्षकारों के मध्य निरन्तर व्यवहारों को नियमित रूप से स्थापित करना हो। उदाहरण—एक निर्माता जो एक व्यापारी को निरन्तर उधार पर माल बेचता है तथा विभिन्न अन्तरालों पर उससे किश्तों में भुगतान प्राप्त करता है तथा शेष अदत्त राशि पर ब्याज प्रभारित होता है।
2. माल का प्रेषणी भी चालू लेखा विवरण तैयार कर सकता है, यदि प्रेषण की समाप्ति के बाद खातों का निपटारा होता तथा अदत्त शेष पर ब्याज प्रभारित होता है।
3. एक बैंकर तथा उसके ग्राहक के मध्य हुए सौदों को भी निरन्तर चालू लेखा विवरण तैयार करके सुलझाया जा सकता है।

चालू लेखा विवरण के दो पक्षकार होते हैं—

एक जो खाता प्रस्तुत करता है तथा अन्य जिसका खाता प्रस्तुत किया जाता है। यह एक चालू लेखा विवरण के शीर्षक में निर्देशित किया जाता है जो निम्न प्रकार से होता है—

"A in Account Current with B" इसका मतलब है कि A ग्राहक है तथा B द्वारा खाता प्रस्तुत किया जाएगा।

2.2 चालू लेखा विवरण की तैयारी (Preparation of Account Current)

यहाँ चालू लेखा विवरण तैयार करने के तीन तरीके हैं—

1. ब्याज सारणियों की सहायता के साथ;
2. गुणनफलों के माध्यम द्वारा; तथा
3. गुणनफलों के शेषों के माध्यम द्वारा।

2.2.1 ब्याज सारणियों की सहायता के साथ चालू लेखा विवरण की तैयारी (Preparation of Account Current with the help of Interest Tables)—इस विधि के अनुसार, सभी सौदे एक खाते के रूप में व्यवस्थित होते हैं। यहाँ ऐसे ही एक खाते के दोनों पक्षों पर दो अतिरिक्त स्तम्भ जो अग्रांकित हैं—

© The Institute of Chartered Accountants of India

(a) पहले स्तम्भ का मतलब है कि प्रत्येक व्यवहार की देय तिथि से खाते प्रस्तुत करने की तिथि तक गिने हुए दिनों की संख्या को निर्देशित करना।

(b) अन्य स्तम्भ का मतलब ब्याज लिखने के लिए है। तैयार सारणियों की सहायता से विभिन्न समय बिन्दुओं के लिए दिए गये दरों से विभिन्न राशियों पर देय ब्याज निकाला जाता है तथा इसे प्रत्येक मद के सामने अलग से लिखा जाता है। दोनों पक्षों के ब्याज स्तम्भ का योग लगाया जाता है तथा शेष निकाला जाता है।

उदाहरण (Illustration) **1**

श्याम के साथ निम्नलिखित व्यवहारों के सम्बन्ध में नाथ ब्रदर्स के लिए चालू लेखा विवरण तैयार कीजिए—

		₹	
2007			
16 सितम्बर	श्याम को माल बेचा	200	[1 अक्टूबर को देय]
01 अक्टूबर	श्याम से रोकड़ प्राप्त	90	
21 अक्टूबर	श्याम से माल खरीदा	500	[1 दिसम्बर को देय]
01 नवम्बर	श्याम को चुकाये	330	
01 दिसम्बर	श्याम को चुकाये	330	
05 दिसम्बर	श्याम से माल खरीदा	500	[1 जनवरी को देय]
10 दिसम्बर	श्याम से माल खरीदा	200	[1 जनवरी को देय]
2008			
01 जनवरी	श्याम को चुकाये	600	
09 जनवरी	श्याम को माल बेचा	20	[1 फरवरी को देय]

1 फरवरी तक का चालू खाता विवरण तैयार कीजिए। 6% प्रतिवर्ष ब्याज की गणना कीजिए।

समाधान (Solution)

Shyam in Account Current with Nath Brothers

(Interest to 1st February, 2008 @ 6% p.a.)

Dr. Cr.

Date	Particulars	Due Date	Amount ₹	Days	Interest	Date	Particulars	Due Date	Amount ₹	Days	Interest
2007						2007					
Sept.16	To Sales A/c	1st Oct.	200	123	4.04	Oct.01	By Cash A/c	1st Oct.	90	123	1.82
Nov.01	To Cash A/c	1st Nov.	330	92	5.00	Oct.21	By Purchase A/c	1st Dec.	500	62	5.10
Dec.01	To Cash A/c	1st Dec.	330	62	3.36	Dec.05	By Purchase A/c	1st Jan.	500	31	2.55
						Dec.10	By Purchase A/c	1st Jan.	200	31	1.02
2008						2008					
Jan.1	To Cash A/c	1st Jan.	600	31	3.06	Feb.01	By Balance of Interest				4.97
Jan.9	To Sales A/c	1st Feb.	20			Feb.01	By Balance c/d		194.97		
Feb.1	To Interest		4.97								
			1484.97		**15.46**				**1484.97**		**15.46**

© The Institute of Chartered Accountants of India

शैक्षणिक टिप्पणी (Tutorial Notes)—

1. हालांकि दिनों की संख्या की गणना में देय तिथि की तारीख पर ध्यान नहीं दिया जाता है और जिस तारीख तक खाता तैयार किया जाता है वह शामिल होती है।
2. जबकि प्रारम्भिक शेष हेतु दिनों की संख्या की गणना में प्रारम्भिक तिथि के साथ-ही-साथ जिस तारीख तक खाता तैयार किया जाता है, को भी गिना जाता है।

दिनों की गणना (Calculation of days)—

Transaction	Due	Oct.	Nov.	Dec.	Jan.	Feb.	Total	
2007	**Date**							
Sept.	16	1st Oct.	30+	30+	31+	31+	1=	123 Days
Oct.	1	1st Oct.	30+	30+	31+	31+	1=	123 Days
Oct.	21	1st Dec.	-	-	30+	31+	1=	62 Days
Nov.	1	1st Nov.	-	29+	31+	31+	1=	92 Days
Dec.	1	1st Dec.	-	-	30+	31+	1=	62 Days
Dec.	5	1st Jan.	-	-	-	30+	1=	31 Days
Dec.	10	1st Jan.	-	-	-	30+	1=	31 Days
2008								
Jan.	1	1st Feb.	-	-	-	30+	1=	31 Days
Jan.	9	1st Feb.	-	-	-	-	- =	0 Days

2.2.2 गुणनफलों के माध्यम द्वारा चालू लेखा विवरण की तैयारी (Preparation of Account Current by means of Products)—जब इस विधि को अपनाया जाता है तब चालू लेखा विवरण को बनाने का तरीका समान रहता है। यह केवल ब्याज की गणना की विधि है, जो अलग है। पिछली विधि के अन्तर्गत, चालू लेखा विवरण के दोनों पक्षों पर ब्याज स्तम्भ उपलब्ध होता है तथा प्रत्येक मद के सम्बन्ध में तैयार बनी ब्याज सारणियों से ब्याज निकाला जाता है। इस विधि में, ब्याज स्तम्भ को 'गुणनफल' स्तम्भ द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है। इस स्थिति में, रकम को उन दिनों की संख्या से गुणित करके जिसके लिए वह अदत्त रहे हैं निकाली गयी राशि गुणनफल होगी। मुद्रा की एक निश्चित राशि हेतु दिनों की एक निश्चित संख्या पर ब्याज गुणनफल पर निकाले गये एक दिन के ब्याज के समान ही होगी। अन्य शब्दों में, प्रत्येक व्यवहार की अवधि को एक दिन तक घटाने की दृष्टि से, प्रत्येक सौदे की राशि दिनों की संख्या द्वारा गुणित होगी। यह गुणनफल प्रत्येक व्यवहार के सम्मुख गुणनफल स्तम्भ में प्रविष्ट होगा। शेष चरण निम्न प्रकार होते हैं—

(अ) दो पक्षों पर गुणनफलों का शेष;

(ब) गुणनफलों के शेष दिये गये दर से ब्याज की गणना;

(स) राशि स्तम्भ में उचित पक्ष पर ब्याज प्रविष्टि होगा। यह प्रविष्टि उस विपरीत पक्ष में होती है जिसमें कि गुणनफल का शेष प्रस्तुत हुआ है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण 1 को लेते हुए, गुणनफल के माध्यम से चालू लेखा विवरण नीचे समझाया गया है—

Shyam in Account Current with Nath Brothers
(Interest to 1st February, 2008 @ 6% p.a.)

Dr. Cr.

Date	Particulars	Due Date	Amount ₹	Days ₹	Interest ₹	Date	Particulars	Due Date	Amount ₹	Days ₹	Interest ₹
2007						**2007**					
Sept.16	To Sales A/c	1st Oct.	200	123	24,600	Oct.01	By Cash A/c	1st Oct	90	123	11,070
Nov.01	To Cash A/c	1st Nov.	330	92	30,360	Oct.21	By Purchase A/c	1st Dec	500	62	31,000
Dec.01	To Cash A/c	1st Dec.	330	62	20,460	Dec.05	By Purchase A/c	1st Jan.	500	31	15,500
						Dec.10	By Purchase A/c	1st Jan.	200	31	6,200
2008						**2008**					
Jan.1	To Cash A/c	1st Jan.	600	31	18,600	Feb.01	By Balance of products				30,250
Jan.9	To Sales A/c	1st Feb.	20			Feb.01	By Balance c/d		194.97		
Feb.1	To Interest $\frac{30,250}{365} \times \frac{6}{100}$		4.97								
			1,484.97		**94,020**				**1,484.97**		**94,020**
2008											
Feb.	To Balance b/d	194.97									

उदाहरण (Illustration) **2**

31 अगस्त, 2008 पर निम्नलिखित विवरण से मि. पॉल को मि. सिंह द्वारा प्रस्तुत चालू लेखा विवरण तैयार कीजिए—

2008		₹	2008		₹
11 जून	पॉल को माल भेजा	1,020	7 जुलाई	पॉल को माल भेजा	700
15 जून	पॉल से रोकड़ प्राप्त	500	8 अगस्त	पॉल से रोकड़ प्राप्त	1,100
20 जून	पॉल को माल भेजा	650			

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

Mr. Paul in Account Current with Mr. Singh
(Interest to 31st August, 2008 @ 10% p.a.)

Dr. Cr.

Date	Particulars	Due Date	Amount ₹	Days	Interest	Date	Particulars	Due Date	Amount ₹	Days	Interest
2008						**2008**					
June 11	To Sales A/c	11 June	1,020	81	82,620	June 15	By Cash A/c	15 Aug.	500	77	38,500
June 20	To Sales A/c	20 June	650	72	46,800	Aug. 8	By Cash A/c	8 Aug.	1,100	23	25,300
July 7	To Sales A/c	7 July	700	55	38,500	Aug. 31	By Balance of product	.			1,04,120
Aug. 31	To Interest A/c	28.53			Aug. 31	Balance c/d		798.53			
	₹ $\frac{1,04,120}{365} \times \frac{10}{100}$										
			2,398.53		**1,67,920**				**2,398.53**		**1,67,920**
2008											
Sept.	To Balance b/d		798.53								

लाल स्याही ब्याज (Red-Ink Interest)—प्रपत्र की देय तिथि, खाता बन्द करने की तिथि के बाद आने की स्थिति में फिर उसके लिए ब्याज नहीं लगाया जाता है। बन्द करने की तिथि से उसे देय तिथि तक का ब्याज "लाल स्याही" में "चालू लेखा विवरण" के उचित पक्ष में लिखा जाता है। यह ब्याज लाल स्याही ब्याज कहलाता है। लाल स्याही ब्याज को ऋणात्मक ब्याज की तरह उपचारित किया जाता है। वास्तविक व्यवहार में, ऐसे प्रपत्र का गुणनफल [× प्रपत्र का मूल्य (देय तिथि–अन्तिम तिथि) विपरीत पक्ष में साधारण स्याही से लिखते हैं जिस पर प्रपत्र का लेखा किया गया हो]

उदाहरण (Illustration) 3

निम्नलिखित विवरण से एक चालू खाता बनाइए जो कि एस. दास गुप्ता द्वारा ए. हल्दार को 31 दिसम्बर पर 5% प्रतिवर्ष ब्याज लगाते हुए भेजा जाना है।

2008		₹
17 जुलाई	ए. हल्दार को माल बेचा	40
1 अगस्त	ए. हल्दार से प्राप्त रोकड़	500
19 अगस्त	ए. हल्दार को माल बेचा	720
30 अगस्त	ए. हल्दार को माल बेचा	50
1 सितम्बर	ए. हल्दार से प्राप्त रोकड़	400
1 सितम्बर	ए. हल्दार ने दास गुप्ता का 3 माह का विपत्र स्वीकृत किया	300
22 अक्टूबर	ए. हल्दार से माल खरीदा	20
12 नवम्बर	ए. हल्दार को माल बेचा	14
14 दिसम्बर	ए. हल्दार से प्राप्त रोकड़	50

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

A. Halder in Current Account with Mr. S. Dasgupta

(Interest to 31st December, 2008 @ 5% p.a.)

Dr. Cr.

Date	Particulars	Due Date	Amount ₹	Days	Interest	Date	Particular	Due Date	Amount ₹	Days	Interest
2008						**2008**					
June 30	To Balance b/d	....	520	185	96,200	Aug.01	By Cash A/c	Aug.01	500	152	76,000
July 17	To Sales A/c	July 17	40	167	6,680	Sep.01	By Cash A/c A/c	Sep.1	400	121	48,400
Aug.19	To Sales A/c	Aug. 19	720	134	96,480	Sep.01	By Receivable A/c (Note :1)	Dec. 4	300	27	8,100
Aug.30	To Sales A/c	Aug. 30	50	123	6,150	Oct. 22	By Purchase A/c	Oct. 22	20	70	1,400
Nov. 12	To Sales A/c	Nov. 12	14	49	686	Dec.14	By Casg A/c A/c	Dec. 14	50	17	850
						Dec.	By Balance of product				71,446
31	To Interest A/c $\frac{71,446 \times 5\%}{365}$		9.79			Aug.31	By Balance b/d		83.79		
			1,353.79		**2,06.196**				**1,353.79**		**2,06.196**

टिप्पणी (Notes)—यह माना गया है कि विपत्र का भुगतान देय तिथि पर हुआ था। विपत्र कि देय तिथि को भुगतान की तिथि उपचारित करनी चाहिए तथा दिनों की गणना खाते के देय तिथि से होगी।

क्रियान्वन (Workings)—

दिनों की गणना (Calculation of Days)

Date of Transaction :	Due Date	June	July	Aug.	Sept.	Oct.	Nov.	Dec.	Total
Opening Balance		1	+31	+31	+30	+31	+30	+31	= 185
July 17	July 17	–	14	+31	+30	+31	+30	+31	= 167
Aug. 1	Aug. 1	–	–	30	+30	+31	+30	+31	= 152
Aug. 19	Aug. 19	–	–	12	+30	+31	+30	+31	= 134
Aug. 30	Aug. 30	–	–	1	+30	+31	+30	+31	= 123

© The Institute of Chartered Accountants of India

Sep. 1	Sep. 1	–	–	–	29	+31	+30	+31	= 121
Sep. 1	Dec. 4	–	–	–	–	–	–	27	= 27
Oct. 22	Oct. 22	–	–	–	–	9	+30	+31	=70
Nov. 12	Nov. 12	–	–	–	–	–	18	+31	= 49
Dec. 14	Dec. 14	–	–	–	–	–	–	17	=17

उदाहरण (Illustration) **4**

अप्रैल, 2008 को माह के दौरान X तथा Y के बीच निम्नलिखित सौदे/व्यवहार किये गये—

2008			₹
1	अप्रैल	X द्वारा Y को देय राशि	10,000
7	अप्रैल	Y ने दो माह के लिए X की स्वीकृति प्राप्त की	5,000
10	अप्रैल	प्राप्य विपत्र [Y द्वारा स्वीकृत] 7.2.2008 को इस देय तिथि पर भुगतान किया	
10	अप्रैल	Y ने X को माल बेचा [बीजक तिथि 10.5.2008]	15,000
12	अप्रैल	X ने Y से चैक प्राप्त किया	7,500
15	अप्रैल	Y ने X को मला बेचा	6,000
20	अप्रैल	Y द्वारा बेचा गया माल वापस किया	1,000
20	अप्रैल	Y द्वारा विपत्र प्राप्त हुआ जो देय तिथि पर अनादरित हुआ	5,000

आपको 30.4.2008 को X द्वारा Y को प्रस्तुत किये गये गुणनफल विधि द्वारा चालू लेखा विवरण बनाना अपेक्षित है। खाते में 10% प्रति वर्ष ब्याज लिया जाता है।

समाधान (Solution)

'Y' In Account Current with 'B'

(Interest to 30th April, 2008 @ 10% p.a.)

Dr. Cr.

Date	Particulars	Due Date	Amount ₹	Days	Interest	Date	Particulars	Due Date	Amount ₹	Days	Interest
2008		**2008**				**2008**		**2008**			
April 07	To Bills Payable	10 June	5,000	–	–	April 01	By Balance b/d		10,000	30	3,00,000
April 10	To Sales A/c	10 May	15,000	–	–	April 12	By Bank A/c (Cheq. rece. Date. 15.5.08)	May 15	7,500	–	–
April 20	To Purchase A/c Returns	15 May	1,000	–	–	April 15	By Purchase A/c (Invoice Dated 15.5.08)	May 15	6,000	–	–

© The Institute of Chartered Accountants of India

April 20	To Bill Receivable A/c	20 April	5,000	10	50,000						
April 30	To Red Ink Product 15 (₹7,500×15) as per contra	15 May		30	1,12,500	April	By Red Ink Product as per contra (5,000×41)	June 10		41	2,05,000
April 30	To Red Ink Product 15 (₹6,000×15) as per contra	15 May		30	90,000	April	By Red Ink Product as per contra (15,000×10)	May 10		10	1,50,000
April 30	To Balance of product				4,17,500	April 30	By Red Ink Product as per contra (1,000×15)	May 15	–	–	15,000
						April 30	By Interest A/c $\frac{4,17,500}{10\times365}$	114.38			
						April 30	By Balance c/d		2,385.62		
			26,000		**6,70,000**				**26,000**		**6,70,000**

10 अप्रैल पर परिपक्व बिल के लिए कोई प्रविष्टि आवश्यक नहीं है इसके बाद पक्षकार से अनुबंध नहीं है।

2.2.3 शेषों के गुणनफलों के माध्यम द्वारा चालू लेखा विवरण को तैयार करना (Preparation of Account Current by Means of Product of Balance)—इस विधि को अवधिगत शेष विधि के रूप में भी जाना जाता है, इसे सामान्यतः बैंकों की दशा में अपनाया जाता है। जहाँ प्रत्येक व्यवहार के पश्चात् खाते का शेष निकाला जाता है। इस दशा में, प्रत्येक सौदे के सामने लिखे दिनों की संख्या उसकी तिथि से या देय तिथि से अगले सौदे की तिथि तक दिनों को गिना जाता है। अन्तिम सौदे की दशा में दिनों की संख्या, अवधि के अन्त में गिनी जाती है।

प्रत्येक राशि को दिनों की संख्या के साथ गुणा करते हैं यदि राशि नामे (डेबिट) दर्शाती है तो गुणनफल को गुणनफल स्तम्भ में नामे (डेबिट) लिखते हैं और यदि यह जमा (क्रेडिट) शेष दर्शाती है तो गुणनफल को गुणनफल स्तम्भ में जमा (क्रेडिट) में लिखते हैं डेबिट गुणनफल तथा क्रेडिट गुणनफल स्तम्भ का फिर योग लगाते हैं। दिये गये ब्याज की दर से प्रत्येक योग पर ब्याज की गणना की जाती है। और शुद्ध ब्याज सुनिश्चित होती है, यदि शुद्ध ब्याज ग्राहक को देय होता है तो यह "By Interest A/c" के रूप में प्रदर्शित किया जायेगा और यदि यह ग्राहक से देय होता है तो "To Interest A/c" के रूप में प्रदर्शित किया जायेगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) 5

2 जनवरी, 2008 को विनोद इलाहाबाद बैंक लि. से चालू खाता खुलवाता है और ₹ 30,000 की राशि जमा करता है; उसने अतिरिक्त निम्नलिखित राशियाँ भी जमा कीं;

		₹
15	जनवरी	12,000
12	मार्च	8,000
10	मई	16,000

उसके द्वारा निम्नलिखित उदाहरण किये गये

15	फरवरी	26,000
10	अप्रैल	30,000
15	जून	14,000

इलाहाबाद बैंक के खाताबही में विनोद का खाता दर्शाइये। नाम (डेबिट) शेष पर 5% की दर से और जमा (क्रेडिट) शेष पर 2% की दर से ब्याज लगाया जाता है। 30 जून 2008 को खाता तैयार कीजिए।

गणना को निकटतम रुपयों में सही किया जा सकता है।

समाधान (Solution)

Vinod Current Account with Allahabad Bank Ltd.

Date	Particular	Dr.	Cr.	Dr. or Cr.	Balance	Days	Dr. Product	Cr. Product
2008								
Jun. 2	By Cash A/c	–	30,000	Cr.	30,000	13	–	3,90,000
Jan. 15	By Cash A/c	–	12,000	Cr.	42,000	31	–	13,02,000
Feb. 15	To Self	26,000	–	Cr.	16,000	25	–	4,00,000
Mar. 12	By Cash A/c	–	8,000	Cr.	24,000	29	–	6,96,000
April 10	To Self	30,000	–	Dr.	6,000	30	1,80,000	–
May 10	By Cash A/c	–	16,000	Cr.	10,000	36	–	3,60,000
June 15	To Self	14,000	–	Dr.	4,000	15	60,000	–
June 30	By InterestA/c	–	140	Dr.	3,860		–	–
June 30	By Balance c/d	–	3,860	–				
		70,000	**70,000**				**2,40,000**	**31,48,000**

July 1 To Balance b/d 3,860

ब्याज की गणना निम्न रूप से है—

₹ 31,48,000 पर 2% की दर से 1 दिन हेतु = ₹ 172.49

₹ 2,40,000 पर 5% की दर से 1 दिन हेतु = ₹ 32.87

शुद्ध ब्याज = ₹ **139.62**

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश

(SUMMARY)

- जब ब्याज की गणना खाते का आन्तरिक भाग बन जाता है तो बनाये गये खाते को चालू लेखा विवरण कहते हैं।

  कुछ उदाहरण जहाँ इसे बनाया जाता है—

  (1) दो पक्षों के बीच निरन्तर सौदों में,

  (2) प्रेषण पर माल भेजने में तथा

  (3) एक बैंकर और उसे ग्राहकों के बीच निरन्तर सौदों में।

- यहाँ चालू लेखा विवरण को बनाने के तीन तरीके निम्नलिखित हैं—

  (1) ब्याज–सारणी की सहायता से,

  (2) गुणनफलों के माध्यम से तथा

  (3) गुणनफलों के शेषों के माध्यम से।

स्व-परीक्षा प्रश्न

(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

नीचे दिए गये विकल्पों से अधिक उपयुक्त उत्तर चुनिये—

1. लाल स्याही ब्याज है—

   (अ) वास्तव में ब्याज नहीं

   (ब) ऋणात्मक ब्याज

   (स) इसका प्रयोग औसत देय तिथि के सम्बन्ध में

   (द) उपरोक्त में कोई नहीं

2. चालू लेखा, पारस्परिक सौदों का विवरण है—

   (अ) दो पक्षों के बीच

   (ब) औसत देय तिथि के बदले में

   (स) विशेष लेखांकन अवधि हेतु तैयार

   (द) एक विशेष तिथि पर

3. चालू लेखा विवरण में, जबकि दिनों की संख्या की गणना में, देय तिथि अनदेखी है और जिस तारीख तक खाता तैयार किया जाता है, वह..... होती है।

   (अ) शामिल

   (ब) बाहर

   (स) उपेक्षित

   (द) उपरोक्त में कोई नहीं

   [**उत्तर** (Answer)—1. (ब), 2. (अ), 3. (अ)।]

© The Institute of Chartered Accountants of India

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

4. चालू लेखा विवरण का अर्थ क्या है?

5. चालू लेखा विवरण तैयार करने की तीन विधियों को समझाइए।

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

6. चालू लेखा विवरण तैयार करने की सभी विधियों को समझाइये। चालू लेखा विवरण की तैयारी में गणना की प्रक्रिया शामिल करके उदाहरण की सहायता से समझाइये।

IV. क्रियात्मक प्रश्न (Practical Problems)

7. निम्नलिखित सूचना से A की पुस्तक में, B द्वारा A के साथ चालू लेखा विवरण तैयार कीजिए—

2008		₹
15 जनवरी	B को माल बेचा	20,000
01 फरवरी	B को माल बेचा	10,000
15 फरवरी	B से रोकड़ प्राप्त	18,000
01 मार्च	B को माल बेचा	25,000
10 मार्च	B से रोकड़ प्राप्त	5,000
28 मार्च	B से रोकड़ प्राप्त	7,000

एक पक्ष द्वारा अन्य को 15% प्रतिवर्ष से देय ब्याज की राशि की गणना कीजिए।

8. मि. हरिहरन की पुस्तकों में निम्नलिखित सौदों से, 31 मार्च पर समाप्त होने वाले तिमाही हेतु 12% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देय या प्रभारित करते हुये उनके द्वारा मि. मनीरामाप्पा को भेजे जाने वाला चालू लेखा विवरण तैयार करें—

2008		₹
01 जनवरी	मुनीरामाप्पा के खाते में शेष (क्रेडिट)	2,000
12 जनवरी	मुनीरामाप्पा को माल बेचा	25,000
31 जनवरी	मुनीरामाप्पा को माल बेचा	25,000
15 फरवरी	रोकड़ प्राप्त	35,000
20 फरवरी	रोकड़ प्राप्त	5,000
1 मार्च	मुनीरामाप्पा द्वारा माल वापस	5,000
20 मार्च	रोकड़ प्राप्त	10,000

गुणनफल के माध्यम द्वारा तथा शेषों की अवधि के माध्यम द्वारा चालू लेखा विवरण तैयार कीजिए। ब्याज की राशि क्या है?

© The Institute of Chartered Accountants of India

9. 1 जनवरी, 2008 पर, मुम्बई के एच. डी. एफ. सी बैंक में रिशि ने खाता खोला, तथा जमा किये ₹ 10,000। उसके अन्य सौदे निम्न हैं—

जमा— 20 जनवरी को ₹ 5,000, 20 मार्च को ₹ 6,000, 20 मई को ₹ 7,000

निकाले— 20 फरवरी को ₹ 12,000, 20 अप्रैल को ₹ 10,000, 20 जून को ₹ 5,000

डेबिट शेष पर 15% की दर से बैंक ब्याज की गणना कीजिए उधार शेष पर ब्याज नहीं लगता। खाता बन्द 30 जून 2008 को होते हैं।

10. 1 जनवरी 2008 पर, मनोज ने ₹ 3,000 मि. चक्रेश को उधार दिये।

2008		₹
16 जनवरी	मि. चक्रेश ने माल बेचा मनोज को	20,000
29 जनवरी	मि. चक्रेश ने माल खरीदा मनोज से	1,500
10 फरवरी	मि. चक्रेश ने रोकड़ चुकाई	1,500

09 मार्च को मि. चक्रेश द्वारा एक माह हेतु लिखे विपत्र को मिस्टर मनोज ने स्वीकारा। ये 15 मार्च, 2008 पर एक मुश्त भुगतान द्वारा उनके खाते को निपटाना चाहते हैं। भुगतान की जाने वाली राशि को सुनिश्चित करें।

© The Institute of Chartered Accountants of India

8

स्वकीय संतुलन खाताबही

[SELF BALANCING LEDGERS]

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- **स्वकीय–संतुलन खाताबही प्रणाली की परिभाषा और महत्व को समझने में।**
- **स्वकीय–संतुलन खाताबही प्रणाली में सामान्यतः रखी जाने वाली तीन खाताबहियों को जानने में।**
- **स्वकीय–संतुलन खाताबही को बनाने के लिए कुल देनदार तथा कुल लेनदार को तैयार करने की तकनीक को समझने में। स्वकीय-संतुलन खाताबही प्रणाली में कुल लेनदार तथा कुल देनदार खाते सामान्य खाताबही में रखे जाते हैं जो कि क्रमशः विक्रय खाताबही समायोजन खाते एवं क्रय खाताबही समायोजन खाते कहलाते हैं, का निरीक्षण करने में।**
- **विक्रय खाताबही से क्रय खाताबही एवं क्रय खाताबही से विक्रय खाताबही हस्तान्तरण को सम्मिलित करते हुए सौदों के लेखे की तकनीक को समझने में।**

1. परिचय

(INTRODUCTION)

स्वकीय-संतुलन खाताबही प्रणाली से आशय खाताबही रखने की वह प्रणाली में जो खाताबहियों को लेनदेन की प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत करती है। नामस्वरूप, विक्रय खाताबही, क्रय खाताबही, सामान्य खाताबही आदि और स्वतन्त्र रूप से उन्हें संतुलित करती है। खातों की बड़ी संख्या के दौरान सौदों की संख्या में बढ़ोत्तरी के साथ खाताबही के आकार में पुष्टि होती है, यह अशुद्धियों की खोज करने में समस्या उत्पन्न करती है। उसे हटाने के लिए विभिन्न खाताबही की प्रणाली को समाप्त किया जाता है यह इकहरा खाताबही विभक्त करने में सम्मिलित करता है। सामान्यतः तीन खाताबही बनाये जाते हैं नामस्वरूप—देनदार खाताबही, लेनदार खाताबही और मुख्य खाताबही [शेष खातों को अनुग्रहीत करना] इस इकाई में हम स्वकीय-संतुलन खाताबही प्रणाली और उसके लाभों की चर्चा करेंगे। हम प्रणाली के उदाहरण को भी देंगे।

© The Institute of Chartered Accountants of India

2. स्वकीय–संतुलन खाताबही प्रणाली के लाभ

(ADVANTAGES OF SELF BALANCING SYSTEM)

जब किसी संस्था द्वारा खाता बहियों की संख्या रखी जाती है और यदि उनके शेष नहीं मिलते तो लेखाकार को तलपट की असहमति के दायित्व के कारण पुस्तपालन अशुद्धियों को ढूंढ़ने में भारी असुविधा का सामना करना पड़ता है। अशुद्धियों को ढूंढ़ने में लगने वाला समय तथा कठिनाई को कम करने के लिए कभी-कभी खाताबही की स्वकीय-संतुलन व विभागीय संतुलन प्रणाली को लागू किया जाता है। लेनदेन से सम्बन्धित डेबिट या क्रेडिट लेखों की विभिन्न खाताबहियों में खतौनी की जाती है जैसे जब माल उधार बेचा जाता है तब सामान्य खाते में विक्रय खाता समाकलित (क्रेडिट) किया जाता है। लेकिन व्यक्तिगत खाता में ग्राहक के खाते में तत्सम्बन्धित डेबिट किया जायेगा। इस स्थिति में दोनों ही खाताबहियों में खतौनी की शुद्धता की जांच के लिए आवश्यक होगी कि दोनों खाताबहियों के शेषों को निकाला जाए, इस प्रकार एक खाताबही में कोई अशुद्धि दूसरे के शेषों की जाँच करने के लिए अपेक्षित होगी।

ऐसी स्थिति को दूर किया/हटाया जा सकता है। यदि प्रत्येक खाताबहियों को एक-दूसरे के स्वतन्त्र बना दिया जाए। स्वयं खाताबही में आरम्भ किए गऐ खातों के योगों की खतौनी के लिए प्रत्येक खाताबही में विपरीत प्रविष्टियाँ करेंगे। यदि ऐसा किया जाता है तो प्रत्येक खाताबही में व्यक्तिगत खातों की शुद्धता उसके शेषों को निकालकर सत्यापित की जाती है और उसे नियन्त्रण खातों के शेषों के साथ सहमत होती है। एक खाताबही एक नियन्त्रण खाता आरम्भ करता है जो कि स्वकीय-संतुलन खाताबही के रूप में जाना जाता है। यह स्पष्ट है कि नियन्त्रण खाते स्वतन्त्र रूप से संतुलित होने में समर्थ होते हैं यदि उनका शेष व्यक्तिगत शेष के बराबर है।

इस प्रणाली के लाभ निम्न हैं :

1. यह खाताबही रखने वाले व्यक्ति के उत्तरदायित्व को स्थायी करती है। खाताबही के संतुलन या उसके प्रभार के अन्तर्गत खाताबही तथा वह व्यक्ति जो अशुद्धियों के लिए उत्तरदायित्व व्यक्ति को उसे ढूंढ़ने के लिए बुलाया जा सकता है, अशुद्धियों को स्थायीकृत कर देता है।
2. व्यक्तिगत खातों को संतुलित किये बिना ही इससे अतिरिक्त खाते तैयार हो पाते हैं।
3. कुल देनदारों या लेनदारों की संख्या तत्परता मिल जाती है।
4. यह आन्तरिक जांच करने में शक्तिशाली साधन है।
5. जहां कर्मचारियों के असार्वजनिक खाताबही के सूचीपत्र को स्पष्ट नहीं किया गया है। उन खाताबही के शेष को तलपट में कुल शेषों को समामेलन किया जाता है।

3. विभागीय संतुलन

(SECTIONAL BALANCING)

वास्तव में यह शुद्धता की जाँच करने का सरल तरीका है जैसे विक्रय खाता बनाना और सामान्य खाताबही में कुल देनदार खाते बनाना इसका मतलब है कि विक्रय खाताबही में व्यक्तिगत ग्राहकों के खाते रखे जायेंगे तथा सामान्य खाताबही में कुल देनदार खाते में उधार विक्रयों के विभिन्न सौदों के योगों की खतौनी की जाएगी, उधार ग्राहकों से प्राप्त राशि, उनको दिया गया कुल बट्टा, कुल विक्रय वापसी, कुल प्राप्य विपत्र आदि कुल देनदार खाते का शेष व्यक्तिगत ग्राहकों के खाते द्वारा दर्शाए गए शेषों के योग के बराबर होना चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो कुल देनदार खाता और व्यक्तिगत ग्राहक के खाते सही माने जायेंगे। किसी प्रकार की अशुद्धि होने पर अन्तर दर्शाएगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

इसी प्रकार व्यक्तिगत पूर्तिकर्ताओं के खाते उनके शेषों के योग का कुल लेनदार खाते के शेष से जांचे जा सकते हैं। सामान्य खाताबही में दोहरा लेखा स्वयं पूरा हो जायेगा। उदाहरण के लिए, उधार बिक्री के लिए कुल देनदार खाता डेबिट और विक्रय खाता क्रेडिट किया जायेगा पूर्तिकर्ताओं को वापस किये गये माल के लिए कुल लेनदार खाता डेबिट और विक्रय वापसी खाता क्रेडिट किया जायेगा।

कुल खातों को समायोजन खाते या नियन्त्रण खाते भी कहते हैं क्योंकि यह सहायक खाताबहियों की शुद्धता को सिद्ध करते हैं।

4. स्वकीय संतुलन खाताबही में रखी जाने वाली विभिन्न खाताबहियाँ

(VARIOUS LEDGERS TO BE MAINTAINED IN SELF BALANCING LEDGER SYSTEM)

क्रय या विक्रय खाताबही में दोहरा लेखापूरा नहीं होता जैसे कि उपरोक्त वर्णित प्रणाली में इन खाताबहियों से पृथक तलपट नहीं लिया जा सकता है। यदि ये खाताबहियाँ ऐसे तैयार की जाती हैं कि पृथक तलपट शेषों को प्रस्तावित किया जा सके तो इस प्रणाली को संतुलित माना जा सकता है ऐसी स्थिति में प्रत्येक सहायक खाताबही में सामान्य खाताबही समायोजन खाता तैयार किया जायेगा।

(i) क्रय खाताबही समायोजन खाता [वास्तव में कुल लेनदार खाता]

(ii) विक्रय खाताबही समायोजन खाता [वास्तव में, कुल देनदार खाता]

ये खाते नियन्त्रण खाते कहलाते हैं। यह प्रणाली जिस पर समायोजन खातों में लेखों का वर्णन निम्न प्रकार किया गया।

4.1 क्रय खाता बही (Bought Ledger)

यह पाया गया है कि किसी क्रय के लेखे के लिए प्रारम्भिक प्रविष्टि सामान्य खाताबही में क्रय खाते को डेबिट और क्रय खाताबही पूर्तिकर्ता खाते को क्रेडिट किया जाता है। यदि सामान्य तथा क्रय खाताबहियों को स्वकीय-संतुलित बनाने की इच्छा हो तो एक अतिरिक्त प्रविष्ट सामान्य खाताबही समायोजन खाता डेबिट करके तथा क्रय खाताबही समायोजन खाता क्रेडिट करके बनायेंगे जो कुल क्रयों की राशि से बनाया जायेगा।

पुनः, यदि खरीदी गयी सामग्री का भाग वापस किया जाता है और देय शेष चुकाने पर लेखे किये जायेंगे। वापस किये गये माल का मूल्य तथा चुकाये गये धन से क्रय खाताबही में पूर्तिकर्ता के व्यक्तिगत खाते को डेबिट तथा सामान्य खाताबही में वापस किये गये माल के मूल्य से बैंक खाता क्रेडिट किया जायेगा।

इसके अतिरिक्त स्वकीय-संतुलन की प्रणाली की एकरूपता के साथ एक अतिरिक्त प्रविष्टि क्रय खाताबही में सामान्य खाताबही समायोजन खाता क्रेडिट करके उसी राशि में सामान्य खाताबही में क्रय खाताबही समायोजन खाता को डेबिट करना चाहिए।

सामान्यतः देय विपत्र की स्थिति में बट्टों का मूल्य आदि लेखे कर सकते हैं। विशेषरूप से ध्यान रखना चाहिए कि सामान्य खाताबही में क्रय खाताबही समायोजन खाता का शेष क्रय खाताबही में सामान्य खाताबही समायोजन खाते के शेष केवल विपरीत पक्षों के बराबर होगा। साथ ही क्रय खाताबही समायोजन खाता, सामान्य खाताबही को स्वकीय-संतुलित करेगा। यदि यहाँ अनेक क्रय खाताबही उपयोगी हैं तो ऐसी खाताबही में सामान्य खाताबही समायोजन खाता होगा तथा सामान्य खाताबही में प्रत्येक खाताबही के लिए पृथक रूप से क्रय खाताबही समायोजन खाता खोला जायेगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

श्रम की बचत तथा खतौनी की सुविधा के लिए खाताबहियों को स्वकीय संतुलन बनाने के लिए प्रत्येक माह या सप्ताह के अन्त में अतिरिक्त लेखे करने के उद्देश्य सहायक पुस्तकों में लिखे गये लेनदेनों के योगों से मिलान किया जाता है।

4.2 विक्रय खाताबही (Seles Ledger)

उधार बिक्री के लेखे के लिए यह देखा जायेगा कि विक्रय खाताबही में ग्राहक के खाते को डेबिट और सामान्य खाताबही में विक्रय खाते को क्रेडिट किया गया है लेकिन सामान्य तथा विक्रय खाताबही को स्वकीय-संतुलित करने के लिए एक अतिरिक्त लेखा किया जाता है जिसमें सामान्य खाताबही में विक्रय खाताबही समायोजन खाता डेबिट और विक्रय खाताबही कुल विक्रय के साथ में सामान्य खाताबही समायोजन खाता क्रेडिट किया जायेगा।

पुनः जब बिके हुए माल का भाग वापस प्राप्त होता है और शेष वसूल होता है तब वापस लौटाये गये माल के मूल्य से विक्रय वापसी खाता तथा वसूल हुए धन से अधिकोष खाता डेबिट करते हैं तथा उनके योग से विक्रय खाताबही में ग्राहक का व्यक्तिगत खाता क्रेडिट करते हैं। इसके अतिरिक्त स्वकीय-संतुलन करने के लिए विक्रय खाताबही में सामान्य खाताबही समायोजन खाता क्रेडिट करके उपरोक्त राशियों से एक अतिरिक्त लेखा किया जाता है।

सामान्यतः प्राप्य विपत्र, अनादरित विपत्र की दशा में लेखे किये जा सकते हैं।

4.3 सामान्य खाताबही (General Ledger)

जैसे उपरोक्त बताया गया है स्वकीय-संतुलन के लिए क्रय तथा विक्रय खाताबही में हर समय लेखे किये जाते हैं। क्रय खाताबही में लेखों की प्रति-प्रविष्टि प्रभाव को दर्शाया जाता है या सामान्य खाताबही में विक्रय खाताबही समायोजन खाते को बनाया जाता है। ये खाते सारांशिक रूप से कुल देनदारों तथा कुल लेनदारों के खातों का प्रतिनिधित्व करते हैं और इस प्रकार सामान्य खाताबही को स्वकीय संतुलित बनाते हैं। निष्कर्ष के रूप में सामान्य खाताबही को स्वकीय संतुलित करने के लिए किसी अतिरिक्त लेखे की आवश्यकता नहीं है।

यह स्पष्ट हो सकता है कि अन्य खातों के सम्बन्ध में जोकि ग्राहकों या पूर्तिकर्ताओं से सम्बन्धित नहीं होते तब स्वकीय-संतुलित प्रणाली के अन्तर्गत किसी अतिरिक्त प्रविष्टि की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि प्रत्येक सौदे के दोनों पक्ष सामान्य खाताबही में सन्निहित खातों में किसी एक या दूसरे में विद्यमान होते हैं; जैसे—नकद विक्रय, विपत्रों का भुनाना, अपलिखित अशोध्य ऋणों की वसूली, अशोध्य ऋण लेनदारों पर प्रावधान आदि।

उदाहरण (Illustration) **1**

दिनेश एण्ड कं. प्रयोग में तीन खाताबही लाते हैं यानि देनदार खाताबही, लेनदार खाताबही तथा सामान्य खाताबही जो सभी स्वकीय-संतुलन की प्रणाली पर रखते हैं। निम्नलिखित विवरण से इन खाताबही के प्रत्येक में समायोजन खाता तैयार कीजिए।

2008		₹
जनवरी 1	देनदारों का शेष	16,000
	लेनदारों का शेष	18,500
जनवरी 31	उधार क्रय	4,500
	उधार विक्रय	9,800
	नकद विक्रय	1,500

© The Institute of Chartered Accountants of India

लेनदारों को चुकाये	9,875
उनके द्वारा बट्टा दिया	325
देनदारों से रोकड़ प्राप्त	7,800
देय विपत्र स्वीकार	1,500
प्राप्य विपत्र प्राप्त	3,000
विक्रय वापसी	875
क्रय वापसी	600
देनदारों को छूट दी	275
लेनदारों को छूट दी	150
अशोध्य ऋण के लिए संचय	320
डूबत ऋण	450
प्राप्य विपत्र अनादरित	375

समाधान (Solution)

In the Debtors Ledger

General Ledger Adjustment Account

Dr.					Cr.
2008		₹	2008	By	₹
	To Debtors Ledger		Jan. 1	By Balance b/d	16,000
	Adjustment Account:		Jan. 31	Debtors Ledger	
	Bank	7,800		Adjustment A/c:	
	Discount	200		Sales	9,800
	Bills receivable	3,000		Bills Receivable	
	Returns inwards	875		dishonoured	375
	Allowances	275			
	Bed debts	450			
	To Balance c/d	13,575			
		26,175			26,175
			Feb. 1	By Balance b/d	13,575

नकद विक्रय एवं संदिग्ध ऋणों हेतु प्रावधानों की प्रविष्टियाँ देनदार खाताबही पर प्रभाव नहीं डालेंगे।

© The Institute of Chartered Accountants of India

In the Creditors Ledger

General Ledger Adjustment Account

2008		₹	2008		₹
Jan.1	To Balance b/d	18,500	Jan. 31	By Creditors Ledger	
Jan. 31	To Creditors Ledger			Adjustment Account :	
	Adjustment Account :			Bank	9,875
	Purchases	4,500		Discount	325
				Bills Payable	1,500
				Return outwards	600
				Allowances	150
				By Balance c/d	10,550
		23,000			23,000
Feb.1	To Balance b/d	10,550			

In the General Ledger

Debtors Ledger Adjustment Account

2008		₹	2008		₹
Jan.1	To Balance b/d	16,000	Jan. 31	By Nominal Ledger	
Jan. 31	To Nominal Ledger			Adjustment Account:	
	Adjustment A/c:			Bank	7,800
	Sales	9,800		Discount	200
	Bills Receivable			Bills Receivable	3,000
	dishonoured	375		Returns inwards	875
				Allowances	275
				Bad Debts	450
				By Balance c/d	13,575
		26,175			26,175
Feb.1	To Balance b/d	13,575			

Creditors Ledger Adjustment Account

2008		₹	2008		₹
Jan.31	To Nominal Ledger		Jan. 1	By Balance b/d	18,500
	Adjustment A/c:		Jan.31	By Nominal Ledger	
	Bank	9,875		Adjustment A/c:	
	Discount	325		Purchases	4,500
	Bills Payable	1,500			
	Return Outwards	600			
	Allowances	150			
	To Balance c/d	10,550			
		23,000			23,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

एक खाताबही से दूसरे में हस्तान्तरण—जहाँ एक खाता बही से अन्य खाता बही में एक खाते के शेष को हस्तान्तरित किया जाता है। उदाहरण हेतु क्रय खाताबही से विक्रय खाताबही, तो प्रविष्टि, पंजी के माध्यम से अभिलेखित होगी। साथ ही सम्बन्धित प्रभाव को अभिलेखित करने हेतु नियंत्रण खाते में भी एक अतिरिक्त प्रविष्टि करनी होगी।

5. विभागीय सन्तुलन प्रणाली के अन्तर्गत अशुद्धियों का संशोधन

(RECTIFICATION OF ERRORS UNDER SECTIONAL BALANCING SYSTEM)

5.1 विभागीय संतुलन प्रणाली के अन्तर्गत अशुद्धियों का संशोधन (Rectification of errors under Sectional Balancing System)

यदि अशुद्धि उनके योगों को प्रभावित किये बिना देनदारों या लेनदारों के खातों को प्रभावित करती है, तो उसको स्वयं देनदारों या लेनदारों के खातों का समायोजन द्वारा संशोधित कर लिया जाता है लेकिन यदि यह देनदारों या लेनदारों के योग को प्रभावित करता है तो कुल देनदार तथा कुल लेनदार खातों के माध्यम से मुख्य खाताबही में अतिरिक्त प्रविष्टियाँ की जानी होती हैं। निम्न उदाहरण के साथ वर्णित किया है—

1. यदि X को माल बेचा जाता है तथा Y के खाते में गलती से खतौनी की जाती है। मुख्य खाताबही का तलपट मिल जायेगा। इस गलती को X का खाता डेबिट करके तथा Y का खाता क्रेडिट करके देनदार खाताबही में संशोधित किया जा सकता है।
2. यदि X को बेचा गया माल विक्रय बही में लेखा नहीं किया जाता तो इसका मतलब विक्रय खाते में लेखा होना चाहिए। इसका अर्थ है कि विभागीय संतुलन प्रविष्टि विक्रय तथा कुल देनदारों की कम राशि के साथ बढ़ाया जाएगा। अशुद्धि को कुल देनदार खाता को डेबिट करके मुख्य खाताबही में विक्रय खाता को क्रेडिट करके ठीक किया जा सकता है।
3. यदि X को बेचा गया माल, कुल देनदार खाताबही में केवल उसके खाते में लेखा होने से रह जाता है तो मुख्य खाताबही मिल जाती है। इस गलती को "To error in Omitting to record Sales" लिखकर X के खाते को डेबिट करके संशोधित किया जाता है।
4. यदि एक्स को बेचा गया माल देनदार खाताबही में अभिलेखित है तथा अवधि के अन्त में बिक्री खाता उचित जमा (क्रेडिट) है परन्तु कुल देनदार खाते में नाम (डेबिट) करने से छूट गया है, तो त्रुटि को कुल देनदार खाते के नाम पक्ष में "बिक्री अभिलेखन में चूक की अशुद्धि" लिखकर सुधारा जा सकता है।

5.2 स्वकीय संतुलन प्रणाली के अन्तर्गत अशुद्धियों का संशोधन (Rectification of errors under Self Balancing System)

इकहरा खाताबही प्रणाली में सामान्य ढंग के रूप में अशुद्धियों का संशोधन किया जायेगा लेकिन अन्तर है, जबकि देनदारों या लेनदारों के योग प्रभावित होते हैं तो संशोधन अतिरिक्त स्वकीय संतुलन बनाकर किया जायेगा। इस दशा में, उपरोक्त उदाहरणों में अशुद्धियों का संशोधन निम्न रूप से किया जायेगा।

1. देनदार खाताबही में अशुद्धियों के संशोधन के लिए—
   X के खाते को डेबिट करेंगे तथा Y के खाते को क्रेडिट करेंगे।

© The Institute of Chartered Accountants of India

2. अशुद्धि का संशोधन "By error in Omitting the Sale" लिखकर विक्रय खाता क्रेडिट करके किया जायेगा तथा उसी राशि के साथ स्वकीय संतुलन की अतिरिक्त प्रविष्टि इस नाम से बनाई जायेगी।

Debtor Ledger Adjustment A/c	Dr.	[सामान्य खाताबही में]
To General Ledger Adjustment A/c		[देनदार खाताबही में]

3. अशुद्धि को "To error in Omitting to Sales" लिखकर X के खाते को डेबिट करके संशोधन किया जाता है।
4. इसे उसी राशि के साथ स्वकीय संतुलन प्रविष्टि करके संशोधित किया जा सकता है यथा;

Debtor Ledger Adjustment A/c	Dr.	[सामान्य खाताबही में]
To General Ledger Adjustment A/c		[देनदार खाताबही में]

5.3 प्रारम्भिक उचन्त खाता के बाद अशुद्धियों का संशोधन (Rectification of errors after opening suspense account)

विभागीय तथा स्वकीय संतुलन प्रणाली के अन्तर्गत अशुद्धियों के संशोधन की विधि समान होगी, अपवाद के साथ कि ऐसी प्रविष्टियाँ एकतरफा तौर पर ठीक किए गये थे, उचन्त खाते के माध्यम से ठीक किए जायेंगे। उपरोक्त उदाहरणों में अशुद्धियों का संशोधन निम्न प्रकार किया जायेगा :

विभागीय खाताबही के अन्तर्गत—

1. उपरोक्त के समान
2. उपरोक्त के समान
3. उपरोक्त के समान
4. Total Debtor A/c Dr. [मुख्य खाताबही में]
   To Suspence A/c [मुख्य खाताबही में]

स्वकीय-संतुलन प्रणाली के अन्तर्गत—

1. उपरोक्त के समान
2. (a) Suspense A/c Dr. [देनदार खाताबही में]
   To Sales A/c
   (b) Debtor Ledger Adjustment A/c Dr. [देनदार खाताबही में]
   To General ledges Adjustment A/c
3. X's A/c Dr. [देनदार खाताबही में]
   To Suspense A/c
4. (a) Debtor Ledger Adjustment A/c Dr. [मुख्य खाताबही में]
   To Suspense A/c
   (b) Suspense A/c Dr. [देनदार खाताबही में]
   To General Ledger Adjustment A/c

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **2**

निम्नलिखित व्यवहारों के लिए एक्स लि. की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ तैयार कीजिए:

(a) ₹ 1000 द्वारा विक्रय पुस्तक कम कर दी गयी थी।

(b) राव को बट्टा दिया ₹ 50 रोकड़ पुस्तक में सही लिखे थे, उसके खाते में नहीं पहुँचाये।

(c) क्रय खाताबही में मूर्ति के खाते में ₹ 310 का क्रेडिट शेष था उसे विक्रय खाताबही में उसके खाते में हस्तान्तरित कर दिये थे।

स्वकीय-संतुलन प्रणाली तथा विभागीय संतुलन प्रणाली दोनों के अन्तर्गत जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए।

समाधान (Solution)

Journal of Exe. Ltd.

Self-Balancing System :

(a)	Sales Ledger Adjustment Account (In General Ledger)	Dr.	1000	
	To General Ledger Adjustment Account (In Sales Ledger)			1000
	(The error because of the under-casting of Sales Books, rectified)			
	Suspense Account (In General Ledger)	Dr.	1,000	
	To Sales Account			1,000
	(Rectification of the error resulting from under casting of the Sales Book)			
(b)	Suspense Account (In Sales Ledger)	Dr.	50	
	To Rao (In Sales Ledger)			50
	(Rectification of the error by which Rao was not credited, accounts in the general ledger are not affected)			
(c)	Murty (In Purchase Ledger)	Dr.	310	
	To Murty (In Sales Ledger)			310
	(Transfer of Murty's credit balance in the Purchase Ledger to his account in the Sales Ledger)			
	Bought Ledger Adjustment Account (In General Ledger)	Dr.	310	
	To General Ledger Adjustment A/c (In Bought Ledger)			310
	(Correction of the adjustment accounts relating to the Bought Ledger because of the transfer of Murty's account, in the Purchase Ledger)			
	General Ledger Adjustment Account (In Sales Ledger)	Dr.	310	
	To Sales Ledger Adjustment A/c (In General Ledger)			310
	(Correction of the adjustment account relating to the Sales Ledger because of the transfer of Murty's account)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

टिप्पणी : यह मानें कि यदि खाताबही बराबर नहीं है तो उचन्त खाता खोला जाता है।

Sectional Balancing System

(a)	Total Debtors Account	Dr.	1,000	
	To Sales Account			1,000
	(Rectification of the consequence of the under-casting the Sales Book)			
(b)	Credit Rao with ₹ 50 (In Sales Ledger)			
(c)	1. Murty (In Purchase Ledger)	Dr.	310	
	To Murty (In Sales Ledger)			310
	(Transfer of Murty's credit balance ₹ 310 in the Purchase Ledger to his account in the Sales Ledger)			
	2. Total Creditors A/c	Dr.	310	
	To Total Debtors A/c			310
	(Adjustment of total accounts because of the transfer of Murty's account, in the Purchase Ledger to the Sales Ledger)			

उदाहरण (Illustration) **3**

मैसर्स कुलकर्णी ब्रदर्स जो स्वकीय सन्तुलन प्रणाली पर देनदार खाता बही, लेनदार खाता बही तथा सामान्य खाता बही रखता है, की पुस्तकों से निम्नलिखित विवरण निकाला है। देनदार खाताबही तथा लेनदार खाताबही में प्रकट सामान्य खाताबही समायोजन खाता कैसे दर्शायेंगे :

1 जनवरी 2008 पर, देनदारों का शेष	₹ 91,500
1 जनवरी 2008 पर, लेनदारों का शेष	₹ 1,09,800
वर्ष 2008 के लिए व्यवहार :	
उधार क्रय	₹ 41,000
उधार विक्रय	₹ 45,400
विक्रय वापसी	₹ 800
क्रय वापसी	₹ 1200
ग्राहकों से रोकड़ प्राप्त	₹ 51,000
ग्राहकों को बट्टा दिया	₹ 900
लेनदारों को रोकड़ चुकाई	₹ 61,400
बट्टा प्राप्त	₹ 1,340
प्राप्य विपत्र अनादरित	₹ 2,400
देय विपत्र अनादरित	₹ 6,000
देनदार खाताबही से हस्तांतरित	₹ 1290

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

General Ledger Adjustment A/c (in Sales Ledger)

2008		₹	2008		₹
Jan 1 to			Jan 1 to		91,500
Dec. 31	To Sales Ledger Adjustment A/c in General Ledger:		Dec. 31	By Balance b/d By Sales Ledger Adjustment A/c In General Ledger :	
	Return Inward	800		Sales	45,400
	Bank	51,000		B/R Dishonoured	2,400
	Discount	900		Sundry Charges	690
	Bills Receivable	17,000			
	Bad Debts	5,000			
	Transfer	1,290			
Dec. 31	To Balance c/d	64,400			
		1,39,990			1,39,990
			2009		
			Jan. 1	By Balance b/d	64,000

General Ledger Adjustment A/c (in Purchases Ledger)

2008		₹	2008		₹
Jan. 1 to			Jan. 1 to		
Dec. 31	To Balacne b/d	1,09,800	Dec. 31	By Purchases Ledger Adjustment A/c in General Ledger:	
	To Purchases Ledger Adjustmetn A/c in General Ledger:			Bank	61,400
	Purchases	41,000		Bill Payable	24,000
	Bills Payble Cancelled	6,000		Return Outward	1,200
				Discount	1,340
				Allowance	550
				Transfer	1,290
			Dec. 31	By Balace c/d	67,020
		1,56,800			1,56,800
2009					
Jan. 1	To Balance b/d	67,020			

© The Institute of Chartered Accountants of India

6. सहायक पुस्तकों का रेखांकन
(RULING OF SUBSIDIARY BOOKS)

जिस समय यहाँ कई क्रय या विक्रय खाताबहियाँ प्रयोग में हैं, वास्तविक प्रविष्टियों की कई पुस्तकें, उदाहरण हेतु क्रय पुस्तकें, विक्रय पुस्तकें, रोकड़ पुस्तकें, दैनिक पूंजी आदि में उपयुक्त तरीके से रेखांकन, जो विभिन्न खाताबहियों में खाताये गये व्यवहारों के मासिक योग को तत्परता से दर्शाने लायक, स्वकीय संतुलन प्रविष्टि के आधार पर अभिलेखित किया जा सकता है।

7. गुप्त खाता
(SECRET ACCOUNT)

समय पर, निश्चित खातों का संचालन उच्च अधिकारी के अतिरिक्त, स्टॉक के सदस्यों से गुप्त रखना आवश्यक समझा जा सकता है। उदाहरण साझेदारों की पूँजी ऋण, जमा आदि। ऐसी दशा में, इन खातों के लिये एक निजी खाता अलग से बनाया जाता है और एक विश्वसनीय लिपिक द्वारा मुख्य लेखाकार की सीधे निगरानी में खाताबही में खतौनी की जायेगी। निजी खाता बही में सामान्य खाताबही समायोजन खाता भी बनाया जायेगा और सामान्य खाता बही में निजी खाता बही समायोजन खाता बनाया जायेगा। इस प्रकार यद्यपि निजी खाते में रखे गये खातों में व्यक्तिगत लेखे लेखांकन कर्मचारियों का प्रकट किये जायेंगे पर उनका कुल प्रभाव गुप्त रखा जायेगा। व्यक्तिगत खातों को गुप्त रखने की इच्छा की दशा में पृथक रोकड़ बही तथा अधिकोष खाता बनाया जायेगा जो कि पूर्ण गुप्तता को सुनिश्चित करेगा।

जब ऐसी प्रणाली पहली बार आरम्भ की जाती है तो सम्पत्तियाँ और अन्य डेबिट शेषों को सामान्य खाता बही से सम्बन्धित खातों को क्रेडिट करके निजी खाते में सामान्य खाताबही समायोजन खाते को डेबिड या क्रेडिट किया जाता है। जब क्रेडिट शेषों को हस्तांतरित किया जाता है। तब विपरीत लेखे किये जाते हैं। यदि अधिकोष शेष का एक भाग निजी अधिकोष खाते में करने की इच्छा हो तो अधिकोष खाता क्रेडिट निजी खाताबही समायोजन खाता डेबिट करते हैं। निजी अधिकोष से साझेदार आवश्यक राशि को निकाल सकते और जमा पर ब्याज चुकाते हैं और ऋणों पर उपयुक्त दर से ब्याज चुकाते हैं इस बात को प्रकट किये बिना। जब वर्ष के अन्त में खाते बन्द किये जाते हैं तो आगम खाते निजी समायोजन आगम खाते निजी खाता बही समायोजन खाते को हस्तान्तरण द्वारा तथा तत्सम्बन्धी लेखे निजी खाते में सामान्य खाता बही समायोजन खाते को डेबिट या क्रेडिट कर दिया जाता है। इसके पश्चात् सभी शेषों को निजी खाताबही में पहले से ही विद्यमान शेषों के साथ लाभ-हानि खाते में हस्तांतरण कर दिये जाते हैं। इस प्रकार निजी खाते में खातों के परिचालन की पूरी गुप्तता बनी रहती है तथा संस्था द्वारा अर्जित किया गया लाभ भी कर्मचारियो को पता नहीं चलता।

विद्यार्थी ध्यान दें कि निजी तथा सामान्य खाता बही को स्वकीय-संतुलित करने के लिये अपनाई जाने वाली प्रक्रिया उपरोक्त वर्णित विधि से भिन्न है क्योंकि समायोजन खातों में लेखे उस समय नहीं किये जाते, जब व्यय का भुगतान किया जाता है या आय वसूल की जाती है बल्कि वर्ष के अन्त में लेखे किये जाते हैं यह केवल पुस्तपालन की कठिनाई को दूर करने के लिये किया जाता है।

उदाहरण (Illustration) **4**

मि. गोविन्द स्वकीय संतुलन खाताबही रखते हैं, निम्नलिखित व्यवहारों के लेखों से विक्रय खाताबही में सामान्य खाताबही समायोजन खाता बनाइये :

1.4.08 मि. X से पूर्ण भुगतान में ₹ 475 प्राप्त हुए, वह ₹ 25 का बट्टा देता है।
2.4.08 मि. Y से ₹ 2,000 प्राप्त
3.4.08 मि. T को माल भेजा ₹ 100 तथा ₹ 400 का अग्रिम के समायोजन के बाद ₹ 300 प्राप्त

© The Institute of Chartered Accountants of India

4.4.08 मि. Q से ₹ 1,000 डूबत ऋण पुनः प्राप्त किया

5..4.08 निम्नलिखित को माल बेचा—

मि. A	₹ 1,000
मि. B	₹ 1,500
मि. C	₹ 2,000

15.4.08 में P ने देय के लिए ₹ 750 चुकाये उसके बाद शेष देय ₹ 250 था

25.4.08 निम्नलिखित से प्राप्त राशि—

मि. A	₹ 750
मि. B	₹ 1,000
मि. C	₹ 2,000

30.4.08 पूर्ति के लिए मि. R से अग्रिम प्राप्त ₹ 2,000

समाधान (Solution)

Sales Ledger

General Ledger Adjustment Account

2008		₹	2008		₹
April 1	To Balance b/d	400	April 1	By Balacne b/d	3,500
April 2	To Sales Ledger		April 3	By Sales Ledger	
	Adjustment A/c	300		Adjustment A/c	
April 30	To " " (P,X,&Y)	3,250		(Sales)	700
	To " " (A, B, C)	3,750	April 30	By Sales Ledger	
	To " " R	2,000		Adjustment A/c	4,500
April 30	To Balance c/d		April 30	By Balance c/d	2,000
	(A, B &P)	1,000			
		10,700			10,700
May 1	To Balance b/d	2,000	May 1	By Balance b/d	1,000

क्रियात्मक टिप्पणियाँ—

(i) प्रारम्भिक शेष में निम्नलिखित देनदारियाँ शामिल हैं—

	₹
X	500
Y	2,000
P	1,000
	3,500

(ii) प्रारम्भिक नाम शेष में टी. से ₹ 400, अग्रिम के शामिल हैं।

(iii) अंतिम नाम शेष आर से ₹ 2,000, अग्रिम का प्रतिनिधित्व करता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(iv) अंतिम शेष ₹ 1,000 में निम्नलिखित देनदारियाँ शामिल हैं—

	₹
A	250
B	500
C	250
	1,000

उदाहरण (Illustration) **5**

एक व्यापारी की पुस्तकों से 1 जनवरी से 31 मार्च, 2008 तक की निम्नलिखित सूचनायें उपलब्ध हैं।

(1) कुल बिक्री राशि के ₹ 60,000 जिसमें पुराने उपस्कर की बिक्री हेतु ₹ 1,200 (पुस्तक मूल्य ₹ 3,500) शामिल हैं। कुल नगद बिक्री, कुल उधार बिक्री 80% से कम है।

(2) अवधि हेतु प्रारम्भिक देनदारों तथा उधार विक्रय का कुल का 60% की राशि देनदारों से नगद प्राप्त हुआ। देनदारों ने ₹ 2,600 का नगद बट्टा दिया था।

(3) 3 माह के दौरान कुल ₹ 6,000 के प्राप्य विपत्र लिखे गये जिसमें से ₹ 3,000 प्राप्य विपत्र पूर्तिकर्ताओं को बेचान कर दिये गये। इन बेचान किये गये प्राप्य विपत्रों में से एक ₹ 600 का प्राप्य विपत्र पक्षकार के दिवालिया होने के कारण [उसकी सम्पत्तियों से कुछ भी वसूल नहीं हुआ] भुगतान न होने पर अनादरित हो गया था।

(4) कुल क्रय ₹ 16,000, जिसका 10% नगद हेतु थे।

(5) ग्राहक से प्राप्त धनादेश ₹ 6,000 हेतु अनादरित हो गया, ₹ 500 की राशि वसूल नहीं है, पहले वर्ष में प्राप्त ₹ 2,500 अशोध्य ऋण अपलिखित हुए।

(6) 1 जनवरी 2008 पर ₹ 40,000 के विविध देनदार थे।

आपको सामान्य खाताबही में देनदार खाताबही समायोजन खाता दर्शाना आवश्यक है।

समाधान (Solution)

General Ledger

Debtor's Ledger Adjustment Account

Dr.					Cr.
		₹			₹
To	Balance b/d	40,000	By	General Ledger	
To	General Ledger			Adjustment A/c:	
	Adjustment a/c:			Collection (Cash	
	Sales	49,000		& Bank)	53,400
	Sundry Creaditors	600		Discount	2,600
	B/R Dishonoured			Bill Receivable	6,000
	Bank			Bad Debts	1,100
	Cheque dishonoured	6,000	By	Balance c/d	32,500
		95,600			95,600

© The Institute of Chartered Accountants of India

टिप्पणी—यदि उधार बिक्री सौ ₹ तथा नकद बिक्री बीस ₹ है तो कुल उधार बिक्री ₹ 58,800 की 5/6th यानि की, ₹ 49,000 होगी।

उदाहरण (Illustration) **6**

निम्नलिखित विवरण से, मार्च 2008 के माह के लिए मि. वासू के सामान्य खाताबही में प्रकट उपयुक्त समायोजन खाता तैयार कीजिये—

दिनांक	विवरण
1	मि. X से क्रय ₹ 2,000
2	मि. X को प्रारम्भिक अग्रिम को समायोजित करते हुए ₹ 1,600 चुकाये
3	फरवरी में क्रय के सम्बन्ध में मि. R को पूर्ण भुगतान में ₹ 1,000 चुकाये
13	मि. Y को अग्रिम भुगतान ₹ 3,000
14	मि. A से माल क्रय ₹ 4,000
25	मि. A को ₹ 500 मूल्य का माल वापस
26	A को देय शेष का निपटारा 10% के बट्टे पर किया
27	13th पर अग्रिम चुकता के विरुद्ध ₹ 2,500 का मि. Y से माल क्रय किया
28	₹ 2,000, 28 फरवरी 2008 पर चुकता मि. P से अग्रिम बैंक से प्राप्त
29	B से क्रय ₹ 2,000
30	₹ 750 Q से माल वापस किया, फरवरी में नगद के लिए माल वास्तविक क्रय किया था।

समाधान (Solution)

Creditors Ledger Adjustment Account

2008		₹	2008		₹
March 1	To Balance (X.P.)	2,400	March 1	By Balance (R) b/d:	1,000
March 31	To General Ledger Adjustment A/c (In Bought Ledger)		March 31	By G.L. Adjust A/c(In Bought Ledger)	
	Bank (X,R,Y & A)	8,750			
	Returns (A&Q)	1,250		Purchases	10,500
	Discount	350		Bank (Refund)	2,000
March 31	To Balance c/d (B)	2,000	March 31	By Balance c/d (Y,Q)	1,250
		14,750			14,750
April 1	To Balance b/d (Y, Q)	1,250	April 1	By Balacne b/d (B)	2,000

Working Notes—

(1) Purchases—

1.3.2008	X	2,000
14.3.2008	A	4,000
27.3.2008	Y	2,500
30.3.2008	B	2,000
		10,500

© The Institute of Chartered Accountants of India

(2) Payments—

2.3.2008	X	1,600
13.2.2008	R	1,000
13.2.2008	Y	3,000
26.3.2008	A ₹ 3,500 - 10%	3,150
		8,750

उदाहरण (Illustration) **7**

मि. शुक्ला एण्ड कम्पनी की पुस्तकों में सामान्य खाताबही में निम्नलिखित सूचनाओं से कुल देनदार खाता तैयार कीजिये–

डेबिट शेष 1.7.08 को ₹ 87,200, देनदार खाते में क्रेडिट शेष 1.7.08 को ₹ 600

31.12.08 पर अन्त में 6 माह के दौरान व्यवहार—

नगद विक्रय के ₹ 4,000 कुल विक्रय ₹ 94,000 में शामिल थे।

देनदारों से चैक द्वारा ₹ 60,000 भुगतान प्राप्त किया देनदारों से रोकड़ द्वारा ₹ 48,000 भुगतान प्राप्त किया। प्राप्य विपत्र द्वारा ₹ 26,000 भुगतान प्राप्त किया।

देनदारों से प्राप्त प्राप्य विपत्र ₹ 6,000 के लिए अनादरित हुआ तथा निकराई व्यय के ₹ 60 चुकाये, ग्राहक द्वारा प्राप्त चैक ₹ 800 के लिए अनादरित हुआ।

प्राप्य विपत्र से प्राप्ति तथा उपरोक्त में ₹ 26,000 में शामिल है, ₹ 5,000 का विपत्र पूर्तिकर्ता को बेचान किया।

अवधि के दौरान ₹ 1,000 के अशोध्य ऋण अपलिखित किये। शीघ्र भुगतान के लिए बट्टा दिया ₹ 700, 2007 में अशोध्य ऋण अपलिखित थे तथा अब ₹ 900 की राशि देनदारों से पुनः प्राप्त हुई।

भुगतान में देरी के लिए ब्याज डेबिट किये ₹ 1250, 31.12.08 पर, संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान बनाया ₹ 2100

देनदार खाता बही में तथा लेनदार खाताबही में भी मि. ट्रयल एण्ड कं. के खाते दर्शाइये। लेनदार खाताबही के शेष ₹ 900 था तथा समान राशि की देनदार खाते में हस्तान्तरित कर दिया। ग्राहक द्वारा ₹ 2760 का माल वापस कर दिया।

समाधान (Solution)

In The General Ledger of M/s. Shukla & Company

Dr. **Total Debtors Account** Cr.

Date	Particulars	₹	Date	Particulars	₹
1.7.2008	To Balacne b/f	87,200	1.7.2008	By Balance b/f	600
1.7.2008to	To Sales (₹ 94,000-	90,000	1.7.2008 to	By Bank	60,000
31.12.2008	₹ 4,000)		31.12.2008		
"	To Cash	600	"	By Cash	48,000
"	To Bills Receivable	6,000	"	By Bills Receivable	26,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

	(dishonoured)				
"	To Bank (Nothing Charges)	60	"	By Bad Debts	1,000
"	To Bank (Cheque dishonoured)	800	"	By Discount allowed	700
"	To Interest	1,250	"	By Total CreditorscA/c Transfer	900
			"	By Sales Return	2,760
			"	By Balance c/d	45,950
		1,85,910			1,85,910

टिप्पणी—(1) कुल देनदार खाते में प्रकट 2007 के अशोध्य ऋण 2008 में पुनः प्राप्त नहीं होंगे। यह लाभ-हानि खाते में क्रेडिट होना चाहिए।

(2) कुल देनदार खाते के साथ पूर्तिकर्ता को ₹ 5,000 का प्राप्य विपत्र बेचान नहीं किया गया क्योंकि बेचान के समय पर पूर्तिकर्ता खाता डेबिट है तथा प्राप्य विपत्र खाता क्रेडिट है।

उदाहरण (Illustration) **8**

31, मार्च 2008 वर्ष के अन्त के लिए Self. Ltd. की पुस्तकों से निम्नलिखित विवरण प्राप्त हुआ—

	₹		₹
नगद विक्रय	25,000	प्राप्य विपत्र अनादरित	25,00
उधार क्रय	2,80,000	विक्रय वापसी	8,500
देनदारों से प्राप्त	4,25,000	लेनदारों को चुकाया	1,62,000
प्राप्य विपत्र निकाला	20,000	बट्टा दिया	3,000
बट्टा प्राप्त	25,00	देनदार का चैक अनादरित	7,500
नगद क्रय	12,000		
देय विपत्र चुकाया	6,500	उधार विक्रय	4,90,000
डूबत ऋण पुनः प्राप्त	1,500	प्राप्य विपत्र संग्रहीत	10,000
प्राप्त विपत्र बैंक के	8,000	क्रय वापसी	3,700
साथ भुनाया		लेनदार से प्राप्य बिल	7,900
ग्राहक खाते के अधि देय	1,200	आपूर्तिकर्ता से अधिदेय वापस	600
पर ब्याज लगाया।	5,500	डूबत ऋण	1,000
बेचान प्राप्य विपत्र का		प्रारम्भिक शेष	
अनादरण (लिखाई व्यय 75)			
देय विपत्र स्वीकृत	16,000	देनदार	78,000
		लेनदार	85,000

आपसे अपेक्षा है कि कुल देनदार खाता तथा कुल लेनदार खाता बनाइये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

In The books of Self Ltd.

Total Debtors Account

	₹		₹
To Balance b/d	78,000	By Cash	4,25,000
To Bank (Cheque dishonoured)	7,500	By Discount Allowed	3,000
To B/R (Dishonoured)	2,500	By B/R	20,000
To Interest	1,200	By Return Inward	8,500
To Sales	4,90,000	By Bad Debts	1,000
To Sundry Creditors (endorsed bill dishonoured with noting charges)	5,575	By Balance c/d	1,27,275
	5,84,775		5,84,775

Total Creditors Account

	₹		₹
To Cash	1,62,000	By Balance b/d	85,000
To B/R (endorsed)	7,900	By Purchases	2,80,000
To Discount received	2,500	By Sundry Debtors A/c (endorsed B/R dishonoured with noting charges)	5,575
To Bills Payable	16,000	By Cash (over payments Refunded)	600
To Return outward	37,00		
To Balance c/d	1,79,075		
	3,71,175		3,71,175

टिप्पणी—कुल देनदार तथा कुल लेनदार खाते में, नगद विक्रय या क्रय से सम्बन्धित सौदे, प्राप्य या देय विपत्र का भुगतान तथा विपत्र का बेचान या बट्टा की प्रविष्टि नहीं होगी।

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश

(SUMMARY)

- स्वकीय संतुलन खाताबही प्रणाली खाताबही रखने की एक ऐसी प्रणाली को प्रभावित करती है। जिसमें खाताबही को उनके सौदों की प्रकृति के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
- अशुद्धियों को ढूंढने में लगने वाले समय तथा कठिनाइयों को घटा कर कम करने क्रम में, कभी-कभी खाताबही की स्वकीय संतुलन या विभागीय संतुलन की प्रणाली को विनियोजित किया जाता है।
- इस प्रणाली में सामान्यतः देनदार खाताबही, लेनदार खाताबही तथा मुख्य खाता बही (जो शेष खातों को सम्मिलित करती है) नाम की तीन खाताबही तैयार की जाती हैं।
- इस दशा में, प्रत्येक सहायक खाताबही में सामान्य खाताबही समायोजन खाता तैयार किया जाता है। सामान्य खाताबही में क्रय खाताबही समायोजन खाता (वास्तव में; कुल लेनदार खाता) तथा विक्रय खाता बही समायोजन खाता (वास्तव में, कुल देनदार खाता) होते हैं। ये खाते नियन्त्रण खातों के रूप में जाने जाते हैं।
- इस प्रणाली में यदि एक अशुद्धि का प्रभाव देनदारों तथा लेनदारों के खातों में उनके योग को प्रभावित किये बिना होता है, तो इस देनदारों या लेनदारों के खातों में स्वयं समायोजन द्वारा संशोधित किया जायेगा। इसलिए, यदि यह देनदारों या लेनदारों के योगों पर प्रभाव डालता है तो अतिरिक्त प्रविष्टि की जायेगी।

स्व-परीक्षा प्रश्न

(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Answer Type Questions)

1. स्वकीय संतुलन प्रणाली है एक—
   (अ) खाताबहियों का रखना
   (ब) तलपट तैयार करना
   (स) अन्तिम खाते तैयार करना
   (द) जर्नल प्रविष्टियों का लेखा करना
2. दैनिक क्रय पुस्तक का मासिक योग क्रय खाते के डेबिट में डाला जाता है—
   (अ) देनदार खाता बही
   (ब) लेनदार खाता बही
   (स) जनरल खाताबही
   (द) विक्रय खाताबही
3. स्वकीय संतुलन प्रविष्टि आवश्यक नहीं है—
   (अ) अपलिखित किये हुए अशोध्य ऋण की वसूली के लिये
   (ब) छूट देने के लिए
   (स) प्राप्य विपत्र के अनादरण के लिये
   (द) उपरोक्त में कोई नहीं

© The Institute of Chartered Accountants of India

4. स्वकीय संतुलन प्रणाली का मुख्य लाभ है इसे जल्दी तैयार करने में सुविधा होती है—
   (अ) केवल देनदार तथा लेनदार खाताबही
   (ब) अन्तिम खाते
   (स) बैंक समाधान विवरण
   (द) उपरोक्त में कोई नहीं
5. विभागीय संतुलन के अन्तर्गत खाता बही सामान्यतः किसमें शेषित होता है—
   (अ) देनदार खाताबही
   (ब) लेनदार खाताबही
   (स) सामान्य खाताबही
   (द) बिक्री खाता बही
6. सामान्य खाता बही समायोजित लेखांकन में खोला जाता है—
   (अ) क्रय खाताबही
   (ब) विक्रय खाताबही
   (स) सामान्य खाताबही
   (द) विक्रय खाताबही तथा क्रय खाताबही दोनों
7. संदेहपूर्ण देनदारियों के संचय में खोला जाता है—
   (अ) देनदार खाताबही में
   (ब) विक्रय खाताबही में
   (स) सामान्य खाताबही में
   (द) विक्रय खाताबही तथा क्रय खाताबही दोनों
8. विक्रय खाताबही समायोजन खाता खोला जाता है इसमें—
   (अ) विक्रय खाताबही
   (ब) क्रय खाताबही
   (स) सामान्य खाताबही
   (द) क्रय खाताबही में ठीक वैसे ही विक्रय खाताबही में

[**उत्तर** (Answer)—1. (अ), 2. (स), 3. (अ), 4. (ब), 5. (स), 6. (द), 7. (स), 8. (स)]

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

9. स्वकीय-संतुलन प्रणाली का क्या अर्थ है ? संक्षिप्त व्याख्या कीजिये।
10. स्वकीय संतुलन प्रणाली तथा विभागीय संतुलन प्रणाली में भेद बताइये।
11. खाताबहियों के नामों की सूची जो स्वकीय संतुलन प्रणाली के अन्तर्गत रखना आवश्यक है।
12. स्वकीय संतुलन प्रणाली के लाभों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

13. विभागीय संतुलन प्रणाली के अन्तर्गत अशुद्धियों के संशोधन की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

14. स्वकीय संतुलन प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न खाताबहियों के रखने की व्याख्या कीजिये।

IV. क्रियात्मक समस्याएँ (Practical Problems)

15. फर्म की पुस्तकों से ली गयीं निम्नलिखित संख्यों से कुल देनदार खाता तैयार कीजियेः

	₹
प्रारम्भिक शेष (1.2.2008)	19,300
माल के दौरान व्यवहार—	
बिक्री [₹ 5,000 नगद बिक्री सहित]	59,200
रोकड़ प्राप्त	46,300
बट्टा दिया	1,500
अपलिखित अशोध्य ऋण	400
प्राप्त स्वीकृतियाँ	800
अनादरित स्वीकृतियाँ	300
क्रय बही से हस्तान्तरण	1,000

T की राशि का X में गलत नाम (डेबिट) हस्तान्तरण ₹ 175, 28.02.08 को यहाँ कुल बिक्री खाताबही का जमा (क्रेडिट) शेष ₹ 560 था।

16. एक फर्म दो बिक्री खाताबही रखती है, उत्तर एवं दक्षिण मि. स्वामी जिन्होंने फर्म से ₹ 2,800 उधार लिये थे जो दिल्ली से जा रहे तथा उनका खाता उत्तर बिक्री खाताबही से दक्षिण खाताबही को हस्तान्तरित किया गया था यह मानते हुए कि स्वकीय संतुलन संचालन में है इस हस्तान्तरण को अभिलेखित करने की पंजी प्रविष्टि दें।

17. 31.3.08 पर, समाप्त होने वाले वर्ष के लिये Y लि. की पुस्तकों से ली गयी निम्नलिखित सूचनाओं से सामान्य खाताबही में बिक्री खाताबही समायोजन खाता तैयार कीजिये।

1, अप्रैल 2008—		₹
प्रारम्भिक शेषः		
बिक्री खाताबही	(डेबिट)	45,256
	(क्रेडिट)	156
अशोध्य एवं संदिग्ध ऋणों हेतु प्रावधान		5,000
अवधि के दौरान बिक्रीः		
नगद		15,200
उधार		1,25,656
ग्राहकों से प्राप्त राशियाँ		1,56,215
ग्राहकों द्वारा स्वीकृत विपत्र		1,250
अनादरित धनादेश (चैक)		1,270

© The Institute of Chartered Accountants of India

अशोध्य ऋण अपलिखित	256
अधिदेय खातों पर ब्याज	82
नगद बट्टा दिया	1,527
पूर्व में अपलिखित अशोध्य ऋण वापस प्राप्त किया	465
ग्राहकों से वापसी	726

₹ 150 बिक्री मूल्य के माल ग्राहकों द्वारा वापस किये गये थे जिन्हें नया माल निर्गमित किया गया। वापस किये गये माल हेतु क्रेडिट नोट निर्गमित किया गया था, तथा चूक के कारण नये माल के निर्गमित हेतु बिक्री बीजक तैयार नहीं किया गया।

18. अदिति सर्जीकल की पुस्तकों में अन्तिम खाते तैयार करने से पूर्व परन्तु उचन्त खाता खोलने के पश्चात् निम्नलिखित अशुद्धियाँ पायी गयीं—

(1) शर्मा द्वारा वापस किया गया ₹ 1,000 मूल्य का माल दैनिक विक्रय बही में प्रविष्टि किया गया तथा उसके खाते में जमा (क्रेडिट) खतौनी की गयी।

(2) ₹ 1,500 की एक राशि बिक्री वापसी पुस्तक में प्रविष्ट की गयी जिसे विनोद, जिसने माल वापस किया था, के डेबिट में खतौनी की गयी।

(3) विनय को की गयी ₹ 2,000 की एक बिक्री दैनिक विक्रय बही में सही प्रविष्टि की गयी थी पर गलती से विनीत (एक ग्राहक) को ₹ 200 से डेबिट में खाता दिया गया।

(4) लगभग ₹450 के अशोध्य ऋणों की कोई प्रविष्टि नहीं की गयी सिवाय विक्रय खाता बही में देनदारों के व्यक्तिगत खातों के अपलिखित करने के और

(5) सितम्बर माह के रोकड़ पुस्तक में देय बट्टे स्तम्भ का योग ₹ 2,500 की राशि नहीं खताई गयी।

पंजी प्रविष्टि कीजिये यदि पुस्तकें स्वकीय संतुलन प्रणाली के अन्तर्गत रखी जाती हैं।

19. देनदार तथा साथ ही लेनदार खाताबही में निम्नलिखित सूचनाओं से सामान्य खाताबही खाते तैयार करें।

विवरण	नाम	जमा
	₹	₹
1.10.007 पर शेष		
देनदार खाताबही	50,000	25,000
लेनदार खाताबही	2,300	42,800
30.09.2008 वर्ष के अन्त के लिये आंकड़ें हैं—		
ग्राहक से रोकड़ प्राप्त		1,50,800
उनको दिया गया बट्टा एवं छूट		3,250
अशोध्य ऋण अपलिखित		4,000
देनदार खाताबही से लेनदार खाताबही को ग्राहक खाते के निपटारे हेतु हस्तान्तरण		3,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

लेनदार को भुगतान	1,05,000
उनके द्वारा बट्टा दिया	2,500
ग्राहक को भुगतान	250
उधार क्रय	1,08,000
उधार विक्रय	1,95,000
नगद क्रय	20,000
नगद विक्रय	35,000
विक्रय वापसी	3,600
प्राप्य विपत्र प्राप्त	10,500
देय विपत्र देय	9,800
प्राप्य विपत्र अनादरित	1,500

20. निम्नलिखित विवरण से विक्रय खाताबही नियन्त्रण खाता तथा क्रय खाताबही नियन्त्रण खाता तैयार कीजिए—

	विक्रय खाताबही	क्रय खाता बही
	₹	₹
1.1.2008 पर डेबिड शेष	1,50,000	1,000
1.1.2008 पर क्रेडिट शेष	200	1,25,000
उधार विक्रय और क्रय	4,00,000	3,80,000
प्राप्त या चुकाया धनादेश (चैक)	4,50,000	3,50,000
लेनदार को अग्रिम चुकाया	—	2,000
प्राप्य विपत्र प्राप्त और देय विपत्र स्वीकृत	50,000	50,000
प्राप्त और चुकता बट्टा	5,000	3,000
वापसी	10,000	5,000
क्रय खाताबही से विक्रय खाताबही में हस्तान्तरण	10,000	10,000
अशोध्य ऋण	2,000	—
बट्टा हेतु संचय	10,000	5,000
अनादरित प्राप्य विपत्र और देय विपत्र	5,000	50,000
30.6.2008 पर डेबिट शेष	30,000	—
31.6.2008 पर क्रेडिट शेष	?	72,000

21. मि. X की पुस्तकों से निम्नलिखित व्यवहारों निकाला गया है। आप से अपेक्षा है कि 31.03.2008 बिक्री खाता बही समायोजन खाता तैयार करें।

	₹
1.03.2008 पर देनदारों के शेष	50,000
अवधि के दौरान के व्यवहार थे—	
बिक्री (₹ 20,000 नगद बिक्री सहित)	1,28,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

देनदारों से प्राप्त रोकड़	90,000
देनदारों को घोषित बट्टा	500
देनदारों से स्वीकृतियाँ प्राप्त	8,000
देनदारों से वापसी	6,000
प्राप्त विपत्र अनादरण	1,500
अपलिखित अशोध्य ऋण (₹ 1,000 की अशोध्य ऋण वापसी को घटाने के पश्चात्)	4,000
ग्राहकों को नामे (डेबिट) किये गये विधि प्रभार	600
क्रय खाताबही से हस्तान्तरण	300

© The Institute of Chartered Accountants of India

9

गैर-लाभकारी संस्थाओं के वित्तीय विवरण
(FINANCIAL STATEMENTS OF NOT-FOR-PROFIT ORGANISATIONS)

भाग 1 : गैर व्यावसायी संस्थाओं के वित्तीय विवरण
(UNIT–1 : FINANCIAL STATEMENTS OF NON-TRADING ORGANISATIONS)

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जाएंगे—

- **प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा आय एवं व्यय खाते के अर्थ समझने में तथा दोनों खातों के बीच के अन्तर को देखने में।**
- **प्राप्ति एवं भुगतान खाते को बनाने की तकनीक सीखने में।**
- **आय के मुख्य स्रोतों को पहचानने में तथा प्राप्ति एवं भुगतान खाते से आय एवं व्यय खाता बनाने की तकनीक सीखने में।**
- **आर्थिक चिट्ठे को बनाने की तकनीक सीखने में।**

1.1 परिचय (Introduction)

एक गैर-लाभकारी संस्था एक कानूनी तथा लेखा इकाई है जो कि पूर्ण रूप से लाभ हेतु संचालित है, बजाय एकाकी स्वामित्व या साझेदारों के समूह या अंशधारियों के लाभ के। गैर-लाभकारी संस्थाएं, जैसे कि—सार्वजनिक अस्पतालों, सार्वजनिक शिक्षा संस्थानों, क्लब (Clubs) इत्यादि, द्वारा अवधिगत क्षमता को दर्शाने हेतु पारम्परिक रूप से प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा आय एवं व्यय खाता और अवधि के अन्त पर वित्तीय स्थिति को दर्शाने हेतु आर्थिक चिट्ठा तैयार किया जाता है। इस इकाई में हम गैर-लाभकारी (गैर-व्यावसायी) संस्थाओं के प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा आय एवं व्यय खाता और आर्थिक चिट्ठा तैयार करने की तकनीक पर चर्चा करेंगे। इसके साथ ही, हम प्राप्ति एवं भुगतान खाते से आय एवं व्यय खाता तैयार करने की तकनीक पर उदाहरण द्वारा चर्चा करेंगे। यह उल्लेखनीय है कि आय एवं व्यय खाता लाभगत संस्थाओं के लाभ एवं हानि खाते के समान ही है। आय एवं व्यय खाते की दशा

© The Institute of Chartered Accountants of India

में, व्ययों पर आयों के आधिक्य को अधिशेष उपचारित किया जाता है। गैर-लाभकारी संस्थाओं में, कुल नकद प्राप्तियों और कुल नकद भुगतानों को प्राप्ति एवं भुगतान खाते के माध्यम से दर्शाया जाता है।

1.2. प्राप्ति एवं भुगतान खाते की प्रकृति (Nature of Receipts and Payments Account)

एक प्राप्ति एवं भुगतान खाता रोकड़ पुस्तक (बही) का सारांश है। यह गैर-लाभकारी संस्थाओं जैसे कि, अस्पतालों, क्लब, समितियों आदि के द्वारा अपने कार्यों के परिणामों के अवधिगत प्रदर्शन हेतु अपनाये जाने वाले खाते का एक मौलिक प्रारूप है। इसमें अवधि के अन्त एवं प्रारम्भ के रोकड़ शेषों के साथ ही एक निश्चित अवधि के रोकड़ प्राप्तियों एवं भुगतानों के वर्गीकृत सारांश भी होते हैं। प्राप्तियों की प्रविष्टियाँ बाएँ हाथ पक्ष पर एवं भुगतानों की प्रविष्टियाँ दाएँ हाथ पक्ष पर होती हैं, यानी कि, उन्हीं समान पक्षों में जैसे कि रोकड़ पुस्तक में प्रदर्शित होते हैं।

लक्षण (Features)—

- यह रोकड़ एवं अधिकोष (बैंक) व्यवहारों (जैसे कि रोकड़ पुस्तक) का सारांश है, सभी प्राप्तियाँ (पूँजीगत या आयगत) को विकलन (Debit) तथा समान रूप से सभी भुगतानों (पूँजीगत या आयगत) को समाकलन (Credit) किया जाता है।
- यह रोकड़ एवं अधिकोष के प्रारम्भिक शेषों के साथ शुरू होता है तथा साथ ही उनके अन्तिम शेषों के साथ समाप्त होता है।
- यह खाता सामान्यतः दोहरी लेखा प्रणाली का हिस्सा नहीं है।
- इसमें सभी रोकड़ एवं अधिकोष प्राप्तियाँ एवं भुगतान शामिल होते हैं, चाहे ये सभी वर्तमान, भूत या भविष्य से सम्बन्धित हों।
- इस खाते से किसी लेखांकन अवधि के अधिशेष या कमी को ज्ञात नहीं किया जा सकता, यह सभी गैर-रोकड़ मदों को बहिष्कृत करने के बाद सिर्फ रोकड़ स्थिति दर्शाता हैं—

उदाहरण (Illustration)

31 दिसम्बर, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए स्वराज क्लब की प्राप्तियाँ एवं भुगतान हैं—

प्रवेश शुल्क ₹ 300; सदस्यता शुल्क ₹ 3,000; क्लब बैठक (Pavilion) हेतु दान ₹ 10,000, आहार सामग्री की बिक्री ₹ 1,200; वेतन एवं मजदूरी ₹ 1,200, आहार सामग्री का क्रय ₹ 800; क्लब बैठक (Pavilion) का निर्माण ₹ 11,000; सामान्य व्यय ₹ 600; किराया एवं कर ₹ 400; अधिकोष प्रभार ₹ 160.

हस्तस्थ रोकड़—जनवरी 1st ₹ 200; दिसम्बर 31st ₹ 350

अधिकोष में रोकड़—जनवरी 1st ₹ 400; दिसम्बर 31st ₹ 590

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

Swaraj Club
Receipts and Payments Accounts
for the year ended 31st December, 2008

Receipts	₹	Payments	₹
To Cash in hand b/d	200	By Salaries and Wages	1,200
To Cash with bank b/d	400	By Purchase of Foodstuff	800
To Entrance Fees	300	By Club Pavilion	
To Membership Fees	3,000	(Expenditure on its construction)	11,000
To Donation of Account of Club Pavilion	10,000	By General Expenses	600
To Sales of foodstuff	1,200	By Rent and Taxes	400
		By Bank Charges	160
		By Cash in hand c/d	350
		By Cash in bank c/d	590
	15,100		15,100

1.2.1. प्राप्ति एवं भुगतान खाते की सीमाएँ (Limitations of Receipts and Payments Account)—उपरोक्त खाते के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वर्ष के अन्त में रोकड़ तथा अधिकोष शेष में उनकी प्रारम्भ की तुलना में जो वृद्धि है वह वर्ष के दौरान का अधिशेष रहा है, क्योंकि इसमें पवेलियन के निर्माण की लागत को सम्मिलित किया गया है, जो प्राप्त दान, अदत्त चन्दे तथा अग्रिम रूप से प्राप्त चंदे की राशि से अधिक हो सकती है। साधारणतया किसी के लिए भी यह जानना आवश्यक है कि क्या संस्था की चालू वर्ष की आय चालू वर्ष के व्ययों को पूरा करने के लिए पर्याप्त है। चूंकि प्राप्ति एवं भुगतान खाते में सभी प्रकार की या सभी अवधियों की मदों को शामिल किया जाता है अतः यह उपर्युक्त उद्देश्य को पूरा नहीं करता। इन कमियों के कारण प्राप्ति एवं भुगतान खाते तैयार करने की तब तक सलाह नहीं दी जाती जब तक संगठन की गतिविधियों के परिणाम जो दिखाए जाने हैं, वे सरल एवं सामान्य न हों। एक अवधि से दूसरी अवधि तक रोकड़ शेष को छोड़कर उसके पास कोई सम्पत्ति या कोई दायित्व नहीं हो।

1.3 आय एवं व्यय खाता (Income and Expenditure Account)

आय और व्यय खाते व्यापारिक संस्थाओं के लाभ और हानि खाते के बराबर हैं। यह खाता व्यापक रूप से गैर-लाभकारी संस्थाओं द्वारा बनाया जाता है तथा उपार्जन सिद्धान्त के आधार पर तैयार किया जाता है। इसमें केवल लेखा अवधि से सम्बन्धित आगम प्रकृति की मदें ही आती हैं। अतः खाते की रचना आय तथा व्यय की अदत्त मदों के सम्बद्ध खातों में समायोजन तथा अग्रिम रूप से प्राप्त राशियों को हटाकर उनको आय-व्यय खाते में शामिल करने से पूर्व की जाती है। जहां तक इस खाते में और लाभ-हानि खाते में समानता का प्रश्न है, यह एक गैर-लाभकारी संस्था के सम्बन्ध में ठीक वही काम करता है जो कि एक व्यावसायिक फर्म की दशा में लाभ-हानि खाता कार्य करता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

विशेषताएं (Features)—

- यह आगम खाता है, जो वित्तीय अवधि के अन्त में अधिशेष तथा घाटे को खोजने के लिए बनाया जाता है।
- यह मिलान व्यय के द्वारा बनाया जाता है, अवधि के सम्बन्ध में जो कि आय के खिलाफ है।
- नकद तथा गैर नकद, जैसे मूल्यह्रास के रूप में, को लिया जाता है।
- सभी पूँजीगत व्यय तथा आय अपवर्जित होती है।
- केवल चालू वर्ष की आय व व्यय को लिया जाता है।

1.3.1 आय के मुख्य साधन (Main Sources of Income)—ये चन्दे साधारण दान सदस्यता शुल्क या प्रवेश शुल्क (यदि यह राशि सामान्य है अथवा समिति के उपनियमों के अनुसार ऐसी व्यवस्था है) स्थानीय इकाईयों से सतत अनुदान तथा निवेशों से आय आदि है। किन्हीं विशेष क्रियाओं के लिए एकत्र की गयी राशि, जैसे मैच की टिकटों की बिक्री को ऐसी क्रियाओं के व्यय से घटाकर शुद्ध राशि ही आय-व्यय खाते में दिखाई जाती है। पूँजीगत प्रकृति की कोई प्राप्ति आय के रूप में नहीं दिखाई जायेगी वरन उक्त राशि पूँजी कोष या विशेष उद्देश्य कोष में क्रेडिट की जायेगी, जैसे—भवन कोष अथवा यदि धनराशि स्थायी सम्पत्ति के विक्रय से प्राप्त हुई है तो उसे सम्पत्ति खाते में क्रेडिट किया जायेगा।

उदाहरण (Illustration)

अस्पताल—दवाएं तथा परीक्षणों एवं अनुसंधानों की लागत।

क्रीड़ा क्लब—खेल सामग्री, टूर्नामेंट व्यय आदि।

ड्रामा क्लब—नाटक मंचन के व्यय, हॉल का किराया कलाकारों को भुगतान।

शिक्षण समितियाँ—छात्रवृत्ति देना, गोष्ठियाँ आयोजित करना आदि।

पुस्तकालय समितियाँ समाचार-पत्र तथा पत्रिकाएँ।

स्थायी सम्पति को क्रय करने के लिए किया गया कोई भी व्यय पूँजीकृत किया जायेगा। यद्यपि वार्षिक ह्रास की राशि आगम व्यय में डेबिट की जायेगी।

यह भी उल्लेख किया जाना आवश्यक है कि विभिन्न खातों को समावेशित करने के पश्चात् जैसा कि उचित समझा जाए तथा सभी आगम खातों को एवं आय तथा व्यय खातों को अन्तरित करके बन्द करने के पश्चात भी अनेक शेष बचे रह जाते हैं, उनको चिट्ठे में शामिल किया जाता है। अतः चिट्ठा इस खाते का पूरक है। यदि एक नियमित तलपट उपलब्ध हो तो आय-व्यय खाते तथा चिट्ठे की रचना अन्तिम खातों के रूप में ही की जाती है।

1.3.2 प्राप्ति एवं भुगतान खाते तथा आय एवं व्यय खाते में अन्तर (Distinction between Receipts and Payments Account and Income and Expenditure Account)—गैर-लाभकारी संस्थाएँ, जैसे—सार्वजनिक अस्पताल, सार्वजनिक शिक्षण संस्थान, क्लब आदि परम्परागत रूप से एक निश्चित लेखांकन अवधि की अवधिगत क्षमता को दर्शाने हेतु प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा आय एवं व्यय खाता तैयार करते हैं।

प्राप्ति एवं भुगतान खाता अवधि के अन्त एवं प्रारम्भ में रोकड़ शेषों के साथ ही एक निश्चित अवधि के रोकड़ प्राप्तियों एवं भुगतानों के वर्गीकृत सारांश के प्रदर्शन हेतु अपनाए जाने वाले खाते का एक मौलिक प्रारूप है। प्राप्तियों की प्रविष्टियाँ बाएँ हाथ पक्ष पर तथा भुगतानों की प्रविष्टियाँ दाएँ हाथ पक्ष पर होती हैं, यानी कि, उन्हीं सामान पक्षों में जैसे कि रोकड़ पुस्तक में प्रदर्शित होते हैं। इस खाते में सभी प्राप्तियाँ एवं भुगतान चाहे वह आयगत या पूँजीगत प्रकृति के हो, शामिल होते हैं। अन्त में इस खाते का

© The Institute of Chartered Accountants of India

शेष रोकड़ प्राप्तियों एवं चुकताओं की राशियों के मध्य के अन्तर को प्रस्तुत करता है। यदि वह हस्तस्थ तथा बैंक रोकड़ द्वारा तैयार किया जाता है तो यह हमेशा डेबिट में होगा।

आय एवं व्यय खाता लाभ एवं हानि खाते के सदृश है तथा गैर-लाभकारी संस्थानों के लिए वही कार्य करते हैं जो कि एक फर्म, व्यवसाय या व्यापार को चलाने के लिए पूर्वदर्शित खाते में करते थे। आय तथा व्यय खाता लाभ तथा हानि खाते की तरह ही बनाया जाता है। आगम प्रकृति के व्यय नाम (डेबिट) पक्ष में दर्शाये जाते हैं तथा आगम प्रकृति के आय एवं लाभ जमा (क्रेडिट) पक्ष में दर्शाये जाते हैं। आय तथा व्यय खाता सम्बन्धित अवधि के आय-व्यय की सभी मदों को शामिल करता है, चाहे वे प्राप्त या चुकता हो चुके हों या फिर उनकी वसूली या भुगतान देय रही हो। पूँजीगत प्राप्तियों, आय के पूर्व भुगतानों तथा पूँजीगत व्ययों, पूर्वदत्त व्ययों को छोड़ दिया जाता है। यह किसी प्रारम्भिक शेष के साथ आरम्भ नहीं होता है। इस खाते का अन्तिम शेष सिर्फ 'आयों का व्ययों पर आधिक्य' या प्रतिकूल का प्रतिनिधित्व करता है।

1.4 प्राप्ति एवं भुगतान खाते से आय एवं व्यय खाता बनाना (Preparation of Income and Expenditure Account from Receipts and Payments Account)

बहुधा परीक्षाओं में आने वाले प्रश्नों में अदत्त व्ययों, उपार्जित आयों आदि के सन्दर्भ में समायोजनों के पश्चात् प्राप्ति एवं भुगतान खाते तथा आय एवं व्यय खाता तथा चिट्ठा बनाने के लिए किया जाता है। ऐसी स्थिति में चिट्ठे की रचना भी अति आवश्यक हो जाती है, क्योंकि प्रत्येक आय एवं व्यय खाते के साथ चिट्ठा जुड़ जाता है। इस सम्बन्ध में अपनाई जाने वाली प्रक्रिया निम्न प्रकार दी जा रही है—

(i) संचित कोष या प्रारम्भिक शेष ज्ञात करे या संस्था का पूँजी कोष निकालें, यह अवधि के प्रारम्भ में सम्पत्तियों के कुल योग का दायित्वों से अधिक होगा।

(ii) आय तथा व्ययों की विभिन्ना मदों के लिए लेजर खाते खोलें (जैसे चन्दा, किराया, मुद्रण, खेल सामग्री का क्रय आदि) जिसमें अवधि के प्रारम्भ तथा अन्त की उदत्त राशियाँ समायोजित की जाएंगी। इनमें अवधि के अन्त में उपार्जित या विगत अवधि की किसी भी राशि को लिखें। इस प्रकार खातों का शेष अवधि से सम्बन्धित आय तथा व्ययों की राशियों को प्रस्तुत करेगा। इन्हें आय तथा व्यय खाते में आन्तरित किया जाना चाहिए।

(iii) प्राप्ति एवं भुगतान खाते के डेबिट से आय की अन्य मदों को आय-व्यय खाते के क्रेडिट में खतोनी करें, जिनमें उपार्जित अथवा अदत्त राशियों को समायोजित किया जाना है। इस प्रकार, उन व्यय की मदों को सीधे ही आय-व्यय खाते के डेबिट में खतोनी कर दें जिसमें कोई समायोजन नहीं होना है।

(iv) आय एवं व्यय खाते का शेष संचिति कोष में आन्तरित कर दें।

(v) प्राप्ति एवं भुगतान खाते से पूंजीगत प्रकृति की प्राप्ति तथा भुगतान की मदों की उपयुक्त सम्पत्ति तथा दायित्व खातों में खतोनी कर दें ताकि वे चिट्ठे में शामिल हो सकें। यदि कोई सम्पत्ति पूर्ण अथवा आंशिक रूप से बेची गयी है तो कोई भी पूँजीगत लाभ/हानि आय व्यय खाते में क्रेडिट/डेबिट की जाती है और उसके परिणाम अन्य शेष संचिति निधि खाते को अन्तरित किए जाते हैं।

(vi) आय व्यय खाते में अन्तरण के पश्चात् बचे विभिन्न शेषों को चिट्ठे में लेजर हुए चिट्ठा तैयार करें।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **2**

2008 वर्ष में 42,000 ₹ चंदा नकद प्राप्त किया। इसमें 2007 में प्राप्त 1,600 ₹ तथा 2009 में प्राप्त 600 ₹ शामिल है तथा 2008 में प्राप्त 3,000 ₹ भी इसमें शामिल हैं। यह रकम आय तथा व्यय खाते के चन्दे खाते में 42,800 ₹ धनी किया गया। सम्बन्धित खाते बनाइए।

समाधान (Solution)

			₹
Amount received			42,000
Add : Outstanding on 31st Dec., 2008			3,000
			45,000
Less : Received on account of	2007	1,600	
	2009	600	2,200
			42,800

The various accounts will appear as under :

Subscription Outstanding Account

2008		₹	2008		₹
Jan. 1	To Balance b/d (transfer)	1,600	Dec. 31	By Subscription A/c	1,600
Dec. 31	To Subscription A/c	3,000	Dec. 31	By Balance c/d	3,000
		4,600			4,600
2009					
Jan. 1	To Balance b/d	3,000			

Subscription Account

2008		₹	2008		₹
Dec. 31	To Subscription Outstanding A/c (transfer)	1,600	Dec. 31	By Cash A/c	42,000
			Dec. 31	By Subscription Outstanding A/c	3,000
Dec. 31	To Subscription Received in Advance A/c	600			
Dec. 31	To Income and Expenditure A/c (transfer)	42,800			———
		45,000			45,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Subscription Received in Advance Account

2008		₹	2008		₹
Dec. 31	To Balance c/d	600	Dec. 31	By Subscription A/c	600
2009					
			Jan. 1	By Balance b/d	600

अदत्त चन्दे ₹ 3,000 तथा अग्रिम में प्राप्त चन्दा ₹ 600 क्रमशः आर्थिक चिट्ठे के सम्पत्ति एवं दायित्व पक्ष में दर्शाये गये हैं।

उदाहरण (Illustration) **3**

2008 की अवधि में दिया गया वेतन 23,000 ₹ है। निम्नलिखित आगे की जानकारी इस प्रकार है—

	₹
वेतन बाकी 2007 दिसम्बर 31	1,400
पूर्वदत्त वेतन 2007 दिसम्बर 31	400
वेतन बाकी 2008 दिसम्बर 31	1,800
पूर्वदत्त वेतन 2008 दिसम्बर 31	600

वेतन के सम्बन्ध में आय तथा व्यय खाते में डेबिट किए जाने वाली राशि ज्ञात कीजिए।

समाधान (Solution)

Salaries Account

2008		₹	2008		₹
Jan. 1	To Prepaid Salaries A/c	400	Jan. 1	By Salaries Outstanding A/c	1,400
Dec. 31	To Cash	23,000	Dec. 31	By Salaries Prepaid A/c	600
	To Salaries Outstanding A/c	1,800		By Transfer to Income & Expenditure A/c	23,200
		25,200			25,200

Salaries Outstanding Account

2008		₹	2008		₹
Jan. 1	To Salaries A/c	1,400	Jan. 1	By Balance b/d	1,400
Dec. 31	To Balance	1,800	Dec. 31	By Salaries A/c	1,800
		3,200			3,200
			2009		
			Jan 1	By Balance b/d	1,800

© The Institute of Chartered Accountants of India

Salaries Prepaid Account

2008		₹	2008		₹
Jan. 1	To Balance b/d	400	Jan. 1	By Salaries A/c	400
Dec. 31	To Salaries A/c	600		(transfer)	
			Dec. 31	By Balance c/d	600
		1,000			1,000
2009					
Jan. 1	To Balance b/d	600			

1.5 आर्थिक चिट्ठा (Balance Sheet)

एक आर्थिक चिट्ठा दी गयी तिथि पर किसी लेखांकन इकाई की सम्पत्ति एवं दायित्वों का विवरण है। सामान्यतः यह लेखांकन अवधि की समाप्ति पर आय तथा व्यय खाते बनाने के बाद बनाया जाता है। यह छूटे हुए खाताबही के शेष का वर्गीकृत सारांश है। बाद में सभी आगम मदों को आय तथा व्यय खाते में स्थानान्तरित करके बन्द किया जाता है। गैर-लाभकारी संस्थाओं में कुल बाहरी दायित्वों के ऊपर कुल संपत्तियों की अधिकता को पूँजी कोष के नाम से जाना जाता है। पूँजी कोष, सदस्यों द्वारा किए गये अंशदान को प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन अगर सदस्य किसी भी राशि का अंशदान नहीं करते हैं, तो एकत्रित कोष नाम होना चाहिए। आय एवं व्यय खातों द्वारा वर्ष के क्रियान्वयन के रूप में यदि कोई अधिशेष या कमी प्रकट की जाती है, तो इसे पूर्व अवधि द्वारा लाए गये पूँजी/एकत्रित कोष में जोड़ा या घटाया जायेगा।

1.6 कुछ विशेष मदों के लिए लेखांकन व्यवहार (Accounting Treatment of Some Special Items)

1.6.1. दान (Donation)—कुछ आगम अथवा पूंजीगत व्ययों का भुगतान करने के लिए एकत्रित किए गए दानों को आय एवं व्यय खाते में क्रेडिट किया जाता है, लेकिन पूंजीगत व्ययों के लिए एकत्रित दानों को यदि उनके लिए दानदाताओं ने विशिष्ट इच्छा प्रकट की है तो उन्हें विशेष कोष में क्रेडिट किया जाता है और उपर्युक्त खातों के न होने पर पूँजी कोष खाते में क्रेडिट किया जाता है। यदि विशेष कोष से निवेश खरीदे जाते हैं या कोई सम्पत्ति प्राप्त की जाती है, तो उन्हें पृथक रूप से दिखाया जाता है। निवेशों या दान से प्राप्त किसी भी आय (जो किसी विशेष कारण से संग्रहित की जाती है) को क्रेडिट किया जाता है तथा इस कोष से किए गए किसी भी व्यय, जो किसी विशेष कारण से सम्बन्धित है, को इस खाते में क्रेडिट किया जाता है। इसे किसी भी व्यय के खाते आय एवं व्यय खाते पर प्रभारित नहीं किया जाता। कोष शब्द निश्चित रूप से राशियों का बोध कराता है जो किसी उद्देश्य विशेष के लिए एकत्रित करके विनियोजित की गयी हैं (जैसे—छात्रवृत्ति कोष या पुरस्कार कोष आदि। अन्य स्थितियों में, जब एकत्रित धन प्रतिभूतियों में विनियोजित नहीं किया जाता था, संस्था की सम्पत्तियों में नहीं लगाया जाता तो 'खाता' शब्द अधिक उपयुक्त रहता है (जैसे—भवन खाता, क्रीड़ा प्रतियोगिता) खाता आदि।

एक दानदाता कभी-कभी रोकड़ देने के स्थान पर किसी प्रतिभूति को या किसी तत्परता से वसूल होने वाली सम्पत्ति को हस्तान्तरित कर सकता है। ऐसी दशा में मूल्यांकन पर सम्पत्ति का मूल्य, कोष में उस राशि से क्रेडिट होना चाहिए जो राशि दान के रूप में प्राप्त हुई है। बम्बई सार्वजनिक न्याय नियम 1951 (संशोधन अधीन) अपेक्षा करते थे कि ऐसी राशियाँ प्रन्यास के आय एवं व्यय खाते में शामिल की जानी चाहिए। यदि ऐसा किया जाता है तो ऐसी राशि आय व्यय खाते के डेबिट भाग में दिखाकर विशेष कोष को अन्तरित की जानी चाहिए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

1.6.2 प्रवेश शुल्क (Entrance and Admission Fees)—ऐसे शुल्क जो किसी क्लब, समिति में प्रवेश पर सदस्यों द्वारा देय होते हैं, सामान्यतः पूँजी कोष में क्रेडिट किए जाते हैं। ऐसा इसलिए किया जाता है, क्योंकि संस्था का इसके सदस्यों के प्रति कोई विशेष दायित्व उत्पन्न नहीं होता।

फिर भी, जहाँ प्रवेश सम्बन्धी व्ययों के आवरण में प्राप्तियों की राशि छोटी हो, या समिति के नियमों में प्रावधान हों कि इस शुल्क को समिति की आय में उपचारित किया जा सकता है, इस रकम को आय एवं व्यय खाते में भी शामिल किया जा सकता है।

1.6.3 चन्दा (Subscription)—चन्दे आय होने के कारण, अवधि के दौरान विभाजित किए जाने चाहिए। इस महत्वपूर्ण लेखांकन सिद्धान्त के सम्बन्ध में परीक्षार्थियों के ज्ञान को जाँचने के लिए परीक्षाओं में प्रश्न बहुधा इस प्रकार रखे जाते हैं, जिसमें समिति द्वारा वर्ष के दौरान वसूल हुए चन्दे की राशियाँ तथा वर्ष के प्रारम्भ में और अन्त में अदत्त रहे चन्दे दिए जाते हैं। यदि कुछ चन्दे अग्रिम रूप से भी प्राप्त हुए हैं, तो उनकी राशि भी स्पष्ट की जानी चाहिए। ऐसी स्थिति में यह सदैव वांछनीय होता है कि उस अवधि के लिए चन्दों की राशि ज्ञात करने के लिए चन्दा खाता बनाया जाये, जिसके लिए खाते तैयार किए जा रहे हैं। उदाहरण के लिए यदि कहा जाता है कि 2008 वर्ष के दौरान समिति द्वारा वसूल किए गये चन्दे 1,850 ₹ हैं, जिसमें 200 ₹ वर्ष 2007 से सम्बन्धित हैं। 100 ₹ के चन्दे अग्रिम रूप में 2009 के लिए प्राप्त हुए हैं और 500 ₹ के चन्दे 2008 के अन्त में वसूली के लिए बकाया है, तो समायोजन जर्नल लेखे तथा चन्दा खाता अग्र प्रकार से बनाया जायेगा—

		₹	₹
Subscription Outstanding Account	Dr.	500	
To Subscriptions Account			500
(The amount outstanding for this year credited to Subscription Account)			
Subscription A/c	Dr.	300	
To Outstanding Subscription A/c			200
To Subscriptions Received in Advance A/c			100
(Subscription received ₹ 200 for the previous year and ₹ 100 for the next year, adjusted)			

Subscription Account

Dr.					Cr.
2008		₹	2008		₹
Jan. 1	To Outstanding Subscriptions	200	Dec.	By Cash A/c	1,850
Dec. 31	To Subscriptions received in advance	100		By Subscriptions outstanding	500
	To Income and Expenditure Account, transfer	2,050			
		2,350			2,350

अदत्त चन्दे की राशि को चंदा खाते के राशि में समायोजित किया गया है, अदत्त चन्दा खाते को डेबिट करके शेष राशि को आर्थिक चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष में दिखाया गया है। चन्दा खाते को वर्ष के अन्त में आय एवं व्यय खाते में हस्तान्तरित करके बन्द कर दिया गया है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

1.6.4 आजीवन सदस्य (Life Members)—जीवन सदस्यता शुल्क के लिए, शुल्क प्राप्ति पूँजीगत आगम है, जो अनावर्तक प्रकृति की होती है। इसे सीधे पूँजीगत कोष या सामान्य कोष में जोड़ते हैं।

आजीवन सदस्यों से प्राप्त चन्दे को एकमुश्त करने के लिए निम्न में से एक विधि को अपनाया जा सकता है—

(1) सदस्य के जीवन काल तक, सम्पूर्ण राशि को एक विशेष खाते में रख सकते हैं या इसको संचित कोष के क्रेडिट में अन्तरित कर सकते हैं।

(2) सामान्य वार्षिक चन्दे की राशि के बराबर राशि प्रत्येक वर्ष आय एवं व्यय खाते में अन्तरित की जा सकती है शेष को तब तक आगे ले जाया जाता है, जब तक वह राशि समाप्त न हो जाये। लेकिन यदि आजीवन सदस्य की मृत्यु हो जाती है और उससे प्राप्त समस्त राशि इस प्रकार आय एवं व्यय खाते में अन्तरित नहीं होती, तो उसकी मृत्यु पर, शेष राशि को संचिति कोष में डाल दिया जाता है।

(3) सदस्य की आयु तथा औसत जीवन के अनुसार निकाली गयी राशि वार्षिक तौर पर आय व व्यय खाते को क्रेडिट करके अन्तरित की जा सकती है।

1.7 चिट्ठे की तैयारी (Preparation of Balance Sheet)

प्रारम्भिक आर्थिक चिट्ठे की तैयारी तथा अधिशेष की गणना (Preparation of Opening Balance Sheet and Calculation of Surplus)—यदि वर्ष के प्रारम्भ में पूँजी कोष या संचित अधिशेष नहीं दिया गया हो तो, इसकी गणना वर्ष के प्रारम्भ में सम्पत्ति में से दायित्वों को घटाने के द्वारा की जाती है। जबकि प्रारम्भिक पूँजी कोष की गणना में पूर्वदत्त व्ययों तथा उपार्जित आयों को सम्पत्तियों तथा अदत्त व्ययों की तरह एवं अग्रिम आय को दायित्वों की तरह शामिल करने का ध्यान रखना चाहिए। कोई भी अधिशेष जो वर्ष के दौरान अर्जित हुआ हो उसे प्रारमभिक पूँजी कोष में जोड़ा जाता है तथा कोई भी घाटा उसे वर्ष के दौरान प्रारम्भिक पूँजी कोष में से घटाया जाता है।

रोकड़ तथा अधिकोष शेष (Cash and Bank Balance)—प्राप्ति तथा भुगतान खाते का अन्तिम रोकड़ तथा अधिकोष शेष जो दिखाया गया है वह आर्थिक चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाता हैं। यदि यहाँ बैंक अधिविकर्ष है, तो यह आर्थिक चिट्ठे में दायित्व पक्ष में दिखाया जायेगा।

स्थायी सम्पत्ति (Fixed Assets)—खरीद की राशि के द्वारा स्थायी सम्पत्ति (फर्नीचर, भवन, उपकरण आदि) का प्रारम्भिक शेष बढ़ता है तथा बिक्री एवं ह्रास के द्वारा इसका प्रारम्भिक शेष घटता है।

दायित्व (Liabilities)—दायित्व का प्रारम्भिक शेष किसी भी बढ़ोत्तरी या घटती के लिए समायोजित होना चाहिए।

उदाहरण (Illustration) **4**

31 दिसम्बर, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए Exe क्लब का प्राप्ति एवं भुगतान खाता निम्न है—

प्राप्ति	₹	भुगतान	₹
रोकड़ हाथ में	100	ग्राउंड्स मैन फीस	750
पास बुक के हिसाब से बैंक शेषः		कार्यशाला	1,500
जमा खाता	2,230	मैदान का किराया	250
चालू खाता	600	चाय की लागत	250
बैंक ब्याज	30	भोजन	400
दान एवं चन्दा	2,600	ऑफिस और प्रिंटिंग खर्च	280

© The Institute of Chartered Accountants of India

चाय से प्राप्त	300	औजारों की मरम्मत	500
भोजन में अंशदान	100	सचिव को मानय तथा 2007 का संचित धन	400
औजारों की बिक्री	80		
मनोरंजन से शुद्ध अर्जन	780	पास बुक के अनुसार बैंक शेषः	
आगामी क्रीड़ा प्रतियोगिता के लिए दान।	1,000	जमा खाता	3,090
		चालू खाता	150
		हस्तस्थ रोकड़	250
	7,820		7,820

इसके अतिरिक्त निम्न सूचनाएँ प्रदान की गयी हैं—

	1 जनवरी 2008	31 दिसम्बर 2008
	₹	₹
देय चंदा	150	100
प्रिंटिंग आदि के लिए देय रकम	100	80
मरम्मत के लिए चेक प्रस्तुत नहीं किए गये	300	260
मशीन तथा उपकरणों का अनुमानित मूल्य	800	1,750
ब्याज जो पास बुक में नहीं चढ़ाया गया		20
ग्राउंड्स मैन बोनस		300

31 दिसम्बर, 2008 को समाप्त होने के वर्ष में सचिव को मानदेय तथा संचित धन को 200 ₹ से बढ़ाना है। 2008 के लिए आय एवं व्यय खाता तथा सम्बन्धित आर्थिक चिट्ठा तैयार कीजिए।

समाधान (Solution)

Income & Expenditure Account of Exe Club
for the year ending 31st Dec. 2008

		₹			₹
To Groundsman's fee		750	By	Donations and Subscription	2,550
To Rent of Ground		250	By	Receipts from teas	50
To Travelling Expenses	400			(Fares) less expenses	
Less : Contribution	100	300	By	Proceeds of Variety	
To Printing & Office Expenses		260		Entertainment	780
To Repairs	460		By	Interest	50
To Depreciation on Machinery :					
Op. balances and					
Purchases	2,300				
Less : Closing Balance	1,750				
	550				
Less : Sale	80	470			

© The Institute of Chartered Accountants of India

To Honoraria		
To Sect. & Treasurer	600	
To Bonus to Groundsman	300	
To Excess of Income over Expenditure	40	
	3,430	3,430

Balance Sheet of Exe Club as on 31st Dec., 2008

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹
Outstanding Expenses :				
Groundsman's Bonus		300	Cash in hand	250
Printing		80	Cash in Deposit A/c	3,090
Honoraria		600	Subscription Due	100
Bank Overdraft (260–150)		110	Interest Due	20
Capital Fund : Opening	3,080		Machinery & Equipments	1,750
Add : Surplus for the year	40	3,120		
Tournament Fund (Donation)		1,000		
		5,210		5,210

Opening Balance Sheet

	₹		₹
Outstanding Expenses and Honoraria	500	Cash in hand	100
		Cash in Deposit A/c	2,230
Capital Fund (Balancing Figure)	3,080	Cash in Current A/c	300
		Subscription Due	150
		Machinery	800
	3,580		3,580

उदाहरण (Illustration) **5**

वर्ष 2008 के लिए यूथ क्लब का आय तथा व्यय खाता निम्न है—

	₹		₹
वेतन	4,750	चन्दा	7,500
सामान्य व्यय	500	प्रवेश शुल्क	250
अंकेषण शुल्क	250	वार्षिक डिनर में अंशदान	1,000
सचिव को मानदेय	1,000	वार्षिक खेल मिलान पर लाभ	750
स्टेशनरी एवं प्रिंटिंग	450		
वार्षिक डिनर खर्च	1,500		

© The Institute of Chartered Accountants of India

ब्याज और बैंक व्यय	150	
ह्रास	300	
अधिशेष	600	
	9,500	9,500

यह खाते निम्न समायोजन के बाद बनाये जाते हैं—

	₹
वर्ष 2007 के अन्त में अदत्त चन्दा	600
31 दिसम्बर, 2007 को प्राप्त अग्रिम चन्दा	450
31 दिसम्बर 2008 को प्राप्त अग्रिम चन्दा	270
31 दिसम्बर 2008 को अदत्त चन्दा	750

2008 के प्रारम्भ एवं अन्त में अदत्त वेतन के 400 ₹ तथा 450 ₹ स्वीकृत थे। सामान्य व्यय में बीमा पूर्वदत्त के 60 ₹ शामिल है। अंकेक्षण शुल्क 2008 के लिए अभी बाकी है। 2008 की अवधि में 2007 की अंकेक्षण शुल्क की धनराशि 200 ₹ चुकता थे।

क्लब के मैदान के पट्टे पर स्वतन्त्र रूप से स्वामित्व था जिसका मूल्य 10,000 ₹ था। क्लब के पास खेल-कूद के उपकरण का मूल्य 1 जनवरी, 2008 को 2,600 ₹, वर्ष के अन्त में ह्रास घटाने के बाद उपकरण की धनराशि 2,700 ₹। 2007 में क्लब के पास बैंक ऋण 2,000 ₹ है। 31 दिसम्बर, 2008 को रोकड़ हाथ में, जिसकी धनराशि 1,600 ₹ है।

2008 के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा वर्ष के अन्त में आर्थिक चिट्ठा तैयार कीजिए।

समाधान (Solution)

The Youth Club
Receipts and Payments Account
for the year ended 31st Dec., 2008

	₹	₹		₹	₹
To Balance b/d		1,390	By Salaries	4,750	
(balancing figure)			*Add* : Paid for 2007	400	
,, Subscriptions					
As per Income &				5,150	
Expenditure Account	7,500		*Less :* Unpaid for 2008	450	4,700
Add : 2007's Received	600				
To 2009's Received	270				
	8,370		By General Expenses	500	
Less: 2008's Received			*Add* : Paid for 2007	60	560
in 2007	450				
	7,920		By Audit fee (2008)		200
Less : 2008's Outstanding	750	7,170	By Secy. Honorarium		1,000
			By Stationery & Printing		450
			By Annual Dinner Expenses		1,500

© The Institute of Chartered Accountants of India

To Entrance Fees	250	By Interest & Bank Charges	150
To Contribution for annual dinner	1,000	By Sports Equipments [2,700 – (2,600 – 300)]	400
Profit on Sports meet : Receipt less expenses	750	By Balance c/d	1,600
	10,560		10,560
To Balance b/d	1,600		

Balance Sheet of Youth Club as at December 31, 2008

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
Subscription received in advance		270	Freehold Ground		10,000
Audit Fee Outstanding		250	Sport Equipment: As per last		
Salaries Outstanding		450	Balance Sheet	2,600	
Bank Loan		2,000	Additions	400	
Capital Fund :				3,000	
Balance as per previous Balance Sheet	11,540		*Less* : Depreciation	300	2,700
Add : Surplus for 2008	600	12,140	Subscription Outstanding		750
			Insurance Prepaid		60
			Cash in hand		1,600
		15,110			15,110

Balance Sheet of Youth Club as at December 31, 2008

Liabilities	₹	*Assets*	₹
Subscriptions received in advance	450	Freehold Ground	10,000
Salaries Outstanding	400	Sports Equipment	2,600
Audit fees unpaid	200	Subscriptions Outstanding	600
Bank Loan	2,000	Cash in hand	1,390
Capital Fund (balancing figure)	11,540		
	14,590		14,590

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **6**

एक क्लब का आर्थिक चिट्ठा तथा लाभ-हानि खाता निम्न है, उनका प्राप्ति तथा भुगतान खाता तथा चन्दा खाता 31 मार्च, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए बनाइए।

आय तथा व्यय खाता वर्ष 2007-08 **के लिए**

	₹		₹
मैदान का रखरखाव	10,000	चन्दा	17,320
प्रिंटिंग	1,000	समाचारपत्रों का विक्रय (पुराने)	260
वेतन	11,000	व्याख्यान	1,500
फर्नीचर पर ह्रास	1,000	प्रवेश शुल्क	1,300
किराया	600	विविध आय	400
		धन की कमी	2,820
	23,600		23,600

आर्थिक चिट्ठा 31 **मार्च,** 2008 **तक**

दायित्व		₹	**सम्पत्ति**	₹
अग्रिम चन्दा (2008-09)		100	फर्नीचर	9,000
पुरस्कार कोष :			मैदान तथा भवन	47,000
प्रारम्भिक शेष	25,000		पुरस्कार कोष विनियोग	20,000
जोड़ें : ब्याज	1,000		हस्तस्थ रोकड़	2,300
	26,000		चन्दा (2007-08)	700
घटाएँ : पुरस्कार	2,000	24,000		
सामान्य कोष :				
प्रारम्भिक शेष	56,420			
घटाएँ : धन की कमी	2,820			
	53,600			
जोड़े : प्रवेश शुल्क	1,300	54,900		
		79,000		79,000

इस खाते में निम्न समायोजन करने हैं—

(1) मैदान के रखरखाव में 600 ₹ तथा छपाई में 240 ₹ 2006-07 से सम्बन्धित 2007-08 में भुगतान किए गये।

(2) सामान्य कोष के हस्तांतरण के द्वारा आधा प्रवेश शुल्क हस्तान्तरित किया गया।

(3) वर्ष 2006-07 में 800 ₹ तथा 2007-08 में 700 ₹ चन्दा अदत्त था।

(4) 2006–07 में 200 ₹ अग्रिम तथा 2007-08 में 2008-09 के लिए 100 ₹ अग्रिम चन्दा प्राप्त किया।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

Receipts and Payment Account
for the year ending 31st March, 2008

Receipts	₹	*Payments*	₹
To Balance b/d		By Upkeep of Ground	
(Balancing figure)	4,660	(10,000 + 600)	10,600
To Subscription	17,320	By Printing (1,000 + 240)	1,240
To Interest on Prize Fund		By Salaries	11,000
Investments	1,000		
To Lecture (fee)	1,500	By Rent	600
To Entrance Fee	2,600	By Prizes	2,000
To Sale of Newspapers (old)	260	By Balance c/d	2,300
To Misc. Income	400		
	27,740		27,740

क्रियात्मक टिप्पणी : वर्ष 2006-07 के लिए मैदान के रखरखाव के 600 ₹ तथा छपाई के 240 ₹ से सम्बन्धित खर्चों को जोड़कर दिखाया गया है, इस वर्ष के इन मदों के कुल खर्चों की गणना के लिए।

Subscription Account

2007		₹	2007		₹
April To	Subscription Outstanding (2006-2007)	800	April 1 By	Cash (Balancing figure)	17,320
			By	Subscription Outstanding (2007-08)	700
To	Subscription In Advance (2007-08)	100	By	Subscription in Advance (2006-07)	200
2008					
March	Income & Expenditure	17,320			
		18,220			18,220

उदाहरण (Illustration) **7**

स्पोर्ट्स राईटर क्लब का 31 मार्च, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाता निम्न है—

प्राप्ति	₹	**भुगतान**	₹
शेष आगे लाए	4,820	वेतन	12,000
चंदा	28,600	किराया बिजली	7,220

© The Institute of Chartered Accountants of India

विविध आय	700	पुस्तकालय किताबें	1,000
स्थायी जमा पर ब्याज	2,000	पत्रिका और समाचारपत्र	2,172
		विविध व्यय	10,278
		खेल उपकरण	1,000
		शेष आगे ले गये	2,450
	36,120		36,120

अन्य सम्पत्ति और दायित्वों की रकम निम्न है—

	31 मार्च को	
	₹	₹
	2007	2008
अदत्त वेतन	710	170
अदत्त किराया और बिजली	84	973
पत्रिका व समाचार पत्र के लिए अदत्त	226	340
बैंक के साथ स्थायी जमा (10%)	20,000	20,000
उस पर उपार्जित ब्याज	500	500
प्राप्य चन्दा	1,263	1,575
पूर्वदत्त व्यय	417	620
फर्नीचर	9,600	
खेल उपकरण	7,200	
पुस्तकालय किताबें	5,000	

फर्नीचर तथा खेल-यन्त्रों का अन्तिम मूल्य क्रमशः 10% तथा 20% ह्रास घटाने के पश्चात् लिखा जायेगा, यदि कोई वृद्धि हुई है, तो। क्लब की पुस्तकालीय किताबों का अन्तिम मूल्य 31 मार्च, 2008 को 5,250 ₹ था। उपर्युक्त सूचना के आधार पर बनाइए—

(a) 31 मार्च, 2007 के लिए क्लब का आर्थिक चिट्ठा।

(b) 31 मार्च, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए क्लब का आय एवं व्यय खाता।

(c) 31 मार्च, 2008 के लिए क्लब का अन्तिम आर्थिक चिट्ठा।

समाधान (Solution)

(a) **Sportswriters Club**

Balance Sheet as on 31st March, 2007

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹
Outstanding expenses :			Furniture	9,600
Salaries	710		Library Books	5,000
Rent & Electricity	864		Sports Equipment	7,200
Magazines & Newspapers	226	1,800	Fixed Deposit	20,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

			Cash in hand & at Bank	4,820
Capital Fund (Balancing figure)		47,000	Prepaid Expenses	417
			Subscription receivable	1,263
			Interest accrued	500
		48,800		48,800

(b) **Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2008**

Expenditure		₹	*Income*	₹
To Salaries		11,460	By Subscription	28,912
To Rent & Electricity		7,329	By Interest	2,000
To Magazines & Newspapers		2,286	By Misc. Income	700
To Sundry Expenses		10,075	By Excess of expenditure	
To Depreciation :			over income	2,888
Furniture	960			
Sports Equipment	1,640			
Library Books	750	3,350		
		34,500		34,500

(c) **Balance Sheet of Sportswriters Club as on 31st March, 2008**

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
Outstanding Expenses :			Furniture		
Salaries	170		Cost	9,600	
Rent & Electricity	973		*Less* : Depreciation	960	8,640
Newspapers	340	1,483	Magazines &		
Capital Fund :			Sports Equipment :		
Opening balance	47,000		Opening balance	7,200	
Less : Excess of			Addition	1,000	
exp. over income	2,888	44,112		8,200	
			Less : Depreciation	1,640	6,560
			Library Books :		
			Opening Balance	5,000	
			Addition	1,000	
				6,000	
			Less : Depreciation	750	5,250
			Fixed Deposit		20,000
			Cash in hand & at Bank		2,450
			Prepaid Expenses		620
			Subscription Receivable		1,575
			Interest accrued		500
		45,595			45,595

© The Institute of Chartered Accountants of India

Working Notes :

(i) *Expenses*	*Salaries*	*Rent & Electricity*	*Magazines & News-Papers*	*Sundry Expenses*
	₹	₹	₹	₹
Paid during the year	12,000	7,220	2,172	10,278
Add : Outstanding on 31.3.2008	170	973	340	—
Prepaid on 31.3.2007	—	—	—	417
	12,170	8,193	2,512	10,695
Less : Outstanding on 31.3.2007	710	864	226	—
Less : Prepaid on 31.3.2008	—	—	—	620
Expenditure for the year	11,460	7,329	2,286	10,075

(ii) *Depreciation*		₹
(a) Furniture @ 10% on ₹ 9,600		960
(b) Sports Equipment @ 20% on ₹ 8,200		1,640
(c) Library books : Book value	6,000	
Revalued	5,250	750
(iii) *Subscription*		
Received in cash		28,600
Add : Receivable on 31.3.2008		1,575
		30,175
Less : Receivable on 31.3.2007		1,263
		28,912

उदाहरण (Illustration) **8**

निम्नलिखित आँकड़ों से 31 दिसम्बर, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए मयूर चिकित्सालय का आय तथा व्यय खाता तथा उसी तिथि का स्थिति विवरण तैयार कीजिए—

प्राप्ति एवं भुगतान खाता 31 दिसम्बर, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए

		₹		₹
शेष :			वेतन (2007 के लिए 3,600 ₹)	15,600
रोकड़	400		अस्पताल यन्त्र	8,500
बैंक	2,600	3,000	फर्नीचर खरीद	3,000
			भवन में वृधि	25,000
चन्द्रा :			प्रिंटिग और स्टेशनरी	1,200
2007 के लिए		2,550	आहार व्यय	7,800
2008 के लिए		12,250	किराया तथा कर (2009 के लिए 150 ₹)	1,000
2009 के लिए		1,200	विद्युत एवं जल व्यय	1,200

© The Institute of Chartered Accountants of India

		कार्यालय व्यय		1,000
सरकारी ग्रांट		विनियोग		10,000
भवन के लिए	40,000	शेषः		
रखरखाव के लिए	10,000	रोकड़	700	
मरीजों से शुल्क	2,400	बैंक	3,400	4,100
चन्दा (पूंजीगत नहीं किया गायेगा)	4,000			
अनुग्रह तमाशे से शुद्ध प्राप्तियाँ	3,000			
	78,400			78,400

अतिरिक्त सूचनाएं—

	₹
निर्माण के अन्तर्गत भवन का मूल्य 31 दिसम्बर, 2008 को	70,000
चिकित्सालय उपकरण का मूल्य 31 दिसम्बर, 2008 को	25,500
भवन कोष 1 जनवरी, 2008 को	40,000
अदत्त चन्दा 31 दिसम्बर, 2007 को	3,250

1 जुलाई, 2008 को 8% सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश किया गया।

समाधान (Solution)

Mayura Hospital

Income & Expenditure Account for the year ended 31 December, 2008

Expenditure	₹	*Income*	₹
To Salaries	12,000	By Subscriptions	12,250
" Diet expenses	7,800	" Govt. Grants (Maintenance)	10,000
" Rent & Rates	850	" Fees, Sundry Patients	2,400
" Printing & Stationery	1,200	" Donations	4,000
" Electrictiy & Water-charges	1,200	" Benefit shows (net collections)	3,000
" Office expenses	1,000	" Interest on Investments	400
" Excess of Income over expenditure transferred to Capital Fund	8,000		
	32,050		32,050

Statement of Affairs as on 31st Dec., 2008

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
Capital Fund :			Building:		
Opening balance	24,650		Opening balacne	45,000	
Excess of Income			Addition	25,000	70,000
Over Expenditure	8,000	32,650			

© The Institute of Chartered Accountants of India

			Hospital Equipment:		
Building Fund:			Opening Balacne	17,000	
Opening balacne	40,000		Addition	8,500	25,500
Add : Govt. Grant	40,000	80,000			
			Furniture		3,000
Subscription			Investments-8% Govt.		
received in advance		1,200	Securities		10,000
			Subscriptions receivable		700
			Accrued interest		400
			Prepaid expenses (Rent)		150
			Cash at Bank		3,400
			Cash in hand		700
		1,13,850			1,13,850

Working Notes :

(1) Statement of Affairs as on 31st Dec., 2007

Liabilites	₹	*Assets*	₹
Capital Fund		Building	45,000
(Balancing Figure)	24,650	Equipment	17,000
Building Fund	40,000	Subscription Receivable	3,250
Creditors for Expenses:		Cash at Bank	2,600
Salaries payable	3,600	Cash in hand	400
	68,250		68,250

(2) Building

	₹
Balance of 31st Dec. 2008	70,000
Paid during the year	25,000
Balance on 31st Dec. 2007	45,000

(3) Equipment

Balance on 31st Dec. 2008	25,500
Paid during the year	8,500
Balance on 31st Dec. 2007	17,000

(4) Subscription due for 2007

Receivable on 31st Dec. 2007	3,250
Received in 2008	2,550
Still Receivable for 2007	700

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) 9

31 दिसम्बर 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए क्लब का प्राप्ति तथा भुगतान खाता इस प्रकार है

प्राप्ति एवं भुगतान खाता

(Recipts and Payment Account)

प्राप्तियां	₹		**भुगतान**	₹
शेष आगे लाए		2,500	पुस्तकें खरीदी	1,000
चन्दा :			प्रिंटिंग और स्टेशनरी	200
2007	600		वेतन	1,500
2008	4,300	4,900	विज्ञापन	200
ब्याज		500	बिजली का खर्च	400
विशेष कोष के लिए दान		300	शेष आगे ले गये	7,350
किराया—		₹		
2007		150		
2008		300	450	
सरकारी ग्रांट्स			2,000	
			10,650	10,650

आय तथा व्यय खाता

व्यय	₹	**आय**	₹
वेतन	2,800	ब्याज	400
किराये को टेंट	200	चन्दा	4,800
बिजली खर्च	400	किराया	2,300
भवन पर ह्रास	750	सरकारी ग्रांट	2,000
प्रिंटिंग और स्टेशनरी	200		
विज्ञापन	150		
अधिशेष	5,000		
	9,500		9,500

1 जनवरी 2008 को क्लब की सम्पत्ति इस प्रकार थी—

भवन 15,000 ₹, किताबें 10,000 ₹, फर्नीचर 4,000 ₹, विनियोजन 10,000 ₹। उक्त तिथि को दायित्व—50 ₹ विज्ञापन के लिए तथा 100 ₹ वेतन के थे।

31 दिसम्बर 2007 तथा 31 दिसम्बर 2008 के लिए क्लब का आर्थिक चिट्ठा बनाइए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधन (Solution)

Balance Sheet

As at 31st December, 2007

	₹		₹
Capital fund	42,200	Cash in hand	2,500
Outstanding for advertisement	50	Subscriptions outstanding	600
Outstanding for salary	100	Interest outstanding	100
		Rent receivable	150
		Building	15,000
		Books	10,000
		Books Purchased	4,000
		Investments	10,000
	42,350		42,350

Balance Sheet

As at 31st December, 2008

		₹			₹
Donation for Special Fund		300	Cash in hand		7,350
Outstanding for Salary		1,400	Subscriptions outstanding		500
Outstanding for Tent hire		200	Books	10,000	
Capital Fund			*Add* : Purchase	1,000	11,000
Balance on 31/12/07	42,200				
Add : Surplus	5,000	47,200	Books	15,000	
			Less : Dep.	750	14,250
			Furniture		4,000
			Investments		10,000
			Accrued Rent		2,000
		49,100			49,100

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश

(SUMMARY)

- एक गैर-लाभकारी संस्था एक कानूनी तथा लेखा इकाई है जो की पूर्ण रूप से समाज के लाभ हेतु संचालित है बजाय एकाकी स्वामित्व या साझेदारों के समूह या अंशधारियों के लाभ के। इन संगठनों के वित्तीय विवरण में शामिल है :
  1. प्राप्ति एवं भुगतान खाता,
  2. आय तथा व्यय खाता,
  3. आर्थिक चिट्ठा।
- प्राप्ति एवं भुगतान खाता रोकड़ पुस्तक का सारांश है।
- आय और व्यय खाते व्यापारिक संस्थाओं के लाभ और हानि खाते के बराबर है। यह खाता व्यापक रूप से गैर-लाभकारी संस्थाओं द्वारा बनाया जाता है तथा उपार्जन सिद्धान्त के आधार पर तैयार किया जाता है। इसमें केवल लेखा अवधि से सम्बन्धित आगम प्रक्रति की मदें ही आती हैं।
- यह उल्लेखनीय है कि, आवश्यक विषयों के अनुसार विभिन्न खातों को समायोजित करने, तथा सभी आगम खातों को आय एवं व्यय खाते में हस्तांतरित करके बन्द करने के पश्चात्, यहाँ अभी भी बची हुयी शेषों की संख्या होगी। इन्हें आर्थिक चिट्ठे में शामिल किया जायेगा। आर्थिक चिट्ठा इस प्रकार के खातों का पूरक है।
- गैर-लाभकारी संस्थाओं के लिए दान, प्रवेश शुल्क, चन्दा, आजीवन सदस्यता आदि आय के कुछ प्रमुख स्त्रोत है। इन मदों में से कुछ को पूंजीकृत तथा अन्य को उपार्जन आधार पर उपार्जित करके पृथक से उपचारित किया जायेगा, जैसा कि पहले कहा गया है।

स्व-परीक्षा प्रश्न

(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Answer Type Questions)

1. प्राप्तियां तथा भुगतान खाते आकड़े हैं प्राप्तियों तथा भुगतान के :
   (अ) केवल आगम प्रकृति
   (ब) केवल पूँजी प्रकृति
   (स) पूँजी प्रकृति वैसे ही आगम प्रकृति
   (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं
2. प्रवेश शुल्क आय होगी :
   (अ) पूंजीगत
   (ब) आगम जैसे उपचार
   (स) आगम के रूप में उपचारित होगा जब रकम बेहद बड़ी ना हो
   (द) दायित्व के रूप में उपचारित

© The Institute of Chartered Accountants of India

3. लिजेंसी (वसीयत) को :
   (अ) पूँजी कोष में जोड़ा जाता है।
   (ब) आय व व्यय खाते में दिखाया जाता है।
   (स) अलग से दायित्व के रूप में दर्शाते हैं।
   (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
4. आय तथा व्यय खाता प्रारम्भ होता है :
   (अ) नाम शेष
   (ब) जमा शेष
   (स) शेष नहीं
   (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं :
5. यदि 1,500 ₹ वर्ष के प्रारम्भ में दान के अदत्त थे तथा 10,000 ₹ वर्ष की अवधि में प्राप्त हुए साथ ही 2,500 ₹ वर्ष के अन्त में अभी भी अदत्त हैं। प्राप्ति एवं भुगतान खाते से जो रकम ली जायेगी, वो है :
   (अ) 11,000 ₹
   (ब) 8,500 ₹
   (स) 10,000 ₹
   (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
6. फर्नीचर के विक्रय के लिए क्लब का लाभ लिया जायेगा :
   (अ) रोकड़ खाता
   (ब) प्राप्ति एवं भुगतान खाता
   (स) आय तथा व्यय खाता
   (द) लाभ तथा हानि खाता
7. पुरानी सामग्री का विक्रय मुख्यतः जमा पक्ष पर दिखाया जायेगा :
   (अ) रोकड़ पुस्तक
   (ब) आय व व्यय खाता
   (स) आर्थिक चिट्ठा
   (द) उपरोक्त में से कोई नहीं
8. प्राप्ति एवं भुगतान खाता दिखाता है :
   (अ) आय तथा व्यय
   (ब) नगद प्राप्ति तथा भुगतान
   (स) सम्पत्ति तथा दायित्व
   (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

© The Institute of Chartered Accountants of India

9. आय तथा व्यय खाता दिखाता है :
   (अ) हस्तस्थ रोकड़
   (ब) आधिक्य या कमी
   (स) पूँजी खाता
   (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं
10. विशिष्ट उद्देश्य के लिए प्राप्त किया गया दान :
   (अ) पृथक खाते में विकलित किया जाना चाहिए तथा आर्थिक चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाना चाहिए
   (ब) आय तथा व्यय खाते में विकलित किया जाना चाहिए
   (स) बिल्कुल भी अभिलेखित नहीं होना चाहिए
   (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

[**उत्तर** (Answers)—1. (स), 2. (स), 3. (अ), 4. (स), 5. (अ), 6. (स), 7. (ब) 8. (ब) 9. (ब) 10. (अ)।]

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

11. प्राप्ति एवं भुगतान खाते की सीमाएं संक्षेप में बताइए।
12. किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए प्राप्त किए गए दान के लेखांकन व्यवहार पर चर्चा कीजिए जब क्लब का आर्थिक चिट्ठा तैयार किया जाता है।
13. "प्राप्ति तथा भुगतान खाता रोकड़ पुस्तक के समान है"। टिप्पणी दीजिए।

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

14. गैर-लाभकारी संगठनों द्वारा प्राप्तियाँ एवं भुगतान खाता तैयार करने के कारण की व्याख्या कीजिए। यह आय तथा व्यय खाते से किस प्रकार भिन्न है?
15. प्राप्ति एवं भुगतान खाता दिए होने से आय एवं व्यय खाता तैयार करने की विधि का वर्णन कीजिए।

IV. क्रियात्मक प्रश्न (Practical Problems)

16. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर 31 दिसम्बर 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा आय एवं व्यय खाता तैयार कीजिए। वर्ष 2008 के लिए सदस्यों से प्राप्त चन्दा ₹ 1,20,000, वर्ष 2007 के लिए ₹ 20,000, 2009 के लिए प्राप्त आग्रिम चन्दा ₹ 5,000, दान प्राप्त ₹ 25,000, पुराने फर्नीचर का विक्रय ₹ 200 (लागत ₹ 500, अपलिखित मूल्य ₹ 400) गार्ड मैन की मजदूरी ₹ 24,000, सामान्य व्यय ₹ 30,000, मैदान की मरम्मत ₹ 10,000, अंकेक्षण फीस ₹ 500, अधिकोष में रोकड़ ₹ 60,000, अदत्त चन्दा, ₹ 15,000। अदत्त मजदूरी ₹ 10,000, कार्यालय फर्नीचर ₹ 15,000। मूल्य ह्रास आमतौर पर @ 20% प्रति वर्ष लगाया जाता है। क्लब ने निर्णय लिया कि वर्ष के अंत में ₹ 500 अपने हाथ में रखकर तथा बैंक में पड़े हुए शेष राशि के अतिरिक्त शेष को XYZ लिमिटेड के 20% अंशों में विनियोजित कर दिया जाएगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

17. होली परिवार चिकित्सालय का प्राप्ति तथा भुगतान खाता नीचे दिया है जिसमें से आपके लिए 31st दिसम्बर, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आय तथा व्यय खाता बनाना अपेक्षित है—

प्राप्ति एवं भुगतान खाता

प्राप्तियाँ	₹	**भुगतान**	₹
निवेश की बिक्री	50,000	कर्मचारियों के लिए वेतन	4,25,000
विपत्र की लागत	11,25,000	सामान्य व्यय	75,000
		अंकेशण शुल्क	10,000
		शेष :	
		अधिकोष में रोकड़	3,25,000
		हस्तस्थ रोकड़	3,90,000
	11,75,000		11,75,000

अन्य सूचनाएं—

(i) विशेषज्ञ शुल्क ₹ 2,50,000

(ii) उपकरण के लिए विपत्र ₹ 5,50,00

(iii) उपकरण पर 10% की दर से ह्रास प्रभार, वर्ष के प्रारम्भ में जिसका शेष ₹ 7,59,000 था।

(iv) विविध आय ₹ 500 लेखा नहीं हुआ।

(v) ₹ 15,000 का दान जिसका लेखा नहीं हुआ है।

(vi) वर्ष की अवधि में अस्पताल नियोग ने आँखों के ऑपरेशन के लिए एक कैम्प का आयोजन किया जिस पर ₹15,000 खर्चा आया। लेकिन ठेकेदार ने अभी तक विपत्र जारी नहीं किया।

(vii) अस्पताल के चेयरमैन संयुक्त राज्य की यात्रा पर गये तथा वहीं से 1,50,000 ₹ दान के एकत्र किए। दान की रकम तथा यात्रा पर ₹ 40,000 का खर्च अभी तक समायोजित नहीं किया गया। आप प्राप्ति तथा भुगतान खाते को दोबारा तैयार कीजिए।

18. दिल्ली फुटबाल क्लब 31 दिस. 2007 को आपको निम्नलिखित आर्थिक चिट्ठा देता है—

दायित्व	₹	**सम्पत्ति**	₹
पूँजी कोष	11,00,000	पट्टे में ली गई जमीन	4,50,000
		फर्नीचर	50,000
टूर्नामेन्ट कोष	2,00,000	टूर्नामेन्ट कोष निवेष	2,00,000
पुरस्कार कोष	1,00,000	निजी कोष विनियोग	1,00,000
चालू दायित्व	50,000	अन्य निवेश	3,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

	खेल उपकरण अधिकोष में	50,000
	रोकड़	2,80,000
	हस्तस्थ रोकड़	20,000
14,50,000		14,50,000

वर्ष की अवधि में प्राप्तियाँ—चंदा ₹ 10,00,000, खेल प्रतियोगिता के लिए दान ₹ 15,000, पुरस्कार के लिए दान ₹ 25,000 निवेश से आय ₹ 60,000 है।

खर्चे—खेल सामग्री ₹ 2,50,000 मैदान की मरम्मत के ₹ 50,000 कार्यालय स्टॉफ की मजदूरी ₹ 2,50,000 खेल प्रतियोगिता के खर्चे ₹ 50,000 है : पुरस्कार के लिए खर्चे ₹ 40,000 है। क्लब के भवन के निर्माण की लागत ₹ 1,25,000 है।

उदत्त व्यय—अंकेक्षण फीस ₹ 3,000 स्टेशनी ₹ 4,000 कोच की फीस ₹ 40,000 है खेलकूद सामग्री की पूर्ति के विपत्र ₹ 5,000 कार्यालय उपकरण पर 20% की दर से ह्रास लगाया जाता है।

भवन निर्माण का कार्य प्रगति पर है—ठेकेदार द्वारा दिया गया विपत्र ₹ 2,50,000 जो कि प्रबन्ध समिति द्वारा स्वीकृत है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

भाग 2 : शिक्षण संस्थानों हेतु लेखांकन

(UNIT–2 : ACCOUNTING FOR EDUCATIONAL INSTITUTIONS)

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त, आप सक्षम हो जाएंगे—

- **शिक्षण संस्थानों में आय के विभिन्न स्रोत्रों एवं व्ययों के माध्यमों को समझने में।**
- **शिक्षण संस्थानों के आय एवं व्यय खाते और आर्थिक चिट्ठे को तैयार करने की तकनीक सीखने में।**

2.1 एक शिक्षण संस्थान का संगठनात्मक ढाँचा एवं विशेष लक्षण (Organisational Pattern & Salient Features of an Educational Institution)

भारत में जो शिक्षण संस्थाएँ कार्य कर रही हैं वे अधिकतर भारतीय समिति पंजीकरण अधिनियम 1860 के अन्तर्गत समिति के रूप में पंजीकृत हैं, कुछ राज्यों में जहाँ सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम पारित हो चुका है वहाँ भारतीय समिति पंजीकरण अधिनियम 1860 के अन्तर्गत सभी समितियों को समान रूप से प्रन्यास अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकरण कराना अनिवार्य है। इसके अनुसार, महाराष्ट्र राज्य में सभी समितियों को समान रूप से बॉम्बे सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1950 के अन्तर्गत पंजीकृत होना होता है।

प्रन्यास समितियाँ स्वशासी संस्थाएँ होती हैं जो सभापति, सचिव, कोषाध्यक्ष तथा कार्यकारी समिति के सदस्यों आदि पदाधिकारियों में मिलकर बनती हैं। सामान्य निकाय में समिति के सभी सदस्य सम्मिलित होते हैं। प्रन्यास/समिति की दशा में, जो अनेक विद्यालय एवं महाविद्यालय आदि चलाते हैं, प्रत्येक विशिष्ट विद्यालय या महाविद्यालय के प्रबन्ध हेतु, यहाँ एक शासकीय निकाय होता है, इकाई का प्रमुख, महाविद्यालय में प्रधानाचार्य या विद्यालय में मुख्य अध्यापक के रूप में (जैसी भी दशा हो), शासकीय निकाय का सदस्य भी होता है।

शासकीय निकाय का कार्य सम्बन्धित विद्यालय या महाविद्यालय के सुचारु संचालन का निरीक्षण करना है। बुनियादी सिद्धान्तों से यह माना जाता है कि शिक्षण संस्थाओं के व्ययों के भाग को, स्वयं शिक्षण संस्थायों द्वारा देश के उदार नागरिकों से संग्रहित दानों से या दयाराशियों (चैरिटी) से अर्जित कोषों द्वारा चुकाया जाता है।

राज्य सरकारों ने अनुदान–सहायता–विधान के माध्यम से शिक्षण संस्थानों को सहायता देने की अलग प्रणाली विकसित की है। यहाँ शिक्षण संस्थाओं में सहायता देने हेतु अनुदानों के प्रारूपों के रूप में कोई एकरूपता नहीं है।

सभी शिक्षण संस्थानों द्वारा लेखांकन वर्ष के रूप में वित्तीय वर्ष का पालन किया जाता है।

2.2 शिक्षण संस्थान को चलाने हेतु वित्त के स्रोत (Sorces of Finance for Running the Educational Institution)

यहाँ शिक्षण संस्थान द्वारा राशियाँ संग्रहित करने के तीन मुख्य स्रोत हैं। ये हैं—

(1) जनता से दान,

(2) वार्षिक शिक्षण शुल्क, अवधि शुल्क, प्रयोगशाला शुल्क आदि के रूप में शुल्क, और

(3) सरकार से प्राप्त अनुदान।

© The Institute of Chartered Accountants of India

सरकारी अनुदान चार प्रकार के हैं अर्थात् अनुरक्षण (रख–रखाव) अनुदान, उपकरण अनुदान, भवन अनुदान एवं अन्य दूसरे अनुदान जो सरकार द्वारा समय-समय पर स्वीकृत किये जा सकते हैं।

2.2.1. जनता से दान (Donation from Public)—यह आवर्ती या गैर-आवर्ती प्रयोजनों (उद्देश्यों) हेतु प्राप्त होता है। दान या तो नकद या वस्तु के रूप प्राप्त होता है। वस्तुगत दान भूमि एवं भवन, अंश एवं प्रतिभूतियों, बर्तनों, उपस्कर (फर्नीचर) एवं स्थिर वस्तुओं (फिक्सचर्स) तथा इसी प्रकार के प्रारूपों में हो सकते हैं, सामान्यतः इसके पीछे दानदाता के परिवार के एक प्रतिष्ठित सदस्य कि स्मृति बनाए रखने कि इच्छा हो सकती है।

2.2.2. प्रतिव्यक्ति प्रभार शुल्क (कैपिटेशन फीस) या प्रवेश शुल्क (Capitation Fee or Admission Fee)— शिक्षण संस्था में प्रवेश के लिए इच्छित उन विद्यार्थियों के अविभावकों/माता-पिता से राशि संग्रहित की जाती है। यह प्रतिव्यक्ति प्रभार शुल्क (कैपिटेशन फीस) या प्रवेश शुल्क के रूप में हो सकती है तथा सामान्यतः संस्थान को चलाने वाला मंडल इसे संग्रहित करता है। हाल ही के समय में, इस तरह के संग्रह आलोचना के शिकार हो चुके है तथा प्रतिबन्धित हैं।

2.2.3. प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय निक्षेप (Laboratory and Library Deposit)— सामान्यतः यह विद्यालयों एवं महाविद्यालयों द्वारा संग्रहित किये जाते हैं तथा जब तक विद्यार्थी अन्तिम रूप से संस्था नहीं छोड़ता तब तक यह संस्था के पास ही रखे रहते हैं।

विद्यालय विधान, विद्यार्थियों से प्रभारित शिक्षण तथा अन्य शुल्कों की दर निश्चत करता है।

2.2.4. अवधि शुल्क का प्रयोग (Use of Term Fee)— प्राप्तियों एवं व्ययों का एक पृथक खाता रखा जायेगा तथा आधिक्य को अगले वर्ष ले जाया जायेगा। निम्नलिखित मुख्य मदें है जिन पर अवधि शुल्क प्रयुक्त किया जा सकता है—

(1) चिकित्सा निरीक्षण।
(2) विद्यालय पत्रिका-पाण्डुलिपि और/या मुद्रण
(3) परीक्षा व्यय अर्थात् प्रश्नपत्रों का चक्रलेखित सहित मुद्रण तथा उत्तर पुस्तिकाओं कि आपूर्ति, यदि यहाँ पर्याप्त शेष हो।
(4) विद्यालय गतिविधियों से सम्बन्धित, खेल और सांस्कृतिक संगठनों को अंशदान।
(5) विद्यालय के उत्सव एवं पर्व।
(6) अन्तरा–स्तरीय एवं अन्तरा–विद्यालय टूर्नामेंट।
(7) क्रीड़ा एवं खेल—बड़े या छोटे।
(8) समाचारपत्र एवं पत्रिकाएं।
(9) पाठ्येतर भ्रमण एवं यात्रायें।
(10) भाषण प्रतियोगिता आदि के रूप में विद्यालय प्रतियोगिता।
(11) स्काउटिंग एवं गाइडिंग।
(12) विद्यालय बैण्ड।
(13) सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ, और इनके लिए आवश्यक उपकरण।
(14) सामान्य रूप में व्यावसायिक मार्गदर्शन।
(15) सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों हेतु पुरस्कार।
(16) कोई अन्य पाठ्येतर या पाठ्यक्रम गतिविधियाँ।
(17) खेल के मैदान का रख-रखाव।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(18) विद्यार्थियों के पुस्तकालयों हेतु पुस्तकों का क्रय।

(19) आरेखण और शिल्प सामग्री।

(20) श्रव्य-दृश्य शिक्षण।

(21) शिक्षण भ्रमण एवं यात्राएँ।

(22) शारीरिक शिक्षा हेतु उपकरण।

(23) ए.सी.सी., एन.सी.सी. एवं एन.डी.एस।

2.2.5. आवर्ती अनुदान (Recurring Grants)—आवर्ती अनुदान, रख-रखाव अनुदान के रूप में पूरे वर्ष में विस्तारित किश्तों में प्राप्त होते हैं।

2.2.6. अनुदान सहायता का प्रयोग (Use of Grant-in-Aid)—विद्यालय विधान, व्यय की मदों की एक विस्तृत सूची, जो अनुदान सहायता हेतु स्वीकृत है, प्रदान करता है—

(1) कर्मचारी वेतन एवं भत्ते।

(2) अवकाश भत्ते।

(3) दोषपूर्ण जलवायु भत्ता।

(4) जल भत्ता।

(5) अवकाश वेतन।

(6) शिक्षकों के प्रशिक्षण पर व्यय।

(7) पेंशन और उपदान (ग्रेच्युटी) जो लागू हो।

(8) पुस्तकालय अध्यक्ष की नियुक्ति पर व्यय।

(9) किराया, कर एवं बीमा।

(10) **अन्य आकस्मिक व्यय**— इस शीर्षक के अन्तर्गत, मुद्रण एवं लेखन सामग्री के व्यय, सवारी व्यय, पुस्तकों एवं उपस्कर उपकरणों के क्रय पर व्यय (जिसके लिए कोई विशेष अनुदान प्रदान करने का दावा नहीं किया गया है, महाराष्ट्र में यह कुल स्वीकृत व्ययों का बारह प्रतिशत की सीमा तक हैं।) आदि शामिल होते हैं।

(11) चालू मरम्मत, विद्यालय के कुल व्ययों के अनुदान की राशि के पाँच प्रतिशत या गणना (समय-समय पर संशोधित सरकारी प्रस्ताव संख्या 2321 तिथि 1-9-1923 के निर्देश अनुसार) की गयी भवन की लागत के 1-1/2 प्रतिशत की सीमा तक।

(12) विविध व्यय— विद्यालय बाग, शारीरिक शिक्षा।

(13) पुरस्कार।

(14) सहकारी भंडार पर व्यय।

(15) मान्यता हेतु बोर्ड को चुकता पंजीकरण शुल्क।

(16) भोजन कक्षों का रख-रखाव।

(17) शिक्षकों हेतु बोनस

(18) विद्युत प्रभार।

(19) टेलीफोन प्रभार।

(20) सम्मेलन से सम्बन्धित व्यय।

(21) शैक्षणिक संघों आदि को चन्दे।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(22) चिकित्सा प्रभार।

(23) निर्धारित पैमाने के अनुसार अंकेक्षक का अंकेक्षण शुल्क। ₹ 50,000 तक के स्वीकृत व्ययों हेतु न्यूनतम ₹ 75 तथा ₹ 50,000 से अधिक के स्वीकृत व्ययों हेतु न्यूनतम ₹ 300।

(24) विद्यालय की आवश्यकताओं की क्रय पर बिक्री कर एवं सामान्य कर।

(25) योग्यता छात्रवृत्तियों के लिए भुगतान।

उदाहरण (Illustration) **1**

भारत शिक्षण समिति के दिनांक 31.12.2008 को दिए गए निम्न तलपट से आय-व्यय खाता और तुलन पत्र बनाएँ—

	Dr.	*Cr.*
	₹	₹
उपस्कर एवं उपयुक्त वस्तु	12,500	
उपस्कर में वृद्धि (वर्ष में)	3,200	
पुस्तकालय में पुस्तक	17,500	
पुस्तकों में वृद्धि	4,300	
भवन	2,75,000	
सामान्य निवेश	1,50,000	
निवेश संचय कोष		15,000
विविध देनदार एवं लेनदार	5,000	14,500
प्रवेश शुल्क		15,200
परीक्षा शुल्क		2,400
चन्दा प्राप्त		20,000
प्रमाण–पत्र शुल्क		500
सोसायटी हॉल का किराया		6,500
निवेश पर ब्याज		5,500
विविध प्राप्तियाँ		600
स्टाफ का वेतन	10,200	
छपाई, स्टेशनरी एवं विज्ञापन	1,000	
दर एवं बीमा	800	
परीक्षा व्यय	600	
पत्रिकाओं का चन्दा	1,200	
पुरस्कार न्यास कोष		16,000
पुरस्कार न्यास निवेश	15,800	
पुरस्कार न्याय आय		650
पुरस्कार घोषित	450	
पुरस्कार कोष अधिकोष	275	

© The Institute of Chartered Accountants of India

दान प्राप्त (पूँजीकृत किया जाना)		18,000
सामान्य खर्चे	375	
पूँजी कोष		3,89,150
बैंक में रोकड़	5,500	
रोकड़ हस्तस्थ	300	
	5,04,000	5,04,000

आवश्यक समायोजन करने के लिए निम्नलिखित जानकारियाँ दी गई हैं—

(1)	प्राप्त चन्दा	4,500
(2)	अग्रिम चन्दा	500
(3)	उपार्जित ब्याज सामान्य निवेश से	450
(4)	अदत्त स्टाफ वेतन	1,800
(5)	दर एवं बीमा का अग्रिम भुगतान	500
(6)	निम्नलिखित दरों ह्रास लगाएं (वृद्धि जोड़ते हुए) :	
	पुस्तकालय किताबें	15% p.a
	उपस्कर एवं उपयुक्त वस्तु	5% p.a
	भवन	5% p.a

31 दिसम्बर, 2008 को सामान्य निवेश की बाजार मूल्य ₹ 1,30,000 है।

अभी गिरावट के लिये कोई प्रावधान बनाने की आवश्यकता नहीं है।

समाधन (Solution)

Bharat Education Society
Income and Expenditure Account
for the year ended at 31st Dec., 2008

		₹	₹			₹	₹
To	Staff Salaries	10,200		By	Subscription	20,000	
"	*Add:* Outstanding	1,800	12,000	"	*Add:* Outstanding	4,500	
"	Printing, Stationery					24,500	
	& Advertising		1,000		*Less:* Received		
"	Taxes & Insurance	800			in advance	500	
	Less: Prepaid	500	300				24,000
"	Examination Expenses		600	"	Entrance fee		15,200
"	Subscription to			"	Examination fee		2,400
	Periodicals		1,200	"	Certificate fee		500
"	General expenses		375				
"	Depreciation :			"	Hire of Society's Hall		6,500
	Library Books	2,270					

© The Institute of Chartered Accountants of India

	Furniture & Fittings	785		"	Interest on Investment Received	5,500	
	Building	13,750	17,805		*Add* : Accrued	450	5,950
"	Excess of income Over Expenditure		21,870	"	Sundry Receipts		600
			55,150				55,150

Balance Sheet of Bharat Education Society as on 31st Dec., 2008

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
Capital Fund	3,89,150		Building cost	2,75,000	
Add : Excess of Income over Expenditure	21,870	4,11,020	*Less* : Depreciation	13,750	2,61,250
Investment Res. Fund		15,000	Furniture & Fittings	12,500	
Prize Trust Fund	16,000		*Add* : Additions		
Incomeless Prizes	200	16,200	during the year	3,200	
Capital Reserve		18,000		15,700	
Subscription received			*Less* : Depreciation	785	14,915
in advance		500			
Salaries Outstanding		1,800			
Sundry Creditors		14,500	Library Books	17,500	
			Add : Additions		
			during the year	4,300	
				21,800	
			Less : Depreciation	3,270	18,530
			General Investment (M.V. Rs. 1,30,000)		1,50,000
			Interest Accrued		450
			Sundry Debtors		5,000
			Prize Trust Investments		15,800
			Prize Fund cash at Bank		275
			Cash at Bank		5,550
			Cash in Hand		300
			Subscription due		4,500
			Taxes & Insurance prepaid		500
		4,77,020			4,77,020

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **2**

नीचे दिये गये रिपब्लिक कॉलेज के शेष एवं मदों से 31.03.2008 को आय-व्यय खाता तथा तुलन पत्र बनाइये—

	₹	₹
सेमिनार एवं कॉन्फ्रेन्स प्राप्ति		4,80,000
परामर्श से प्राप्ति		1,28,000
विद्यार्थी प्रतिभूति जमा		1,50,000
पूँजी कोष		16,06,000
खोज कोष		8,00,000
भवन कोष		25,00,000
भविष्य निधि		5,10,000
शिक्षण शुल्क प्राप्त		8,00,000
सरकारी अनुदान		5,00,000
दान		50,000
निवेश पर लाभ और लाभांश		1,85,000
हॉस्टल कमरा किराया		1,75,000
मैस प्राप्ति (शुद्ध)		2,00,000
कॉलेज भण्डार विक्रय		7,50,000
अदत्त व्यय		2,25,000
भण्डार एवं पूर्तिओं का रहतिया		3,00,000
भण्डार एवं पूर्तिओं का क्रय		8,00,000
शिक्षण वेतन		8,50,000
खोज	1,20,000	
छात्रवृत्ति		8,00,000
विद्यार्थीयों कल्याण खर्च		38,000
मरम्मत और रख-रखाव व्यय		1,12,000
खेल-कूद का व्यय		50,000
विभिन्न व्यय		65,000
खोज कोष निवेश		8,00,000
अन्य निवेश		18,50,000
भविष्य निधि निवेश		5,10,000
सेमिनार एवं कॉन्फ्रेस व्यय		4,50,000
परामर्श शुल्क		28,000
भूमि		1,00,000
भवन	1,60,000	

© The Institute of Chartered Accountants of India

संयत्र व उपक्रम	8,50,000	
उपस्कर एवं उपयुक्त वस्तु	60,000	
मोटर गाड़ी	1,80,000	
ह्रास के लिए प्रावधान		4,80,000
संयत्र एवं उपक्रम		5,10,000
उपस्कार एवं उपयुक्त वस्तु		3,36,000
शेष अधिकोष में	6,42,000	
पुस्तकालय	3,60,000	
	1,03,85,000	1,03,85,000

समायोजन—

		₹
(1)	सामग्री एवं आपूर्तियों का उपभोग	50,000
	खोज	1,50,000
	विद्यार्थी कल्याण	75,000
	खेल और कूद	25,000
(2)	पिछड़े वर्गों के छात्रों की छात्रवृत्ति के लिए सरकार से प्राप्त शिक्षण शुल्क	80,000
(3)	भण्डार का बिक्री मूल्य इस प्रकार तय किया गया है 10% शुद्ध लाभ हो।	
(4)	सीधी रेखा पद्धति से निम्नलिखित दरों पर ह्रास लगाया जायेगा।	
	भवन	5%
	संयन्त्र एवं उपक्रम	10%
	उपस्कर एवं उपयुक्त वस्तु	10%
	मोटर गाड़ी	20%

Republic College

Income and Expenditure Account

for the year ending at 31st March, 2008

Expenditure	₹	₹	*Income*	₹	₹
To Salaries: Teaching		8,50,000	By Tuitions & other Fees		8,80,000
Research		1,20,000			
" Meterial & Supplies Consumed :			" Govt. Grants		5,00,000
Teaching		50,000	" Income from		
Research		1,50,000	Investments		1,85,000
			" Hostel Room Rent		1,75,000
" Repairs & Maintenance		1,12,000	" Mess Receipts		2,00,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

"	Sports & Games Exp :			"	Profit on stores sales		75,000
	Cash	50,000		"	Seminar and Conferences :		
	Materials	20,000	75,000		Income	4,80,000	
					Less: Exp.	4,50,000	30,000
To	Students Welfare Exp.						
	Cash	38,000		"	Consulatancy charges:		
	Materials	75,000	1,13,000		Income	1,28,000	
					Less: Exp.	28,000	
"	Misc. Expenses		65,000				1,00,000
"	Scholarships		80,000	"	Donations		50,000
"	Depreciation						
	Building		80,000				
	Plant & Equipment		85,000				
	Furniture		60,000				
	Motor Vehicle		36,000				
"	Excess of Income over Expenditure		3,19,000				
			21,95,000				21,95,000

REPUBLIC COLLEGE

Balance Sheet as on 31st March, 2008

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
			Fixed Assets :		
Capital fund			Land		1,00,000
Opening balance	16,06,000		Building cost	16,00,000	
Add: Excess of Income over Expenditure	3,19,000	19,25,000	*Less:* Dep.	5,60,000	
Other Funds					10,40,000
Research Fund		8,80,000	Equipment		
Building Fund		25,00,000	Cost	8,50,000	
			Less : Dep.	5,95,000	2,55,000
Current Liabilities:					
Outstanding Exp.		2,25,000	Furniture & Fittings:		
Provident Fund		5,10,000	Cost	6,00,000	
Security Deposit		1,50,000	*Less*: Dep.	3,96,000	
					2,04,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

	Motor Vehicles		
	Cost :	1,80,000	
	Less: Dep.	36,000	
			1,44,000
	Library		3,60,000
	Investments :		
	Capital Fund Investments		18,50,000
	Research Fund Investments		8,00,000
	P.F. Investment		5,10,000
	Stock :		
	Material & Supplies		1,25,000
	Grants Receivable		80,000
	Cash in hand & at Bank		6,42,000
61,10,000			61,10,000

Working Notes—

		₹	₹
(1)	*Material & Supplies : Closing Stock*		
	Opening Stock		3,00,000
	Purchases		8,00,000
			11,00,000
	Less : Cost of Sales	6,75,000	
	Consumed	3,00,000	9,75,000
	Balance		1,25,000

(2) *Provisions for Depreciation*

	Building	*Plant & Equipment*	*Furniture & Fitting*
	₹	₹	₹
Opening Balance	4,80,000	5,10,000	3,36,000
Addition	80,000	85,000	60,000
Closing Balance	5,60,000	5,95,000	3,96,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

2.3 कोष खाते रखने की तकनीक (Technique of Maintaining Fund Accounts)—

गैर व्यापारिक संस्थान, सामान्यतः शिक्षण संस्थान, हमेशा विशिष्ट गतिविधियों जैसे–खेल-कूद, पुरस्कार, स्वल्पाहार आदि के लिए पृथक से खाते और कोष रखते हैं और इनका वित्तीय विवरणों में प्रस्तुति कोष आधार पर करते हैं। कॉलेज तथा विश्वविद्यालय जैसी संस्थाओं में प्रत्येक कोष के लिए पृथक लेजर रखे जाते हैं। यह कोष लेजर स्वभावतः स्वकीय संतुलित होते हैं एक कोष स्थायी सम्पत्तियों के क्रय, अधिग्रहण अथवा निर्माण के लिए या संगठन की किसी विशिष्ट गतिविधि के लिए या दोनों के लिए बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, एक भवन कोष भवनों के क्रय, अधिग्रहण अथवा निर्माण के लिए बनाया जा सकता है। भवनों के निर्माण या अधिग्रहण के सम्बन्ध में सभी प्राप्तियाँ मुख्य खातों से पृथक कर ली जाती है तथा भवन कोष में दिखाई जाती है। भवनों के निर्माण तथा अधिकग्रहण के उद्देश्य हेतु किए गए किसी भी व्यय को इसी खाते से किया जाता है। जब भवन अन्ततः अधिग्रहित या निर्मित होता है तो सामान्य चिट्ठे में सम्पत्ति की मान्यता ली जाती है और फलस्वरूप भवनकोष का वह भाग जो भवन के अधिग्रहण अथवा निर्माण में काम आ चुका है, सामान्य कोष को अन्तिरित कर दिया जाना चाहिए। ऐसे कोषों पर ह्रास केवल उनके पूर्णता या अधिग्रहण के बाद लगाया जाता है।

इसी प्रकार से, उपकरण, स्थायी सम्पत्तियों की भारी मरम्मतों के व्यय और अन्य विकास गतिविधियों के लिए पृथक कोष बनाए जाते हैं।

उदाहरण (Illustration) **3**

नॉयडा स्कूल पृथक से भवन कोष बनाता है। 31.3.2007 को भवन कोष का शेष ₹ 10,00,000 था और यह ₹ 6,00,000 की स्थायी जमा (15%) प्रस्तुत करती हैं और चालू खाते का शेष ₹ 4,00,000 है। वर्ष 2007-08 के दौरान स्कूल ने दान प्राप्त कियेः भवन कोष ₹ 5,60,000 और विकास शुल्क का 40%, ₹ 22,56,500 भवन कोष में अंतरित कर दिया। पूँजी चालूकार्य 31.03.2007 को ₹ 8,25,000 था जिसके ठेकेदार के बिल का 70% भुगतान 14.04.2008 तक किया गया था। भवन विस्तार का कार्य 31.12.008 को समाप्त हुआ जिसकी लागत ₹ 7,25,000 थी जिसके लिये ठेकेदार को पूर्णः भुगतान कर दिया गया है। तैयार भवन की लागत (₹ 15,50,000) को सम्बन्धित सम्पत्ति खाते में अन्तरित करने का निर्णय लिया है। आपसे अपेक्षित है कि उपरोक्त व्यवहारों को सम्मिलित करते हुये। 2007 08 वर्ष हेतु Noida School की पुस्तकों में उपरोक्त व्यवहारों को समामेलित करते हुये जनरल प्रविष्टियाँ पारित करना एवं भूमि कोष खाता बही का तलपट दर्शाना।

समाधन (Solution)

Journal Entries for Building Fund Ledger

			₹	₹
(1)	Bank A/c	Dr.	5,60,000	
	To Building Fund A/c			5,60,000
	(On collection of donations)			
(2)	Bank A/c	Dr.	9,02,600	
	To Building Fund A/c			9,02,000
	(40% of the development fees directly transferred to building fund)			

© The Institute of Chartered Accountants of India

(3)	Fixed deposit A/c	Dr.	90,000	
	To Interest A/c			90,000
	(on accrual of interest)			
(4)	Interest A/c	Dr.	90,000	
	To Building fund			90,000
	(Interest accrued on fixed deposit transferred)			
(5)	Capital Work in Progress A/c	Dr.	7,25,000	
	To Contractor's A/c			7,25,000
	(Work completed and certified during the year)			
(6)	Contractor's A/c	Dr.	13,43,750	
	To Bank A/c			13,43,750
	(Payments made during the year)			
(7)	Building A/c	Dr.	15,50,000	
	To Capital Work in Progress A/c			15,50,000
	(Transfer of completed buildings to Asset A/c)			
(8)	Building Fund A/c	Dr.	15,50,000	
	To General Fund A/c			15,50,000
	(Corresponding building fund transferred)			

Trial Balance of Building Fund as on 31st March, 2008

	Dr	Cr
	₹	₹
Building Fund		10,02,600
Contractor's A/c		2,06,250
Fixed Deposit A/c	6,90,000	
Current A/c	5,18,850	—
	12,08,850	12,08,850

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश

(SUMMARY)

- शैक्षणिक संस्थान दूसरे गैर-व्यापारिक संगठनों से निम्न होते हैं क्योंकि यह अपनी आय का स्रोत चुनने के लिए तथा लेखांकन वर्ष चुनने के लिए स्वतन्त्र होते हैं।

स्व-परीक्षा प्रश्न

(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Answer Type Questions)

1. स्कूल के आय व्यय खाते में निम्नलिखित ऋणी होंगे :
   - (i) सरकार द्वारा हरिजन विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति कोष में स्वीकृत बाँटा गया धन।
   - (ii) वार्षिक समारोह पर उपहार।
   - (iii) भौगोलिक कक्षाओं के लिए मानचित्र की लागत।
   - (iv) खेल के मैदान में पवेलियन के निर्माण की लागत।
   - (v) खेल कोष में से बल्ला, हॉकी, डण्डे, इत्यादि का क्रय।
   - (vi) प्रयोगशाला खर्चे।

   [**उत्तर** (Answer)—केवल (ii) तथा, (vi) ऋणी होंगे, (iii) तथा, (iv) पर ह्रास भी]
2. सोसायटी के आय-व्यय खाते में चालू वर्ष के निम्नलिखित दशाओं में खर्चे ऋणी/धनी होंगे बताइये—
   - (i) राज्य सरकार से स्वीकृत योजना के खर्च।
   - (ii) प्रतिनिधि को पश्चिम जर्मनी भेजने का खर्च।
   - (iii) परीक्षा पुस्तक के प्रकाशन के लिए कम कीमत के प्राप्त अनुदान।
   - (iv) सोसायटी के जर्नल में विज्ञापन से एकत्रित।
   - (v) पुरस्कार कोष में से पुरस्कार वितरण।
   - (vi) चन्दा वसूली जो गत वर्ष में अपलिखित है।
   - (vii) पुरस्कार कोष के निवेश पर ब्याज।

   [**उत्तर** (Answer)—(v) और (vii) शामिल नहीं होंगे]
3. दिए गये विकल्पों से अधिक उपयुक्त उत्तर चुनिये—
   - (i) शिक्षण संस्थाओं को चलाने के लिए मुख्य वित्तीय स्रोत हैं—
     - (a) दान
     - (b) प्रवेश शुल्क
     - (c) सरकारी
     - (d) उपर्युक्त सभी

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ii) कोष खाताबही हैं—

(a) स्वकीय सन्तुलन

(b) विभागीय सन्तुलन

(c) उच्चंत खाते की सहायता से शेष

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

[उत्तर (Answer)— (i) (d), (ii) (a)]

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

भेद बताइए—

4. कोष तथा संचयों में।
5. प्रवेश शुल्क तथा सदस्यता चन्दा।
6. सामान्य कोष के लिए दान तथा विशिष्ट कोष के लिए दान।
7. प्राप्तियाँ और आय।
8. भुगतान तथा खर्चे।
9. कोष आधारित लेखांकन का क्या आशय है ? संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

10. शिक्षण संस्थान चलाने के लिए वित्त के मुख्य स्रोतों का वर्णन कीजिए।
11. स्कूल के आय तथा व्यय खाता तथा आर्थिक चिट्ठा तैयार करने की तकनीक का वर्णन कीजिए।

IV. क्रियात्मक प्रश्न (Practical Problems)

12. नीचे दी गई जानकारी से, 2008 के लिये चन्दे के सम्बन्ध में आय एवं व्यय खाते में जमा की जाने वाली राशि सुनिश्चित करें—

	₹
नकद में प्राप्त चन्दा	33,500
अग्रिम चन्दा 31.12.2007 के लिये	2,500
अदत्त चन्दा 31.12.2007 के लिये	3,000
अदत्त चन्दा 31.12.2008 के लिये	2,000
अग्रिम चन्दा 31.12.2008 के लिए	500

13. निम्नलिखित आय-व्यय खाता Able Accountants Soliety द्वारा बनाया गया—

		₹	₹			₹	₹
To	शेष आगे लाया गया		8,000	By	वेतन :		
					भुगतान	7,200	
					अदत्त	800	8,000
To	चंदाः						
	प्राप्त	26,000		By	स्टेशनरी :		
	देय	1,500	27,500		क्रय	1,100	
					घटायाः स्कन्ध	200	900

© The Institute of Chartered Accountants of India

To	पुरानी किताबें का विक्रय (लागत ₹ 300)	800	By मनोरंजन की लागत	7,500
To	ब्याज प्राप्त एवं देय	1,200	By किताबें भेजी पुस्तकालय में	1,700
			By पत्रिकाएँ	900
			By किराया	5,000
			By व्याख्यानों की लागत	4,000
			By शेष आगे ले जाया गया	9,500
		37,500		37,500

खाते की तैयारी में त्रुटियों को इंगित करते हुए इसकी आलोचना करें।

© The Institute of Chartered Accountants of India

© The Institute of Chartered Accountants of India

10

अपूर्ण अभिलेखों से खाते

(ACCOUNTS FROM INCOMPLETE RECORDS)

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत, आप सक्षम हो जायेंगे—

- **स्थिति विवरण के माध्यम से समय के दो विभिन्न बिन्दुओं पर पूँजी की गणना कैसे करें, को सीखने में।**
- **समय के दो विभिन्न बिन्दुओं पर पूँजी की तुलना द्वारा लाभ निर्धारण की तकनीकी समझने में।**
- **स्वामी/साझेदार नई पूँजी। विनियोजन एवं आहरण को कैसे समायोजित करें, को समझने में।**
- **बिक्री की लागत या क्रय ज्ञात करने में मानक सकल लाभ अनुपात का प्रयोग कैसे किया जाता है, को समझने में।**
- **क्रय तथा रहतिया दिये होने पर सकल लाभ अनुपात का प्रयोग करके बिक्री को कैसे ज्ञात किया जाता है, को समझने में।**
- **सकल लाभ अनुपात का प्रयोग करके एवं प्रविष्टि हेतु समायोजन द्वारा बिक्री कैसे ज्ञात करें, को समझने में।**

1. परिचय

(INTRODUCTION)

बहुदा, छोटे एकाकी व्यापारी एवं साझेदारी व्यवसायी दोहरा लेखा पुस्तपालन प्रणाली को नहीं रखते हैं। कभी–कभी वे सिर्फ नगद व्यवहारों एवं उधार व्यवहारों का ही अभिलेख रखते हैं। कभी–कभी वे कई व्यवहारों का अभिलेखन नहीं करते हैं, परन्तु लेखाकंन अवधि के अन्त में वे अपने व्यवसाय की क्षमता एवं वित्तीय स्थिति को जानना चाहते हैं, जो कि लेखाकारों के लिये कुछ विशिष्ट समस्या उत्पन्न करता है। इस अध्ययन में हम चर्चा करेंगे कि उपलब्ध अपूर्ण लेखों द्वारा खाते कैसे पूर्ण किए जाते हैं। "इकहरा लेखा प्रणाली" मद को प्रचलित तौर पर अपूर्ण अभिलेखों से खातों की

© The Institute of Chartered Accountants of India

समस्याओं को समझाने में प्रयोग किया जाता है। यहाँ तथ्य अनुसार इकहरा लेखा प्रणाली जैसी कोई प्रणाली होती ही नहीं है। व्यवहार में स्व कथित लेखाकारों द्वारा कुछ मिश्रित विधियों का भी पालन किया जाता है। ये कुछ व्यवहारों के लिये दोहरा प्रविष्टियों को पूर्ण करते हैं तथा कुछ अन्य व्यवहारों के लिये ये केवल एक प्रविष्टि रखते हैं। साथ ही कुछ अन्यों के लिये कोई भी प्रविष्टि पारित नहीं करते हैं। यह लेखांकन की कोई प्रणाली नहीं है। संक्षेप में इसको अपूर्ण अभिलेखों के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। लेखाकार का नियत कार्य उपलब्ध सूचनाओं एवं खातों के अंतिम रूप के मध्य सम्बन्ध स्थापित करना है।

1.1. लक्षण (Features)

- यह व्यावसायिक व्यवहारों की अभिलेखन की एक अशुद्ध, अवैज्ञानिक एवं अव्यवस्थित विधि है।
- सामान्यतः यहाँ वस्तुगत तथा नाममात्र खातों के अभिलेखन नहीं होते हैं, अधिकतर दशाओं में नगद व्यवहारों एवं व्यक्तिगत खातों के अभिलेखे रखे जाते हैं।
- रोकड़ पुस्तक में व्यावसायिक एवं स्वामी के व्यक्तिगत व्यवहारों का मिश्रण होता है।
- यहाँ अभिलेखों को रखने में एकरूपता नहीं होती है तथा प्रत्येक फर्म की आवश्यकताओं और सुविधाओं की निर्भरता पर अलग–अलग फर्मों में यह प्रणाली पृथक हो सकती है।
- इस प्रणाली के अंतर्गत लाभ का एक सिर्फ अनुमान होता है तथा उसके लिये सत् एवं उचित लाभ का निर्धारण नहीं किया जा सकता है। उचित आर्थिक चिट्ठे की अनुपस्थिति में वित्तीय विवरण के साथ भी ठीक यही दशा होती है।

2. प्रकार
(TYPES)

इकहरा लेखा प्रणाली के अन्तर्गत अभिलेखों को रखने में अपनायी गई कई प्रक्रियाओं की छानबीन (Scrutiny) के तहत निम्नलिखित तीन प्रकार के अस्तित्व में आते हैं।

(i) **शुद्ध इकहरा लेखा**— इसमें केवल, व्यक्तिगत खातों को उनके परिणामों के साथ रखा जाता है, तथा रोकड़ एवं अधिकोष शेषों, विक्रय एवं क्रय आदि के सम्बन्ध में सूचनायें उपलब्ध नहीं होती हैं। एक दृष्टि में या रोकड़ सम्बन्धित आधार सूचनाओं को भी उपलब्ध कराने में विफल होता है, यह विधि सिर्फ कागजों पर ही मौजूद होती है एवं इसका कोई व्यावहारिक उपयोग नहीं है।

(ii) **सामान्य इकहरा लेखा**— इसमें सिर्फ (अ) व्यक्तिगत खातों तथा (ब) रोकड़ पुस्तक ही रखी जाती है। यद्यपि यह खाते दोहरा लेखा प्रणाली के आधार पर रखे जाते हैं, रोकड़ पुस्तक से सिर्फ व्यक्तिगत खातों की खतौनी की जाती है तथा अन्य खाते खाताबही में नहीं पाये जाते हैं। देनदारों से प्राप्त रोकड़ या लेनदारों को चुकता रोकड़ को सामान्य रूप से निर्गमित या प्राप्त विपत्रों पर जैसी भी दशा हो पर सामान्य रूप से लिखा जाता है।

(iii) **अर्द्ध एकल लेखा**— इसमें, (अ) व्यक्तिगत खातों, (ब) रोकड़ पुस्तक, और (स) कुछ सहायक पुस्तकों को रखा जाता है। इस प्रणाली के अन्तर्गत मुख्य रूप से रखी जाने वाली सहायक पुस्तकें विक्रय पुस्तक बही, क्रय पुस्तक (बही), विपत्र पुस्तक (बही) है। बट्टे के लिये कोई पृथक

© The Institute of Chartered Accountants of India

अभिलेख नहीं रखा जाता है जो कि व्यक्तिगत खाते में प्रविष्ट हो चुका है। इसके साथ ही व्ययों की कुछ महत्वपूर्ण मदों; जैसे कि मजदूरी, किराया, दर आदि के सम्बन्ध में भी कुछ बिखरी हुई सूचनायें उपलब्ध होती हैं, वास्तव में, यह वह विधि है जिसे दोहरा लेखा प्रणाली के प्रतिस्थापन हेतु सामान्यता अपनाया जाता है।

3. पूँजी तुलना द्वारा लाभ ज्ञात करना

(ASCERTAINMENT OF PROFIT BY CAPITAL COMPARISON)

यह विधि शुद्ध मूल्य विधि या स्थिति विवरण विधि के रूप में भी जानी जाती है।

अंतिम पूँजी – प्रारम्भिक पूँजी = लाभ

यदि आगम एवं व्ययों के सम्बन्ध में विस्तृत सूचनाओं की जानकारी न हो, तो यहाँ लाभ एवं हानि खाता तैयार करना मुश्किल हो जाता है। इसके स्थान पर सम्पतियों एवं दायित्वों के सम्बन्ध में सूचनाओं के संग्रहण द्वारा, यहाँ सरलतापूर्वक समय के दो विभिन्न बिन्दुओं पर आर्थिक चिट्ठा तैयार किया जा सकता है। इसलिये इकहरे लेखों से खाते तैयार करने हेतु यदि पर्याप्त सूचनायें उपलब्ध न हों, तो यह बेहतर है कि पूँजी तुलना की विधि का अनुसरण कर लाभ की राशि पर पहुँचा जाये।

3.1 पूँजी तुलना की विधियाँ (Methods of Capital Comparison)

पूँजी में वृद्धि होती है यदि यहाँ लाभ है, तब पूँजी में कमी आती है यदि यहाँ हानि है। फिर भी यदि स्वामी/साझेदार व्यवसाय में नया विनियोजन करते हैं, पूँजी बढ़ती हैं, यदि यह आहरण करते हैं तो पूँजी घटती है; इसलिये जब पूँजी तुलना द्वारा लाभ ज्ञात करना हो तो निम्नलिखित नियमों का अनुसरण करना चाहिये :

विवरण	₹
अंतिम पूँजी × × ×	
जोड़े—आहरण	× × ×
घटायें—नई पूँजी विनियोजन	(× × ×)
प्रारम्भिक पूँजी	(× × ×)
लाभ	× × ×

उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि पूँजी तुलना विधि के पालन हेतु प्रारम्भिक पूँजी एवं अंतिम पूँजी की जानकारी होनी चाहिये। इन्हें दो सम्बन्धित समय बिन्दुओं पर स्थिति विवरण की तैयारी द्वारा निर्धारित करना चाहिये। पूँजी हमेशा **सम्पत्तियों–दायित्वों** के समान होती है।

इस प्रकार स्थिति विवरणों को तैयार करने हेतु सम्पत्तियों एवं दायित्वों एवं उनकी राशियों की सूची की आवश्यकता होती है। व्यावसायिक उपक्रम की सम्पत्तियों एवं दायित्वों को ज्ञात करने व उद्देश्य हेतु, लेखाकार निम्नलिखित सूत्रों का प्रयोग करते हैं :

(i) रोकड़ शेष हेतु रोकड़ पुस्तक

(ii) अधिकोष (Bank) शेष हेतु बैंक पास बुक

(iii) देनदारों तथा लेनदारों हेतु व्यक्तिगत खाते

(iv) रहतियाँ वास्तविक गणना एवं मूल्याकंन द्वारा

© The Institute of Chartered Accountants of India

(v) स्थायी सम्पत्तियों के सम्बन्ध में व उसकी एक सूची तैयार करते हैं। वास्तविक लागत तथा क्रय तिथि का खुलासा करने में व्यवसाय का स्वामी उनकी मदद करता है। ह्रास की उचित राशि को घटाने के बाद, अपलिखित या ह्रासित मूल्य को स्थिति विवरण में शामिल किया जायेगा। सम्पत्ति सम्पत्तियों एवं दायित्वों के सम्बन्ध में सभी आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् लेखाकार का अगला नियत कार्य (task) समय के दो विभिन्न बिन्दुओं पर स्थिति विवरण तैयार करना है। स्थिति विवरण की रूपरेखा (Design) चिट्ठे की आर्थिक चिट्ठे की तरह ही होती है जैसा कि आगे दिया गया है।

..... पर स्थिति विवरण

दायित्वों	₹	सम्पतियों	₹
पूँजी (बकाया राशि)	×××	भवन	×××
ऋण, अधिकोष, अधिविकर्ष	×××	यन्त्र	×××
विविध लेनदार	××	उपस्कर (फर्नीचर)	×××
देय विपत्र	××	रहतिया (स्टॉक)	×××
		विविध देनदार	××
		प्राप्त विपत्र	××
		ऋण एवं अग्रिम	××
		रोकड़ तथा बैंक शेष	××
	×××		×××

अब दो विभिन्न तिथियों हेतु तैयार किये गये स्थिति विवरण से, प्रारम्भिक एवं अंतिम पूँजी शेषों को प्राप्त किया जा सकता है। ये पूँजी शेष उपरोक्त स्थिति विवरणों में बकाया राशि के रूप में दर्शाये गये हैं।

3.2. स्थिति विवरण एवं आर्थिक चिट्ठे के मध्य अन्तर (Difference between Statement of Affairs and Balance Sheet)—

आधार	*स्थिति विवरण*	*आर्थिक चिट्ठा*
विश्वसनीयता	यह अंशतः दोहरा लेखा पुस्तपालन के आधार पर एवं अंशतः इकहरा मूल्य के आधार पर अभिलेखित सौदों के आधार पर तैयार किया जाता है। ज्यादातर सम्पतियाँ अनुमानों, अभिलेखों की बजाय स्मृति में एकत्रित अनुमानों, पूर्वधारित सूचनाओं पर अभिलेखित होती हैं।	यह दोहरा लेखा पुस्तपालन के आधार पर अचूक अभिलेखों पर आधारित है। आर्थिक चिट्ठे की प्रत्येक मद सम्बन्धित सहायक पुस्तकों एवं खाताबाही से सत्यापित हो सकती है। इसलिये आर्थिक चिट्ठा केवल विश्वसनीय (Reliable) ही नहीं बल्कि भरोसेमन्द (Dependable) भी है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

पूँजी	इस विवरण में पूँजी महज सम्पत्तियों के दायित्वों पर आधिक्य द्वारा बकाया शेष के रूप में है। इसलिये सम्पतियों को दायित्वों के समान होने की जरूरत नहीं होती है।	पूँजी खाताबही में पूँजी खाते द्वारा निकाली जाती है तथा इसलिये सम्पत्ति पत्र का योग हमेशा दायित्व पत्र के योग के बराबर होगा।
चूक	चूंकि यह विवरण अपूर्ण अभिलेखों के आधार पर तैयार किया जाता है तो सम्पत्ति एवं दायित्वों को उस दशा में ढूंढ़ना बेहद कठिन है, जब यह पुस्तकों से लोप हो जाये।	यहाँ सम्पतियों एवं दायित्वों के लोप हो जाने की कोई संभावना नहीं है क्योंकि सभी मदों का यथोचित अभिलेख किया जाता है। इसके अलावा यदि आर्थिक चिट्ठा एक मत (agree) न हो रहा हो तो लापता मद को ढूँढ़ना सरल है।
मूल्यांकन का आधार	आमतौर पर सम्पत्तियों का मूल्यांकन मनमाने तरीके से किया जाता है। इसलिये मूल्यांकन की विधि प्रदर्शित नहीं होती है।	सम्पत्तियों का मूल्यांकन वैज्ञानिक आधार पर किया जाता है यानि कि नई सम्पत्ति की दशा में वास्तविक लागत तथा लागत– सम्पत्ति प्रयोग हेतु तिथि तक पर ह्रास के आधार पर ह्रासित राशि/ यदि मूल्यांकन की विधि में कोई परिवर्तन होता है तो इसे यथोउचित तरीके से प्रचलित किया जा सकता है।
उद्देश्य	इस विवरण को तैयार करने का उद्देश्य क्रमशः लेखांकन अवधि के प्रारम्भ एवं अन्त पर पूँजी आकड़ों की गणना करना है।	आर्थिक चिट्ठे को तैयार करने का उद्देश्य एक निश्चित तिथि पर वित्तीय स्थिति को ज्ञात करना है।

3.3. स्थिति विवरण तैयार करना एवं लाभ का निर्धारण (Preparation of Statement of Affairs and Determination of Profit)

पैरा 3.1 में यह चर्चा की गई है कि संग्रहित सम्पतियों एवं दायित्वों के आँकड़ों से स्थिति विवरण तैयार करना चाहिये। इसका एक उदाहरण आगे दिया गया है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **1**

31.12.2007 तथा 31.12.2008 पर Mr. X की सम्पत्तियाँ एवं दायित्व निम्नांकित हैं

विवरण	31.12.2007	31.12.2008
सम्पत्तियाँ	**₹**	**₹**
भवन	1,00,000	—
उपस्कर (फर्नीचर)	50,000	—
रहतिया (स्टॉक)	1,20,000	2,70,000
विविध देनदार	40,000	90,000
अधिकोष रोकड़	70,000	85,000
हतस्थ रोकड़	1,200	3,200
दायित्व		
ऋण	1,00,000	80,000
विविध लेनदार	40,000	70,000

भवन को 2.5% तथा उपस्कर को 10% के द्वारा ह्रासित करने का निर्णय लिया। व्यवसाय के स्वामी की एक जीवन बीमा पॉलिसी वर्ष के दौरान परिपक्व हुई तथा ₹ 40,000 की राशि व्यवसाय में रखी हुई है। व्यवसाय का स्वामी परिवार खर्चे की प्रतिपूर्ति हेतु ₹ 2,000 प्रति माह लेता है। स्थिति विवरण तैयार करें।

समाधान (Solution)

Statement of Affairs as on 31-12-2007 & 31-12-2008

Liabilities	31.12.2007	31.12.008	*Assets*	31.12.2007	31.12.2008
	₹	**₹**		**₹**	**₹**
Capital	2,41,200	4,40,700	Building	1,00,000	97,500
(Balancing Figures)			Furniture	50,000	45,000
Loans	1,00,000	80,000	Stock	1,20,000	2,70,000
Sundry Creditors	40,000	70,000	Sundry		
			Debtors	40,000	90,000
			Cash at Bank	70,000	85,000
			Cash in Hand	1,200	3,200
	3,81,200	**5,90,700**		**3,81,200**	**5,90,700**

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **2**

उदाहरण (1) में दिये गये आँकड़ों को लेकर Mr. X का लाभ ज्ञात करें।

समाधान (Solution)

Determination of Profit by Applying the method of the capital comparison.

	₹
Capital Balance as on 31-12-2008	4,40,700
Less : Fresh Capital introduced	40,000
	4,00,700
Add : Drawing (2000 × 12)	24,000
	4,24,700
Less : Capital Balance as on 31-12-2007	2,41,200
Profit	1,83,500

टिप्पणी—

- नई विनियोजित पूँजी के कारण अंतिम पूँजी बढ़ी है इसलिये इसे घटाया जायेगा।
- व्यवसाय के स्वामी के आहरण के कारण अंतिम पूँजी घटी थी, इसलिये इसे जोड़ा जायेगा।

उदाहरण (Illustration) **3**

A तथा B, 2 : 1 लाभ बंटबारा अनुपात हेतु साझेदारी में हैं। उनकी सम्पत्ति एवं दायित्वों के सम्बन्ध में निम्नलिखित सूचनायें उपलब्ध हैं—

विवरण	31.03.2007	31.03.2008
	₹	₹
उपस्कर	1,20,000	
अग्रिम	70,000	50,000
लेनदार	32,000	30,000
देनदार	40,000	45,000
रहतिया	60,000	74,750
ऋण	80,000	—
अधिकोष में रोकड़	50,000	1,40,000

साझेदार 2,000 प्रतिमाह की दर से वेतन पाने के अधिकारी हैं। ये समानुपातिक रूप से पूँजी अंशदान करते है। पूँजी पर ब्याज 6% की दर से चुकाना तथा आहरण पर 10% की दर से प्रभारित करना है।

A तथा B के आहरण

	A	B
अप्रैल 30	2,000	—
मई 31	—	2,000
जून 30	4,000	—

© The Institute of Chartered Accountants of India

सितम्बर	—	6,000
दिसम्बर 31	2,000	—
फरवरी 28	—	8,000

30 जून पर, वे C को 1/3 के लिये साझेदार बना लेते हैं जो ₹ 75,000 अंशदान करता है। C 9 माह के लाभ के हिस्से को पाने का अधिकारी है या लाभ अनुपात 1 : 1 : 1 होगा। A अपने समानुपात हिस्से को आहरित करता है। उपस्कर को 10% प्रतिवर्ष से ह्रासित करना है, ₹ 10,000 की नयी क्रय पर वर्ष के 1/4 हेतु ह्रासित होगी।

31 मार्च 2007 पर चालू खाते हैं A ₹ 5,000 (जमा), B ₹ 2,000 (नाम)

लाभ का विवरण साझेदारों के चालू खाते एवं 31.03.2008 पर स्थिति विवरण तैयार करें।

समाधान (Solution)

Statement of Affairs

As on 31-3-2007 & 31-3-2008

Liabilities	*31-3-2007*	*31-3-008*	*Assets*	*31-3-2007*	*31-3-2008*
	₹	**₹**		**₹**	**₹**
Capital A/cs					
A	1,50,000	75,000	Furniture	1,20,000	1,17,750
B	75,000	75,000	Advances	70,000	50,000
C	—	75,000	Stock	60,000	74,750
Loan	80,000	—	Debtors	40,000	45,000
			Cash at Bank	50,000	1,40,000
Creditors	32,000	30,000	Current A/c		
			B	2,000	—
Current A/cs					
A	5,000	74,036*			
B	—	48,322*			
C	—	50,142*			
	3,42,000	**4,27,500**		**3,42,000**	**4,27,500**

* चालू खाता देखें

* **टिप्पणियाँ** :

(i) **उपस्कर पर ह्रास** **₹**

1,20,000 पर 10%	12,000
वर्ष के 1/4 हिस्से हेतु ₹10,000 10%	250
	12,250

© The Institute of Chartered Accountants of India

(ii) **31-3-2008 पर उपस्कर**

	₹
31-3-2007 पर शेष	1,20,000
जोड़े : नई क्रय	10,000
	1,30,000
घटाये : ह्रास	12,250
	1,17,250

(iii) **31-3-2008 का चालू खातों का योग**

	₹
सम्पत्तियों का योग	4,27,500
घटाये : स्थायी पूँजी + दायित्व	2,55,000
	1,75,500

यह वेतन तथा पूँजी पर ब्याज को जोड़कर आहरण एवं आहरणों पर ब्याज को घटाकर है।

(iv) **पूँजी पर ब्याज** :

	₹		₹
A =	1,50,000 पर	3 माह हेतु 6% की दर से	2,250
	75,000 पर	9 माह हेतु 6% की दर से	3,375
			5,625
B =	75,000 पर	1 माह हेतु 6% की दर से	4,500
	75,000 पर	9 माह हेतु 6% की दर से	3,375
			7,875

(v) **आहरणों पर ब्याज :**

	₹		₹
A =	2,000 पर	11 माह हेतु 10% की दर से	183
	4,000 पर	9 माह हेतु 10% की दर से	300
	2,000 पर	3 माह हेतु 10% की दर से	50
			533

	₹		₹
B =	2,000 पर	10 साल हेतु 10% की दर से	167
	6,000 पर	6 माह हेतु 10% की दर से	300
	8,000 पर	1 माह हेतु 10% की दर से	67
			534

© The Institute of Chartered Accountants of India

लाभ का आबंटन		₹ 1,15,067
3 माह का लाभ		₹ 28,767
9 माह का लाभ		₹ 83,300
A : 2/3 × ₹ 28,767 + 1/3 ₹ 86,300	=	₹ 47,944
B : 1/3 × ₹ 1,15,067	=	₹ 38,356
C : 1/3 × ₹ 86,300	=	₹ 28,767
	=	₹ 1,15,067

Current Accounts

Dr. *Cr.*

	A	*B*	*C*		*A*	*B*	*C*
To Balance b/d	—	2,000	—	By Balance b/d	5,000	—	—
" Drawings	8,000	16,000	—	" Salary	24,000	24,000	18,000
" Interest on drawings	533	534	—	" Interest on capital	5,625	4,500	3,375
" Balance c/d	74,036	48,322	50,142	" Share of Profit	47,944	38,356	28,767
	82,569	66,856	50,142		82,569	66,856	50,142

Statement of Profit

			₹
Current Account Balances as on 31-3-2008			1,72,500
Less: Salary A ₹ 2,000 × 12	= ₹	24,000	
B ₹ 2,000 × 12	= ₹	24,000	
C ₹ 2,000 × 9	= ₹	18,000	(66,000)
Less: Interest on Capital	A ₹	5,625	
	B ₹	4,500	
	C ₹	3,375	(13,500)
Add: Drawings	A ₹	8,000	
	B ₹	16,000	24,000
" Interest on Drawings	A	533	
	B	534	1,067
			1,18,067
Less: Current A/c Balances as on 31-3-2007 Rs. 5,000 – Rs. 2,000			3,000
			1,15,067

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **4**

आयकर अधिकारी, वित्तीय वर्ष 2006-2007 और 2007-2008 के लिए श्री मोती की आय के निर्धारण में महसूस करता है कि श्री मोती ने अपनी पूर्ण आय का खुलासा नहीं किया है; वह आपको 1 अप्रैल, 2006 और 1 अप्रैल, 2008 को और श्री मोती की संपत्तियों एवं दायित्वों का निम्नलिखित विवरण देता है।

			₹
1-4-2006	सम्पत्तियाँ	हस्तस्थ रोकड़	25,500
		रहतिया	56,000
		विविध देनदार	41,500
		भूमि और भवन	1,90,000
		पत्नी के आभूषण	75,000
	दायित्व	मोती ब्रादर्स से उधार	40,000
		विविध लेनदार	35,000
1-4-2008	सम्पत्तियाँ	हस्तस्थ रोकड़	16,000
		रहतिया	91,500
		विविध देनदार	52,500
		भूमि एवं भवन	1,90,000
		मोटर कार	1,25,000
		पत्नी के आभूषण	1,25,000
		मोती ब्रादर्स को ऋण	20,000
	दायित्व	विविध लेनदार	55,000

पिछले 2 वर्षों के दौरान घरेलू व्यय प्रति माह ₹ 4,000 थे। 2006-07 की घोषित आय ₹ 10,500 और 2007-08 की ₹ 23,000 थी।

समाधान (Solution)

Capital A/c of Shri Moti

	1-4-2006		1-4-2008	
Assets	₹	₹	₹	₹
Cash in hand		25,500		16,000
Stock		56,000		91,500
Sundry Debtors		41,500		52,500
Land & Building		1,90,000		1,90,000
Wife's Jewellery		75,000		1,25,000
Motor Car		—		1,25,000
Loan to Moti's Brother		—		20,000
		3,88,000		6,20,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

दायित्व :

मोती ब्रादर्स से उधार :	40,000			
विविध लेनदार :	35,000	75,000	55,000	55,000
पूँजी		3,13,000		5,65,000

पिछले दो वर्षों के दौरान आय :

		₹
पूँजी 1-4-2008	5,65,000	
जोड़े : आहरण–घरेलू व्यय दो वर्षों के दौरान (4,000 × 24)		96,000
		6,61,000
घटाये : पूँजी 1-4-2006		3,13,000
कमाई गयी आय 2006-07 और 2007-08 वर्षों में		3,48,000
घोषित आय (1,05,000 + 1,23,000)		2,28,000
छुपी हुई आय		1,20,000

आयकर अधिकारी ने कहा कि मोती द्वारा घोषित की गई आय सही नहीं है। मोती की सही आय 1,20,000 से बढ़ाकर दर्शाई जायेगी।

उदाहरण (Illustration) **5**

सुरेश अपनी लेखा पुस्तकें दोहरा लेखा प्रणाली के अंतर्गत नहीं बना था। लेकिन वह कागज की रसीदों (बिलों) से अपने वार्षिक लेखे बनाता था। उसने बैंक से ऋण लिये उसे बैंक को अपना लाभ प्रति वर्ष बताना पड़ता है। उसने बैंक को निम्न लाभ राशि बताई।

वर्ष सम्पत्ति 31 Dec.	लाभ (₹)
2004	20,000
2005	32,000
2006	35,000
2007	48,000
2008	55,000

बैंक ने आपको अंकेक्षक नियुक्त किया है कि सुरेश के विवरण और लाभ राशि का सत्यापन करें कि यह सही है या नहीं। इसके लिये आपके पास निम्नलिखित जानकारी हैं:

(a) 31 Dec. 2008 को स्थिति, विविध देनदार ₹ 20,000, व्यापारिक स्कंध (लागत के 95% पर) ₹ 47,500, हस्तस्थ रोकड़ एवं बैंक ₹ 12,600, व्यापारिक लेनदार ₹ 6,000, खर्चे बकाया ₹ 1,600.

(b) उसने अपनी पत्नी से ₹ 5000 उधार लिये 30 सितम्बर 2003 को जिस पर वह 12% की दर से सामान्य ब्याज देने को कही गयी थी। ऋण का भुगतान 31 दिसम्बर 2005 को ब्याज के साथ दिया गया।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(c) दिसम्बर 2004 में, उसने A को ₹ 3,000 अग्रिम दिये भूमि खरीदने के लिये। भूमि की रजिस्ट्री मार्च 2006 में बकाया भुगतान ₹ 32,000 को देने के बाद हुई। रजिस्ट्री खर्च ₹ 7,500 हुए।

(d) सुरेश ने अपनी बेटी के लिए अक्टूबर 2006 में ₹ 1,500 के आभूषण खरीदें। शादी खर्च फरवरी में ₹ 24,000 हुए।

(e) उसने एक नया VCR ₹ 1,500 में मार्च 2008 में खरीदा और उसने अपने दोस्त को नवम्बर 2008 में तोहफे में दे दिया।

(f) उसका घरेलू व्यय वार्षिक ₹ 2,400 है।

(g) 31 दिसम्बर 2008 को सम्पत्ति और दायित्व की स्थिति यह पाई गई :

बैंक अधिशेष (सम्पत्ति द्वारा सुरक्षित) ₹ 12,000, व्यापारिक लेनदार ₹ 10,000, देय खर्चे ₹ 600, विविध देनदार (कर्मचारी के ₹ 600 सम्मिलित करते हुए जिसे कोर्ट द्वारा दिवालिया घोषित कर दिया) ₹ 28,800, व्यापारिक स्कंध (लागत का 12.5% प्रतिबिम्बित बाजार मूल्य) ₹ 60,000 और हस्तस्थ रोकड़ ₹ 250.

हमने अंकेक्षण में यह पाया कि उसका लाभ की दर समान है विक्रय का अनुपात पिछले वर्षों के दौरान 3:4 : 4:6.8 है।

वार्षिक लाभ ज्ञात कीजिये और विभिन्नताएँ ज्ञात कीजिये, यदि है तो, जो सुरेश ने पहले बैंक को दी। सभी क्रियाएं आपके उत्तर का भाग हैं।

समाधान (Solution)

Statement of Affairs as on 31-12-2003

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
Loan from			Sundry Debtors		20,000
Mrs. Suresh	5,000		Stock on trade-at cost		
Add: Interest	150	5,150	$\left(47,500 \times \frac{100}{95}\right)$		50,000
Outstanding					
Trade Creditors		6,000	Cash in hand & at bank		12,600
Outstanding expenses		1,600			
Capital (Bal. fig)		69,850			—
		82,600			82,600

© The Institute of Chartered Accountants of India

Statement of Affairs as on 31-12-2008

Liabilities	₹	*Assets*	₹
Bank overdraft-secured		Sundry Debtors	28,800
against property	12,000	Stock in trade	
Trade Creditors	10,000	at cost (₹60,000 × 100/125)	48,000
Outstanding expenses	600	Cash in hand	250
Capital Balancing figure	54,450		—
	77,050		77,050

Statement of Profit for the Period as on 1-1-2004 & 31-12-2008

31-12-2008 को अपने अनुसार पूँजी		54,450
जोड़े : आहरण (2400 × 5)		1,20,000
सम्पत्ति खरीदी		47,500
आभूषण क्रय किये एवं बेटी की शादी का खर्च		39,000
नया VCR खरीदा जो दोस्त को गिफ्ट किया		1,800
		2,78,950
घटाये : पूँजी 31-12-2003 को ब्याज के अनुसार		69,850
पाँच साल की अवधि का लाभ		2,09,100
घटाये : ऋण जिसका लेखा नहीं किया गया 31-12-2008 तक		600
पाँच साल की अवधि का शुद्ध लाभ		2,08,500

Statement showing annual profit and Affairs
Differences with reported Profit 2004 - 2008

Year	Apportionment Ratio	Annual Profit	Profit Reported		Difference to Bank
31-12-2004	3	25,020	20,000	(+)	5,020
31-12-2005	4	33,360	32,000	(+)	1,360
31-12-2006	4	33,360	35,000	(-)	1,640
31-12-2007	6	50,040	48,000	(+)	2,040
31-12-2008	8	66,700	55,000	(+)	11,720
		2,08,500	1,90,000	(+)	18,500

© The Institute of Chartered Accountants of India

4. पूर्ण लेखांकन सूचनाएँ प्राप्त करने की तकनीकें

(TECHNIQUES OF OBTAINING COMPLETE ACCOUNTING INFORMATION)

जब लेखा पुस्तकें अपूर्ण होती हैं। जब यह आवश्यक है कि सबसे पहले सभी व्यवहारों को दोहरा लेखा प्रविष्टि में पूरा किया जाये। सम्पूर्ण लेखांकन प्रक्रिया सावधानीपूर्वक अपनायी जानी चाहिए एवं स्पष्ट बनाना चाहिए।

4.1. सामान्य तकनीकें (General Techniques)

जब किसी व्यवसाय के खाते अपूर्ण होते हैं तो यह परामर्शनीय है कि पहले सभी लेनदेनों की दोहरा लेखा प्रणाली में परिवर्तित किया जाये तथा लाभ–हानि खाता व चिट्ठा बनाना चाहिये, स्थिति विवरण बनाकर लाभ हानि ज्ञात किया जाये।

चूँकि फर्मों की लेखा पुस्तकें विभिन्न मात्राओं में अपूर्ण होती हैं। अतः ऐसा सम्भव नहीं है कि उनको अंतिम खाते बनाने में उपयोग में लाया जा सके अतः पहले यह आवश्यक हो जाता है कि सम्पत्तियों व दायित्वों तथा पूँजी खाते के प्रारम्भिक शेष के साथ खाते बनाये जायें।

तत्पश्चात् प्रारम्भिक प्रविष्टि की प्रत्येक पुस्तक को अलग–अलग लिखना चाहिये, ताकि ऐसी प्रविष्टियों को खाताबही में खतौनी करके दोहरा लेखा प्रणाली को पूरा किया जाये जिसकी खतौनी नहीं हुई है। उदाहरण, रोकड़ बही से यदि केवल व्यक्तिगत खातों की खतौनी हुई है; नाममात्रों और वास्तविक के खातों से सम्बन्धित नाम (debits) या जमा (credits) जिनकी खतौनी नहीं हुई है, उन्हें खाताबही में खतौनी करनी चाहिये। यदि यहाँ रोकड़ बही से बट्टा सम्भव हो तो चुकाई तथा प्राप्त बट्टों के योगों को क्रमशः बट्टा दिया व प्राप्त बट्टा खातों में खतौनी करनी चाहिये ताकि दोहरी लेखा पूर्ण हो सके। तत्पश्चात् अन्य सहायक बहियाँ अर्थात् दैनिक क्रय बही, दैनिक विक्रय बही, वापसी बही, प्राप्य तथा देय विपत्र आदि का योग लगाना चाहिये और उनके योगों के उपयुक्त नाममात्र या वास्तविक खातों में विकलन (Dr.) व समाकलन (Cr.) में खाताबही में खतौनी की जाती है, व्यवहारों के व्यक्तिगत पहलू का पहले ही लेखा हो चुका है।

जब कोई लेखाकार रोकड़ बही या अन्य सहायक बहियों से न खताये गये मदों की खतौनी में संलग्न होते हैं, तब उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उपरोक्त इनमें से कुछ के तरीकों में नीचे वर्णित व्यवहार किये गये हैं।

(1) रोकड़ बही में कुछ ऐसी प्राप्तियों के लेखे हैं जिसका व्यवसाय से कोई सम्बन्ध नहीं है, लेकिन वे मालिक से सम्बन्धित हैं, उदाहरण उसके निजी विनियोजन पर प्राप्त ब्याज, उसके द्वारा प्राप्त वसीयतें, अपने निजी साधनों से मालिक द्वारा एकत्रित राशि आदि। ये सभी राशियाँ उनके पूँजी खाते में समाकलित (Credited) होने चाहिये। व्यवसाय द्वारा किये गये मालिक के क्रयों हेतु भुगतान के सम्बन्ध में रोकड़ बही में भी प्रविष्टियाँ की जा सकती हैं। ऐसी सभी मदें उसके पूँजी खाते में विकलित (debited) की जानी चाहिये।

(2) संग्रहण के पश्चात, व्यवसाय से सम्बन्धित राशियों का उपयोग सीधे अधिग्रहित व्यवसाय सम्पत्तियों पर निश्चित व्ययों को चुकाने में कर सकते हैं बजाय उन्हें रोकड़ बही में जमा किया जाये। दूसरी तरफ, मालिक अपने निजी स्रोतों से कुछ व्यावसायिक

© The Institute of Chartered Accountants of India

व्ययों को चुकाने के लिये कर सकता है। उस स्थिति में, उपयुक्त सम्पत्ति या व्यय खाता विकलित (debited) और स्रोत जिससे कोष जुटाये गये (credited) समाकलित किया जाना चाहिये।

(3) यदि रोकड़ कम है, क्योंकि मालिक ने रोकड़ बही में बिना लेखा किये गये आहरण कर लिया हो तो मालिक के पूँजी खाते को विकलित (debited) करना चाहिये। वास्तव में यह आवश्यक होगा कि सभी अचिन्हित राशियों के सम्बन्ध में मालिक के पूँजी खाते को विकलित (Dr.) या समाकलित (Cr.) किया जाये अन्यथा उन्हें समायोजित नहीं किया जा सकेगा।

(4) जहाँ किसी व्यय का कोई व्यय दोनों मालिक या व्यवसाय द्वारा प्राप्त होता है तब उसे निरपक्ष आधार पर उनके बीच आंबटित करना चाहिये। उदाहरण के लिए, भवनों का किराया जब मालिक उसी भवन में रहता हो तब निवास के लिये उसके द्वारा प्रयोग किये गये क्षेत्र के आधार पर आंबटित करना चाहिये।

(5) विविध देनदारों व लेनदारों की तालिकाएँ यह ज्ञात करने के उद्देश्य के लिये रखे गये सम्बन्धित खाताबाही से बनानी चाहिये कि यदि गलती से कोई आगम या व्यय की मद उसमें निहित मार्ग द्वारा पाई जाती है। ऐसा करने के पश्चात् तथा यदि आवश्यक हो तो ऐसी राशियों को निकालने के पश्चात्, तालिकाओं का योग लगाना चाहिये और योग को खाताबाही में विविध देनदार खाते में विकलित (debited) करना चाहिये। इसी तरह विविध लेनदारों की तालिकाओं का योग विविध लेनदार खाते में समाकलित (credited) करना चाहिये। किसी को सूचित करना चाहिये कि विक्रय खाता, क्रय खाता और अन्य नाममात्र खाते दैनिक बहियों के आधार पर पहले से अपलिखित हो चुके हों, तब उन्हें आगे समायोजन करने की आवश्यकता नहीं होती है। यह आशा की जाती है, कि प्रारम्भिक शेषों को इन खातों में वसूली या भुगतान द्वारा समायोजित करना चाहिये और देनदारों से प्राप्ति व लेनदारों को भुगतान की खतौनी को क्रय या विक्रय के रूप में लेखा करने के स्थान पर सही से किया हो। यदि अतः ऐसा किया गया हो तो इन शेषों को विक्रय या क्रय खाते, अशोध्य ऋण या बट्टा खाते में हस्तान्तरित करके समायोजन को आवश्यक करेंगे, जैसी भी स्थिति हो।

अन्त में यह सम्भव होगा कि एक तलपट निकाला जा सके। विद्यार्थियों को सदैव ऐसा करने की सलाह दी जाती है कि समायोजन करने से समर्पित गलतियों को प्रकट करें।

4.2. रोकड़ बही से सूचना की व्युत्पत्ति (Derivation of informtion from cash book)

रोकड़ तथा अधिकोष (Bank) प्राप्ति तथा भुगतान का विश्लेषण व्यापक होना चाहिये परन्तु महत्वपूर्ण शीर्षकों के अन्तर्गत, ताकि आय व व्यय की विभिन्न मदों की वहाँ से खाताबही में खतौनी की जा सकती है। इसीलिये खाताबही में सूचना की खतौनी से पहले उसे एक खाते के रूप में संग्रहित करना चाहिये। नमूना आगे दर्शाया गया है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाप्त होने वाले वर्ष के लिये रोकड़ तथा अधिकोष सारांश

	रोकड़ ₹	अधिकोष (बैंक) ₹		रोकड़ ₹	अधिकोष (बैंक) ₹
शेष हाथ में			व्ययों में		
(प्रारम्भिक)	590	7,400	(विविध भुगतान)	3,000	—
विक्रय का	6,500	—	क्रय से	100	6,000
देनदारों से संग्रहित	—	10,000	विविध लेनदारों से	—	5,000
			आहरणों से	1,500	—
			खुदरा व्ययों से	800	—
			किराया से	—	1,000
			विद्युत तथा जल से	350	—
			मरम्मत से	350	—
			मजदूरी से	—	1,000
			शेष हाथ में	990	4,400
	7,090	17,400		7,090	17,400

अपूर्ण लेखों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बात है कि बेहद सूचनाएँ तत्परता से उपलब्ध न होती है और सम्बन्धित सूचनाएँ सुनिश्चित करनी पड़ती हैं।

रोकड़ तथा अधिकोष (बैंक) सारांश को तैयार करना एक अच्छी बात होती है (यदि दोनों पक्षों के मिलान के साथ उचित प्रारूप में उपलब्ध न हो)। अन्त में रोकड़ तथा अधिकोष (बैंक) शेष के साथ रोकड़ तथा अधिकोष (बैंक) बहियों का सामंजस्य करना चाहिये। ऐसा होने पर, सारांश विवरणों के विस्तृत विभिन्न मदों को खाताबही में खतौनी की जानी चाहिये।

यह काफी सम्भावना है कि कुछ लुप्त सूचनाएँ तब भी उपलब्ध हो जाएं। 2008 के सम्बन्ध में एक फर्म के बारे में निम्न पर विचार करें।

	₹
1 जनवरी 2008 को नगद शेष	250
1 जनवरी 2008 को अधिकोष (बैंक) अधिविकर्ष	5,400
नगद क्रय	3,000
विविध देनदारों से संग्रहित	45,600
पुराने उपस्कर का विक्रय	750
यन्त्र का क्रय	12,000
विविध लेनदारों का भुगतान	26,370
खर्चे	8,450

© The Institute of Chartered Accountants of India

नयी पूँजी लगायी गई	5,000
आहरण	3,230
31 दिसम्बर को नगद शेष	310
30 दिसम्बर को अधिकोष (बैंक) शेष	1,180

अब रोकड़ तथा अधिकोष (बैंक) सारांश तैयार कीजिये।

रोकड़ तथा अधिकोष (बैंक) सारांश

विकलन (Dr.)	₹	समाकलन (Cr.)	₹
1-1-2008 को शेष रोकड़	250	अधिकोष (बैंक) अधिविकर्ष	5,400
विविध देनदारों से संग्रहित	45,600	नगद क्रय	3,000
पुराने उपस्कर का विक्रय	750	यन्त्र का क्रय	12,000
नयी पूँजी लगायी	5,000	विविध लेनदारों को भुगतान	26,370
शेष राशि	8,340	खर्चे	8,450
		आहरण	3,230
		31.12.2008 को नगद शेष	310
		31.12.2008 अधिकोष बैंक शेष	1,130
	59,940		59,940

देखें कि विकलन (Dr.) पक्ष ₹ 8,340 से कम है। रोकड़ अन्तर्गमन का संभव स्रोत क्या हो सकता है? नगद विक्रय हो सकता है।

4.3. क्रय खाताबही तथा विक्रय खाताबही की समीक्षा (Analysis of Sales Ledger and Purchase Ledger)

विक्रय खाताबही (Sales Ledger)—बिक्री खाताबही, देनदारों के प्रारम्भिक शेष, उनको बिके उधार माल, अनादृत प्राप्त विपत्रों (यदि हो) लेखांकन अवधि में उनसे प्राप्त रोकड़, बट्टा, छूट, या उनको दी गयी कोई अन्य रियायत, प्राप्त विपत्रों की प्राप्तियाँ, आन्तरिक वापसी, अशोध्य ऋणों का अपलेखन तथा हस्तान्तरण से सम्बन्धित जानकारियाँ इससे प्रकट होती हैं। कुल देनदारों खाते में दिये हुए प्रति नाम (Dr.) या जमा (Cr.) से सम्बन्धित अव्यक्तिगत खातों को नाम (Dr.) या जमा (Cr.) करने की पूँजी प्रविष्टियाँ अवश्य की जानी चाहिये। प्रारम्भिक विक्रय बिल कुल छूट प्राप्त विक्रय अशोध्य कुल अंतिम ग्राहक अनादरित विकलन (Debit) दी गई विपत्र वापसी ऋण लेनदार शेष।

पूर्वकथित से विक्रय तथा अन्य देनदार खातों के बारे में सूचना बनाना सम्भव हो जायेगा जिसे फिर योगों में खतौनी की जा सकती है, यदि ऐसी इच्छा हो। यह भी सम्भव हो जायेगा कि अग्र प्रारूप में कुल देनदार खाता तैयार किया जाये—

© The Institute of Chartered Accountants of India

कुल देनदार खाता (माने गये आँकड़े)

प्रारम्भिक शेष	5,000	नगद/अधिकोष (बैंक)	10,000
विक्रय	38,000	बट्टा	500
अनादृत विपत्र	280	प्राप्य विपत्र	20,000
ब्याज	100	अशोध्य ऋण	280
		अन्तिम शेष	12,600
	43,380		43,380

यह स्पष्ट है कि यदि अन्य आँकड़े उपलब्ध हों तब कुल देनदार खाते में शामिल कोई एकल राशि सुनिश्चित की जा सकती है। उदाहरण, यदि विक्रय के बारे में सूचना उपलब्ध न हो तो इसे एक संतुलन आँकड़े के रूप में सुनिश्चित किया जा सकता है; जैसे–उपरोक्त में कुल देनदार खाता दिया गया है, यदि सभी अन्य आंकड़े दिये हों तो विक्रय ₹ 38,000 का होगा।

क्रय खाताबही (Purchases Ledger)— सामान्यतः कहा जाता है, एक क्रय खाताबही आमतौर पर देनदार खाताबही के रूप में अस्तित्व हेतु अदत्त दायित्वों के सम्बन्ध में उनके भुगतान के समय पर प्रविष्टियाँ करना अत्यन्त सुविधाजनक है। अपेक्षाकृत व्ययों के समय पर करने के। लेनदारों के प्रारम्भिक शेष, उधार पर माल क्रय करना, देय विपत्र अनादृत से सम्बन्धित सूचनाएँ, वर्ष के दौरान, बट्टा तथा अन्य रियायत, क्रय वापसी और हस्तान्तर को नगद भुगतान करना है। यहाँ अव्यक्तिगत खातों से सम्बन्धित नाम (Debiting) या जमा (Crediting) पंजी प्रविष्टियाँ की जाती हैं। कुल लेनदारों के खाते से प्रति नाम (Debit) या जमा (Credit) किया जायेगा।

यदि लेनदारों को वापसी, उनके द्वारा दी गई छूट आदि का अभिलेखन नहीं रखा गया हो तो यह संभव नहीं होगा कि कुल लेनदारों को अपलिखित (बनाया) किया जाये। ऐसी स्थिति में शुद्ध विक्रय क्रय निम्नलिखित रूप से सुनिश्चित किये हैं—

लेनदारों को नगद भुगतान अवधि के देय विपत्र खाते में शामिल है .....
लेनदारों व देय विपत्रों का अंतिम शेष .....
कुल .....
घटाया– लेनदारों व देय विपत्रों का प्रारम्भिक शेष .....
अवधि के दौरान शुद्ध उधार क्रय .....

विकल्प

समायावधि में लेनदारों का भुगतान .....
जोड़े– उनको निर्गमित देय विपत्र .....
कुल .....
लेनदारों के अंतिम शेष .....
घटाये– लेनदारों का प्रारम्भिक शेष .....
अवधि के दौरान उधार क्रय .....

इस सूचना को एक खाते के रूप में रखा जा सकता है जैसे कुल देनदार की तरह।

© The Institute of Chartered Accountants of India

नाममात्र खाते (Nominal Account)—यह संभव है कि नाममात्र खाते के शेष द्वारा दर्शाये गये कुल व्ययों की मदों का समावेश है जो कि उस वर्ष से सम्बन्धित नहीं है जिसके सम्बन्ध में खाते तैयार किये जाते हैं और वहाँ कुछ व्ययों की कुछ निश्चित मदें भी हो सकती हैं लेकिन चुकाई न हों, जिसे उसमें शामिल नहीं किया हो। इसी वजह से प्रत्येक खाते को निम्नलिखित तरीके से समायोजित किया जाना चाहिये।

(मानी गयी संख्यायें)—

	रोकड़ तथा विवरण	अधिकोष (बैंक) भुगतान राशि	अदत्त भुगतान	कुल निजी कोष	प्रति भुगतान	अवधि के लिये व्यय
	₹	₹	₹	₹	₹	₹
Rent & Rates	2,200	300	100	2,600	150	2,450
Salaries	4,500	500	1,000	6,000	250	5,750

केवल वही राशि जो अवधि के लिये व्यय के रूप में हो सम्बन्धित नाममात्र खाते में खतौनी करनी चाहिये। आगम प्राप्ति के सम्बन्ध में नाममात्र खाते में समान समायोजन किया जाना चाहिये। हमें अनुच्छेद 2.2 में दिया गया उदाहरण को जारी रखना चाहिये। कुछ अन्य सूचना दिये जाने पर, उधार क्रय व उधार विक्रय की गणना कैसे निकाली जाये निम्न प्रकार से वर्णित किया गया है।

	₹
प्रारम्भिक शेष (1-1-2008)	
स्कन्ध	20,000
विविध लेनदार	12,300
विविध देनदार	15,000
अंतिम शेष (31-12-2008)	
स्कन्ध	15,000
विविध लेनदार	13,800
विविध देनदार	25,600
2008 के दौरान बट्टा प्राप्त	1,130
देय बट्टा	1,870

2008 के लिये क्रय क्या है? हमें विविध लेनदारों का खाता तैयार करना चाहिये।

विविध लेनदार खाता

	₹		₹
रोकड़ का	26,370	शेष आगे आये (प्रारम्भिक)	12,300
बट्टे का	1,130	क्रय से (शेष संख्या)	29,000
शेष आगे ले गये (अंतिम)	13,800		
	41,300		41,300

उधार क्रय ₹29,000 है; नगद क्रय ₹3,000 है, अतः कुल क्रय ₹32,000 है।

इसी प्रकार से विविध देनदार खाता तैयार कीजिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

विविध देनदार खाता

	₹		₹
शेष आगे लाये	15,000	रोकड़ से	45,600
उधार विक्रय का	58,070	बट्टे से	1,870
		शेष आगे ले गये	25,600
	73,070		73,070

इसलिये कुल विक्रय = उधार विक्रय + नगद विक्रय

₹ 66,410 = ₹ 58,070 + ₹ 8,340

4.4. व्यावसायिक व्ययों व आहरण के बीच अन्तर (Distinction between Business Expenses and Drawings)

पहले ही बताया गया है कि बहुधा व्यावसायिक व्ययों व आहरण के बीच अन्तर नहीं किया है। जबकि अपूर्ण लेखों से पूर्ण खातों में करते समय आवश्यक है कि व्यावसायिक लेन–देनों को भलीभाँति जाँच करें ताकि आहरणों के अस्तित्व को पहचाना जा सके।

आहरण की मुख्य मदें हैं—

- भवन का किराया जो रिहायशी (Resident) तथा व्यावसायिक उद्देश्य के लिए उपयोग किया जाता है।
- संयुक्त विद्युत तथा टेलीफोन बिल
- व्यावसायिक रोकड़ से मालिक/साझेदार का जीवन बीमा प्रीमियम।
- व्यावसायिक रोकड़ से घरेलू व्ययों को चुकाना।
- व्यावसायिक रोकड़ से मित्रों तथा रिश्तेदारों को चुकाये गये निजी ऋण।
- व्यावसायिक रोकड़ से किसी मित्र तथा सम्बन्धियों को दिये गये व्यक्तिगत उपहार।
- व्यक्तिगत उपभोग के लिये व्यवसाय से ली गई माल व सेवाएँ।
- पारिवारिक खर्चों को चुकाने के लिये रोकड़ निकालना।

इसलिये यह आवश्यक है कि नगद लेनदेनों के सारांश को जाँचने के लिए व्यावसायिक संसाधनों एवं उनके उपयोगों का आंकलन किया जाये।

4.4.1. स्वामी/साझेदारों द्वारा नए विनियोजन (Fresh Investment by proprietors/partners)—आहरणों के जैसे बहुधा स्वामी/साझेदारों द्वारा किए गये नए निवेशों को एकाएक नहीं पहचाना जाता व्यावसायिक व्यवहारों की सावधानीपूर्वक समीक्षा करना आवश्यक होता है।

प्रत्यक्ष नगद निवेश से रोकड़ निवेश के अलावा नया निवेश निम्न आकार ले सकता है—

- मालिकों के जीवन बीमा निधियों के परिपक्व होने पर संग्रहित मुद्रा को व्यवसाय में रखकर।
- मालिकों के निजी निवेशों पर संग्रहित लाभांश तथा ब्याज को व्यवसाय में रखकर।
- गैर व्यावसायिक सम्पत्ति से संग्रहित आय को व्यवसाय में रखकर।

जब तक मदों को भलीभाँति चिन्हित तथा पृथक नहीं कर लिया जाता व्यावसायिक आय बढ़ी रहेगी और सही स्थिति विवरण तैयार नहीं किया जा सकता।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **6**

निम्नलिखित सूचना मिस्टर शिवकुमार के व्यवसाय से सम्बन्धित है जो आपसे 31 मार्च 2008 वर्ष के अन्त के लिए व्यापारिक एवं लाभ एवं हानि खाता और उस तिथि पर स्थिति विवरण को तैयार करने के लिए निवेदन करते हैं—

(**अ**)

	31 मार्च 2007 को शेष	31 मार्च 2008 को शेष
	₹	₹
भवन	3,20,000	3,60,000
उपस्कर	60,000	68,000
मोटरकार	80,000	80,000
स्कन्ध	—	40,000
देय विपत्र	28,000	16,000
रोकड़ तथा अधिकोष		
(बैंक) शेष	1,80,000	1,04,000
विविध देनदार	1,60,000	—
प्राप्त विपत्र	32,000	28,000
विविध लेनदार	1,20,000	—

(**ब**) वर्ष के दौरान नगद लेनदेनों में निम्नलिखित सम्मिलित है सिवाय अन्य निश्चित मदों के—

	₹		₹
पुराने कागजों की	20,000	नगद क्रय	48,000
बिक्री और मिश्रित आय		लेनदारों को भुगतान	1,84,000
मिश्रित व्यापारिक खर्चे	80,000	नगद विक्रय	80,000
(वेतन को शामिल कर आदि)			
देनदारों से संग्रहण	2,00,000		

(**स**) अन्य सूचनाएँ—

- वर्ष के दौरान ₹ 20,000 की राशि का प्राप्त विपत्र लिखा गया और ₹ 16,000 का देय विपत्र स्वीकार किया।
- पुराने उपस्कर की कुछ मदें जिनका अपलिखित मूल्य 31 मार्च 2007 को ₹ 20,000 था, जिसे 30 सितम्बर 2007 ₹ 8,000 में बेच दिया गया था। भवन तथा उपस्कर पर 10% प्रतिवर्ष तथा मोटरकार पर 20% प्रतिवर्ष की दर से ह्रास लगाया जाता है। उपस्कर के विक्रय पर 6 माह के लिए और बढ़ाए हुए भवन को संपूर्ण वर्ष के लिए ह्रास लगाया जाएगा।

© The Institute of Chartered Accountants of India

- देनदारों में से ₹ 8,000 का एक योग अशोध्य ऋण के रूप में अपलिखित किया जाना चाहिए और संग्रहित ऋणों के लिये 2% की दर से संचय बनाए।
- मिस्टर शिवकुमार आवर्त पर 30% की दर से नियमित सकल लाभ रखते हैं।
- 31 मार्च 2007 को अदत्त वेतन ₹ 8,000 था और 31 मार्च 2008 को ₹ 10,000 था। 31 मार्च 2007 को लाभ एवं हानि का खाता जमा (credit) शेष ₹ 40,000 था।
- कुल बिक्री एवं कुल क्रय का 20% नगद के रूप में माना जाएगा।
- वर्ष के प्रारम्भ में उपस्कर खाते में वृद्धि थी और यही संदिग्ध ऋणों के लिये कोई प्रारम्भिक प्रावधान नहीं है।

समाधान (Solution)

Trading and Profit and Loss Account of Mr. Shiv Kumar
for the year ended 31st March, 2008

		₹			₹
To	Opening stock (balancing figure)	80,000	By	Sales	4,00,000
			By	Closing Stock	40,000
To	Purchases	2,40,000			
To	Gross profit c/d@ 30% on sales	1,20,000			
		4,40,000			4,40,000
To	Miscellaneous expenses				
	(₹ 80,000 – ₹ 8,000 + ₹ 10,000)	82,000	By	Gross profit b/d	1,20,000
			By	Miscellaneous receipts	20,000
			By	Net loss transferred to Capital A/c	25,840
To	Depreciation:				
	Building ₹ 36,000				
	Furniture ₹ 7,800				
	(₹ 6,800 + ₹ 1,000)				
	Motor Car ₹ 16,000	59,800			
To	Loss on sale of furniture	11,000			
To	Bad debts	8,000			
To	Provision for doubtful debts	5,040			
		1,65,840			1,65,840

© The Institute of Chartered Accountants of India

Balance Sheet of Mr. Shivkumar
as on 31st March, 2008

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
Capital as on 1st April, 2007		7,16,000	Building	3,20,000	
			Add: Addition	40,000	
			during the year		
Profit and Loss A/c				3,60,000	
Opening balance	40,000		*Less:* Provision for		
Less: Loss for the			Depreciation	36,000	3,24,000
year	25,840	14,160	Furniture	60,000	
Sundry creditors		1,12,000	*Less:* Sold during	20,000	
			the year	40,000	
Bills payable		16,000	*Add:* Addition		
Outstanding salary		10,000	during the year	28,000	
				68,000	
			Less: Depreciation	6,800	61,200
			Motor car (at cost)	80,000	
			Less: Depreciation	16,000	64,000
			Stock in trade		40,000
			Sundry debtors	2,52,000	
			Less: Provision for		
			Doubtful debts @ 2%	5,040	2,46,960
			Bills receivable		28,000
			Cash in hand and		
			at bank		1,04,000
		8,68,160			8,68,160

Working Notes :

Sundry Debtors Account

	₹		₹
To Balance b/d	1,60,000	By Cash/Bank A/c	2,00,000
To Sales A/c	3,20,000	By Bills Receivable A/c	20,000
		By Bad debts A/c	8,000
		By Balance c/d (balancing fig.)	2,52,000
	4,80,000		4,80,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Sundry Creditors Account

	₹		₹
To Cash/Bank A/c	1,84,000	By Balance b/d	1,20,000
To Bills Payable A/c	16,000	By Purchases A/c	1,92,000
To Balance c/d (balancing figure)	1,12,000		
	3,12,000		3,12,000

Bills Receivable Account

	₹		₹
To Balance b/d	32,000	By Cash/Bank A/c (Balancing figure)	24,000
To Sundry Debtors A/c	20,000	By Balance c/d	28,000
	52,000		52,000

Bills Payable Account

	₹		₹
To Cash/Bank A/c (balancing figure)	28,000	By Balance b/d	28,000
		By Sundry Creditors A/c	16,000
To Balance c/d	16,000		
	44,000		44,000

Furniture Account

	₹		₹
To Balance b/d	60,000	By Cash/Bank A/c	8,000
To Bank A/c	28,000	By Depreciation A/c	1,000
		By Profit and loss A/c (loss on sale)	11,000
		By Depreciation A/c	6,800
		By Balance c/d	61,200
	88,000		88,000

Cash / Bank Account

	₹		₹
To Balance b/d	1,80,000	By Misc. trade expenses A/c	80,000
To Miscellaneous receipts A/c	20,000	By Purchases A/c	48,000
		By Furniture A/c (balancing figure)	28,000
To Sundry Debtors A/c	2,00,000		

© The Institute of Chartered Accountants of India

To Sales A/c	80,000	By Sundry Creditors A/c	1,84,000
To Furniture A/c (sale)	8,000	By Bills Payable A/c	28,000
To Bills Receivable A/c	24,000	By Building A/c	40,000
		By Balance c/d	1,04,000
	5,12,000		5,12,000

Opening Balance Sheet of Mr. Shivkumar as on 31st March, 2007

Liabilities	₹	*Assets*	₹
Capital (balancing figure)	7,16,000	Building	3,20,000
Profit and loss A/c	40,000	Furniture	60,000
Sundry Creditors	1,20,000	Motor car	80,000
Bills Payable	28,000	Stock in trade	80,000
Outstanding salary	8,000	Sundry Debtors	1,60,000
		Bills Receivable	32,000
		Cash in hand and at bank	1,80,000
	9,12,000		9,12,000

उदाहरण (Illustration) **7**

'अ' अदमजी एकल लेखा के आधार पर अपनी पुस्तकों को रखते हैं। 31 दिसम्बर 2008 को वर्ष के अन्त में रोकड़ बही का विश्लेषण निम्न दिया है—

प्राप्तियाँ	₹	*भुगतान*	₹
1 जनवरी 2008 को		विविध लेनदारों को	
अधिकोष (बैंक) शेष	2,800	भुगतान	35,000
		वेतन	6,500
विविध देनदारों से प्राप्ति	48,000	सामान्य व्यय	2,500
नगद विक्रय	11,000	किराया एवं कर	1,500
वर्ष के दौरान लगायी		आहरण	3,600
गई पूँजी	6,000	नगद क्रय	12,000
विनियोजन पर आय	200	31 दिसम्बर 2008 को	
		अधिकोष (बैंक) शेष	6,400
		31 दिसम्बर 2008 को	
		हस्तस्थ रोकड़	500
	68,000		68,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

अन्य सम्पत्तियों तथा दायित्वों का विवरण निम्न प्रकार से है—

	1 जनवरी 2008	31 दिसम्बर 2008
	₹	₹
विविध देनदार	14,500	17,600
विविध लेनदार	5,800	7,900
यंत्र	7,500	7,500
उपस्कर	1,200	1,200
स्कन्ध	3,900	5,700
विनियोग	5,000	5,000

यंत्र तथा उपस्कर पर 10% से ह्रास और संचयित ऋणों हेतु ₹800 लगाने के बाद वर्ष के अन्त 31 दिसम्बर 2005 के लिए अन्तिम खाते तैयार कीजिए।

समाधान (Solution)

Statement of Affairs of A. Adamjee as on 1-1-2008

	₹		₹
Sundry Creditors	5,800	Machinery	7,500
A. Adamjee's Capital	29,100	Furniture	1,200
(balancing figure)		Stock	3,900
		Sundry Debtors	14,500
		Investments	5,000
		Bank Balance (from Cash Statement)	2,800
	34,900		34,900

Ledger Account

A. Adamjee's Capital Account

Dr.	₹		*Cr.* ₹
To Drawings	3,600	Jan. 1 By Balance	29,100
To Balance c/d	31,500	Dec. 31 By Cash	6,000
	35,100		35,100

Sales Account

	₹		₹
Dec.31 To Trading A/c	62,100	Dec. 31 By Cash	11,000
		Dec. 31 By Total Debtors A/c	51,100
	62,100		62,100

© The Institute of Chartered Accountants of India

Total Debtors Account

	₹		₹
Jan. 1 To Balance b/d	14,500	Dec. 31 By Cash	48,000
Dec.31 To Credit sales	51,100	Dec. 31 By Balance c/d (Balancing fig.)	17,600
	65,600		65,600
Jan. 1 To Balance b/d	17,600		

Total Creditors Account

	₹		₹
Dec.31 To Cash	35,000	Jan. 1 By Balance b/d	5,800
Dec.31 To Balance b/d	7,900	Dec.31 By Credit Purchases (Balancing figure)	37,100
	42,900		42,900

A. Adamjee

Trading and Profit & Loss Account for the year ended 31-12-2008

		₹			₹
To	Opening Stock	3,900	By	Sales	62,100
To	Purchases	49,100	By	Closing Stock	5,700
To	Gross profit c/d	14,800			
		67,800			67,800
To	Salaries	6,500	By	Gross Profit b/d	14,800
To	Rent and Taxes	1,500	By	Interest on Investment	200
To	General Expenses	2,500			
To	Depreciation				
	Machinery ₹ 750				
	Furniture ₹ 120	870			
To	Provision for Doubtful Debts	800			
To	Balance being profit carried to Capital A/c	2,830			
		15,000			15,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

Balance Sheet as on 31st December, 2008

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
A. Adamjee's Capital			Machinery	7,500	
on 1st January. 2008	29,100		*Less:* Depreciation	750	6,750
Add: Fresh Capital	6,000		Furniture	1,200	
Add: Profit for the year	2,830		*Less:* Depreciation	120	1,080
	37,930				
Less: Drawings	3,600	34,330	Stock-in-trade		5,700
			Sundry Debtors	17,600	
Sundry Creditors		7,900	*Less:* Provision for		
			Double Debts	800	16,800
			Investment		5,000
			Cash at Bank		6,400
			Cash in Hand		500
		42,230			42,230

उदाहरण (Illustration) **8**

निम्नलिखित आंकड़ों से आपको 31 मार्च 2008 में वर्ष के अन्त में एक व्यापारिक तथा लाभ एवं हानि खाता और उसी तिथि का स्थिति विवरण तैयार करना आवश्यक है। सभी क्रियायें आपके उत्तर का भाग होना चाहिये।

सम्पत्ति एवं दायित्व	1 अप्रैल 2007 के लिए	31 मार्च 2008 के लिए
	₹	₹
लेनदार	15,770	12,400
विविध अदत्त व्यय	600	330
विविध सम्पत्तियाँ	11,610	12,040
व्यापार में स्कन्ध	8,040	11,120
हस्तस्थ में रोकड़ और		
अधिकोष (बैंक)	6,960	8,080
कुल देनदार	—	17,870

वर्ष में व्यवहारों से सम्बन्धित विवरण है—

	₹
देनदारों को समाकलित (Credited) नगद तथा बट्टा	64,000
विक्रय वापसी	1,450
अशोध्य ऋण	420
विक्रय (नगद एवं उधार)	71,810
व्यापारिक लेनदारों द्वारा बट्टा दिया	700

© The Institute of Chartered Accountants of India

क्रय वापसी	400
अधिकोष (बैंक) में चुकाई गई अतिरिक्त पूँजी	8,500
देनदारों से वसूली अधिकोष (बैंक) में दी	62,500
नगद क्रय	1,030
नगद व्यय	9,570
यंत्र क्रय के लिए धनादेश (चैक) द्वारा भुगतान	430
अधिकोष (बैंक) से घरेलू खर्च के लिए निकाले	3,180
अधिकोष (बैंक) में नगद भुगतान	5,000
अधिकोष (बैंक) से रोकड़ निकाली	9,240
31-3-2008 को हस्तस्थ में रोकड़ व्यापारिक लेनदारों को निर्गमित (चैक)	60,270

समाधान (Solution)

Trading and Profit & Loss Account
for the year ending 31st March, 2008

	₹	₹		₹	₹
To Opening Stock		8,040	By Sales		
			Cash	4,600	
To Purchases	59,030		Credit	67,210	
Less: Returns	400	58,630		71,810	
To Gross Profit A/c		14,810	*Less:* Returns	1,450	70,360
			By Closing Stock		11,120
		81,480			81,480
To Sundry Expenses (W.N.v)		9,300	By Gross Profit		14,810
To Discount		1,500	By Discount		700
To Bad Debts		420			
To Net Profit to Capital		4,290			—
		15,510			15,510

© The Institute of Chartered Accountants of India

Balance Sheet of M/s.....
as on 31st March, 2008

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
Capital			Sundry Assets		12,040
Opening balance	26,770		Stock in trade		11,120
Add: Addition	8,500		Sundry Debtors		17,870
" Net Profit	4,290		Cash in Hand & at Bank		8,080
	39,560				
Less: Drawings	3,180	36,380			
Sundry Creditors		12,400			
Outstanding Expenses		330			
		49,110			49,110

Working Notes :

(i) ***Cash sales***

Combined Cash & Bank Account

	₹		₹
To Balance b/d	6,960	By Sundry Creditors	60,270
To Sundries (Contra)	5,000	By Sundries (Contra)	5,000
To Sundries (Contra)	9,240	By Sundries (Contra)	9,240
To Sundry Debtors	62,500	By Drawings	3,180
To Capital A/c	8,500	By Machinery	430
To Sales (Cash Sales		By Sundry Expenses	9,570
Balancing figure)	4,600	By Purchases	1,030
		By Balance c/d	8,080
	96,800		96,800

(ii) **Total Debtors Account**

	₹		₹
To Balance b/d	16,530	By Bank	62,500
(Balancing figure)		By Discount	1,500
To Sales (71,810–4,600)	67,210	By Return Inward	1,450
		By Bad Debts	420
		By Balance c/d	17,870
	83,740		83,740

© The Institute of Chartered Accountants of India

(iii) **Total Creditors Account**

	₹		₹
To Bank	60,270	By Balance b/d	15,770
To Discount	700	By Purchases	58,000
To Return Outward	400	(Balancing figure)	
To Balance c/d	12,400		
	73,770		73,770

(iv) **Balance Sheet as on 1st Apri, 2007**

Liabilities	₹	*Assets*	₹
Capital (balancing figure)	26,770	Sundry Assets	11,610
Sundry Creditors	15,770	Stock in Trade	8,040
Outstanding Expenses	600	Sundry Debtors	16,530
		Cash in hand & at bank	6,960
	43,140		43,140

(v) Expenses paid in Cash	9,570	
Add: Outstanding on 31-3-2008	330	
	9,900	
Less: Outstanding on 1-4-2007	600	
	9,300	

(vi) Due to lack of information deprecation has not been provided on fixed assets.

उदाहरण (Illustration) **9**

मिस्टर अनूप एक थोक व्यापार का व्यवसाय करते हैं जहाँ सभी क्रय एवं विक्रय उधार पर किए जाते हैं। वह निम्नलिखित अन्तिम शेषों से तैयार करते हैं।

	31-12-2007	31-12-2008
	₹	₹
विविध देनदार	70,000	92,000
प्राप्त विक्रय	15,000	6,000
देय विपत्र	12,000	14,000
विविध लेनदार	40,000	56,000
स्कन्ध	1,10,000	1,90,000
अधिकोष (बैंक)	90,000	87,000
रोकड़	5,200	5,300

© The Institute of Chartered Accountants of India

2007– 08 के दौरान नगद सौदों का सांराश

(i) दुकान व्यय ₹ 600 प्रतिमाह, मजदूरी ₹ 9,200 प्रतिमाह और निजी व्यय ₹ 1400 प्रतिमाह को चुकाने के पश्चात अधिकोष (बैंक) में ₹ 7,62,750 जमा किए।

(ii) ₹ 1,21,000 आहरण किए।

(iii) पूर्तियों के लिए ₹ 77,200 पूर्तिकर्ता को तथा उपस्कर के लिए ₹ 25,000 का नगद भुगतान।

(iv) उपभोक्ताओं से संग्रहित (चैक) लेकिन ₹ 5,700 का अनादरित हो गया।

(v) उपभोक्ताओं द्वारा ₹ 40,000 का विपत्र स्वीकार किया गया।

(vi) ₹ 10,000 का विपत्र बेचान किया।

(vii) ₹ 20,000 का विपत्र भुनाया, ₹ 750 बट्टा।

(viii) विपत्र परिपक्व हुआ और ₹ 16,000 का संग्रहित हुआ।

(xi) ₹ 24,000 का विपत्र स्वीकृत हुआ।

(x) धनादेश (चैक) द्वारा ₹ 3,20,000 पूर्तिकर्ता को दिये।

(xi) स्वामी की एक L.I.C नीति परिपक्व होने पर धनादेश (चैक) द्वारा ₹ 20,000 प्राप्त।

(xii) धनादेश (चैक) द्वारा ₹ 14,000 किराया प्राप्त।

(xiii) 31-11-2005 को एक शाखा खुलवाने के लिए ₹ 3,50,000 का एक भवन खरीदा तथा कुछ व्यय किये गये थे जिसका ब्यौरा नहीं बनाया गया है।

(xiv) विद्युत तथा टेलीफोन का नगद भुगतान ₹ 18,700, ₹ 2,200 बकाया।

अन्य सौदे—

(i) कानूनी विवाद के अन्तर्गत ₹ 1,55,000 की हानि के लिए फर्म के सामने दावा किया गया। कानूनी व्यय ₹ 17,000। फर्म को वाद के हार जाने की आशंका है।

(ii) पूर्तिकर्ता को ₹ 4,200 का माल वापस किया।

(iii) उपभोक्ता द्वारा ₹ 1,200 का माल वापस हुआ।

(iv) पूर्तिकर्ता द्वारा ₹ 2,700 का बट्टा प्रस्तावित हुआ।

(v) उपभोक्ता को ₹ 2,400 का बट्टा प्रस्ताव दिया।

(vi) स्वामी द्वारा स्वयं के परिसर पर व्यवसाय चलाया जा रहा है। भूमि तल का 50% क्षेत्र व्यवसाय हेतु मुक्त है तथा शेष 50% ₹ 20,000 के वार्षिक किराये से किराया पर दिया हुआ है।

31.12.2008 पर समाप्त होने वाले वर्ष के लिए मिस्टर अनूप का लाभ एवं हानि खाता एवं उसी तिथि का आर्थिक चिट्ठा तैयार करिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

Trading and Profit & Loss A/c of Mr. Anup
for the year ending 31st March, 2008

	₹	₹		₹	₹
To Opening Stock		1,10,000	By Sales	9,59,750	
To Purchases	4,54,100		*Less:* Sales Return	1,200	9,58,550
Less: Purchases Return,	4,200	4,49,900	By Closing Stock		1,90,000
To Gross Profit		5,88,650			
		11,48,550			11,48,550
To Wages		1,10,400	By Gross Profit		5,88,650
To Electricity & Tel. Charges		20,900.	By Discount		2,700
To Legal expenses		17,000			
To Discount		3,150			
To Shop exp.		7,200			
To Provision for claims for damages		1,55,000			
To Shop Rent (Notional)		20,000			
To Net Profit		2,57,700			
		5,91,350			5,91,350

Balance Sheet as on 31-12-2008

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
Capital A/c	2,38,200		Building		3,72,000
Add: Fresh capital introduced			Furniture		25,000
Maturity value from LIC	20,000		Stock		1,90,000
Rent	14,000		S. Debtors		92,000
Add: Notional Rent	20,000		Bills Receivable		6,000
Add: Net Profit	2,57,700		Cash at Bank		87,000
	5,49,900		Cash in Hand		5,300
Less : Drawing	16,800	5,33,100			
S.Creditors		56,000			
Bills Payable		14,000			
Outstanding expenses					
Legal Exp.	17,000				
Electricity & Telephone charges	2,200	19,200			
Provision for claime for damages		1,55,000			
		7,77,300			7,77,300

© The Institute of Chartered Accountants of India

Working Notes :

Sundry Debtors Account

Dr.			*Cr.*
	₹		₹
To Balance b/d	70,000	By Bill Receivable A/c- Bills Accepted by customers	40,000
To Bill Receivable A/c- Bills Dishonoured	3,000	By Bank A/c- Cheque received	5,700
To Bank A/c-Cheque dishonoured	5,700	By Cash	8,97,150
To Credit sales (Balancing figure)	9,59,750	By Return inward A/c	1,200
		By Discount A/c	2,400
		By Balance c/d	92,000
	10,38,450		10,38,450

Bills Receivable A/c

	₹		₹
To Balance b/d	15,000	By S. Creditors A/c Bills endorsed	10,000
To S. Debtors A/c Bills accepted	40,000	By Bank A/c	19,250
		By Discount A/c (Bills discounted)	750
		By Bank Bills Collected of Maturity	16,000
		By S. Debtors Bills dishonoured (Bal. Fig)	3,000
		By Balance c/d	6,000
	55,000		55,000

Sundry Creditors Account

	₹		₹
To Bank	3,20,000	By Balance c/d	40,000
To Cash	77,200	By Credit purchase (Balancing figure)	4,54,100
To Bill Payable A/c	24,000		
To Bill Receivable A/c	10,000		
To Return Outward A/c	4,200		
To Discount Received A/c	2,700		
To Balance b/d	56,000		
	4,94,100		4,94,100

© The Institute of Chartered Accountants of India

Bills Payable Account

	₹		₹
To Bank A/c Balance figure	22,000	By Balance c/d	12,000
To Balance c/d	14,000	S. Creditors A/c Bills accepted	24,000
	36,000		36,000

Summary Cash Statement

	Cash	*Bank*		*Cash*	*Bank*
	₹	₹		₹	₹
To Balance b/d	5,200	90,000	By Bank	7,62,750	
To S.Debtors (Bal. Fig)	8,97,150		By Cash		1,21,000
To Cash		7,62,750	By Shop exp.	7,200	
To Bank	1,21,000		By Wages	1,10,400	
			By Drawing A/c	16,800	
To S.Debtors		5,700	By Bills Payable		22,000
To Bills Receivable		19,250	By S. Creditors	77,200	3,20,000
To Bills Receivable		16,000	By Furniture	25,000	
To Capital (maturity value of LIC policy)		20,000	By S. Debtors		5,700
To Capital (Rent received)		14,000	By Electricity & Tel. Charges	18,700	
			By Building (Bal. Fig)		3,72,000
			By Balance c/d	5,300	87,000
	10,23,350	9,27,700		10,23,350	9,27,700

Statement of Affairs as on 31-12-2007

Liabilities	₹	*Assets*	₹
S. Creditors	40,000	Stock	1,10,000
Bills Payable	12,000	Debtors	70,000
Capital : Balancing figure	2,38,200	Bills Receivable	15,000
		Cash at Bank	90,000
		Cash in Hand	5,200
	2,90,200		2,90,200

© The Institute of Chartered Accountants of India

उदाहरण (Illustration) **10**

ए. वी. एल. टंकण योग्यता के साथ एक बेरोजगार विज्ञान स्नातक है तथा वह ₹ 2,500 प्रतिमाह से अधिक के लिये रोजगार पाने में असमर्थ है। वह स्वयं का टाइपिंग संस्थान प्रारम्भ करने का निर्णय लेता है। उसे 1 जनवरी 2008 को उसके पिता ₹ 25,000 उपहार में देते है। वह ₹ 24,000 मूल्य के 6 टाइपराइटर क्रय करता है।

खातों को ठीक से समझने में असमर्थ, वह 31 दिसम्बर 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष से सम्बन्धित लाभ एवं हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा तैयार करने में आपकी मदद चाहता है। उसकी पास बुक से निम्नलिखित पता चलता है—

(a)	संस्था के खर्चे	8,400
(b)	आत्म वेतन	4,000
(c)	मासिक शुल्क संग्रहित	32,700
(d)	परीक्षण शुल्क संग्रहित	4,200

निम्नलिखित अतिरिक्त विवरण उपलब्ध है—

(1) वर्ष के दौरान ए. वी. एल. ने ₹ 400 की एक विद्यार्थी से पुरानी साइकिल खरीदी जो ₹ 100 मासिक शुल्क देता है। शेष चुका दिया गया। साइकिल का उपयोग सिर्फ संस्था के लिये किया जाता है।

(2) ए. वी. एल. ने मित्र को ₹ 1,000 के लिये एक धनादेश के नगदीकरण (चैक) द्वारा मदद की जो कि अनादृत हो गया। मित्र ने अभी केवल ₹ 400 का पुनः भुगतान किया।

(3) ए. वी. एल. ₹ 600 प्रतिमाह अपने वेतन के अतिरिक्त निजी व्ययों के लिये निकालता है।

(4) ए. वी. एल. अपने घर से संस्था को चलाता है, जिसके लिये ₹ 600 प्रतिमाह किराया देता है।

(5) 31-12-2008 के अन्त में निम्नलिखित अदत्त हैं :

		₹
(a)	प्राप्य शुल्क	2,200
(b)	देय व्यय	1,000
(c)	नवम्बर तथा दिसम्बर माह का स्वयं का वेतन	
(d)	हाथ में मुद्रण सामग्री का रहतिया	200

(6) टंकण तथा साइकिल पर 20% ह्रास लगाया गया।

(7) अधिकोष (बैंक) से ऋण का पुनः भुगतान ₹ 500 प्रतिमाह अग्रगामी जुलाई के प्रारम्भ से किया जाता है। मूलधन के लिये किश्तों के अतिरिक्त 12% प्रतिवर्ष ब्याज देय है।

(8) माना कि सभी सौदे अधिकोष (बैंक) से किये जाते हैं व रोकड़ का प्रबन्ध नहीं है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

समाधान (Solution)

Profit & Loss Account AVL
for the year ending 31st December, 2008

		₹	₹		₹	₹
To	Sundry Expenses	8,400		By Fees earned		35,000
	Add: Outstanding	1,000	9,400	By Examination fee		4,200
To	Rent		3,600	By Stock of Stationery		200
By	Depreciation:					
	Typewriters	4,800				
	Cycle	80	4,880			
"	Interest on Loan		2,295			
"	Net profit transferred					
	to capital A/c		19,225			
			39,400			39,400

Balance Sheet of Mr. AVL as on 31st Dec. 2008

Liabilities	₹	₹	*Assets*	₹	₹
Capital	5,000				
Add: Net Profit	19,225		Typewriters	24,000	
	24,225		*Less:* Dep.	4,800	19,200
Less: Drawings	14,800	9,425	Cycle	400	
			Less: Dep.	80	320
Bank loan		17,000	Stock of stationery		200
Expenses payable		1,000	Fees receivable		2,200
			Loan to friend		600
			Cash at bank		4,905
		27,425			27,425

ए. वी. एल. ने संस्था की शुरुआत में एक सही निर्णय लिया। संस्था के प्रारम्भ के पश्चात् ए. वी. एल. की नगदी स्थिति व शुद्ध लाभ स्थिति रोजगार से कमाई से बेहतर है।

क्रियात्मक टिप्पणियाँ—

		₹
(1)	उपार्जित शुल्क	32,700
	जोड़े—अंतिम तिथि पर देय क्रय की गई साइकिल के लिए	2,200
	भुगतान में समायोजन	100
		35,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

(2) अधिकोष (बैंक) ऋण पर 12% प्रतिवर्ष से ब्याज

	₹
जनवरी से जून के लिये ₹ 20,000	1,200
जुलाई के लिये ₹ 19,500	195
अगस्त के लिये ₹ 19,000	190
सितम्बर के लिये ₹ 18,500	185
अक्टूबर के लिये ₹ 18,000	180
नवम्बर के लिये ₹ 17,500	175
दिसम्बर के लिये ₹ 17,000	170
	2,295

(3) **Bank Account**

	₹		₹
To Capital A/c (Gift)	5,000	By Typewriters	24,000
" Bank Loan	20,000	" Sundry Expenses	8,400
" Student's fees	32,700	" Drawings (salary)	4,000
" Exam, fees	4,200	" Cycle (Purchase)	300
" Sundries (friend's Cheque)	1,000	" Advance (friend's)	1,000
To Advance (Recovered)	400	" Sundries (friend's cheque dishonoured)	1,000
		" Drawings	7,200
		" Rent Paid	7,200
		" Bank loan (500 × 6)	3,000
		" Bank Interest	2,295
		" Balance c/d	4,905
	63,300		63,300

(4) **Drawings Account**

	₹		₹
To Rent	3,600	By Balance c/d	14,800
To Bank-Cash withdrawal	7,200		
To Bank-Taken as salary	4,000		
	17,800		14,800

(5) स्वामी के वेतन को व्यय के किसी मद की तरह नहीं माना गया है। लाभ को पूँजी, श्रम व प्रबन्धन की उत्पत्ति माना जा रहा है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

सारांश
(SUMMARY)

- इकहरा लेखा प्रणाली सामान्यतः एकल व्यापारी संस्थाओं या यहाँ तक कि कुछ हदतक साझेदारी फर्मों में पायी जाती है, लेकिन कानूनी आवश्यकताओं के कारण सीमित दायित्व कम्पनियों की दशा में यह नहीं पायी जाती है।
- यहाँ इकहरे लेखा प्रणाली में तीन प्रकार आधारित है—
  (i) शुद्ध इकहरा लेखा;
  (ii) सामान्य इकहरा लेखा;
  (iii) अर्द्ध इकहरा लेखा।
- इकहरा लेखा प्रणाली दोहरे पक्ष की अवधारणा को उपेक्षित करती है और अतः सौदे द्विपक्षीय अवस्था में नहीं लिखे जाते हैं।
- अंतिम पूँजी = प्रारम्भिक पूँजी + अतिरिक्त पूँजी – आहरण + लाभ
- पूर्ण लेखांकन सूचनाओं को प्राप्त करने की तकनीकें।
  सामान्य तकनीक
- रोकड़ बही से सूचनाओं की व्युत्पत्ति।

स्व-परीक्षा प्रश्न
(SELF-EXAMINATION QUESTIONS)

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

दिए गये विकल्पों से अधिक उपयुक्त उत्तर चुनिये—

1. लेखांकन वर्ष की प्रारम्भिक पूँजी इकहरा लेखा प्रणाली से तैयार कर पता लगायेंगे—
   (अ) प्रारम्भिक स्थिति विवरण
   (ब) रोकड़ खाता
   (स) अधिकोष (बैंक) खाता
   (द) बैंक समाधान विवरण
2. इकहरा लेखा प्रणाली का प्रयोग निम्न द्वारा किया जा सकता है—
   (अ) लघु फर्म
   (ब) संयुक्त स्कन्ध कम्पनियाँ
   (स) सहकारी समितियाँ
   (द) दीर्घ फर्म
3. उधार बिक्री का सुनिश्चित लाभ जायेगा—
   (अ) लाभ हानि खाता तैयार करके
   (ब) चिट्ठा विवरण तैयार करके

© The Institute of Chartered Accountants of India

(स) लेखांकन अवधि के प्रारम्भिक पूँजी तथा लेखांकन अवधि के अंत में पूँजी तुलना करके

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं

4. शुद्ध लाभ की विधि की स्थिति में लाभ निर्धारित किया जायेगा—

(अ) लाभ एवं हानि खाता तैयार करके

(ब) आर्थिक चिट्ठा तैयार करके

(स) लेखांकन अवधि के प्रारम्भिक पूँजी को लेखांकन अवधि के अंतिम पूँजी से तुलना करके।

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं

[**उत्तर** (Answer)—1. (अ), 2. (अ), 3. (द), 4. (स)।]

II. लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

5. पूँजी विधि क्या है? इसके लाभ क्या हैं?

6. स्थिति विवरण व चिट्ठे के बीच अन्तर बताइये।

7. इकहरा लेखा प्रणाली से क्या आशय है? इसके लाभ क्या हैं?

8. इकहरा लेखा प्रणाली, दोहरा लेखा प्रणाली से कैसे भिन्न है? संक्षिप्त में व्याख्या कीजिये।

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

9. इकहरा लेखा प्रणाली अन्तर्गत खातों को बनाने के लिये लाभ की गणना कैसे की जायेगी?

IV. क्रियात्मक प्रश्न (Practical Problems)

10. मिस्टर रमेश के पास 1-1-2007 को अधिकोष (बैंक) खाते में ₹ 3,30,000 थे जब उन्होंने अपना व्यवसाय आरम्भ किया था। वह 31 मार्च 2008 को अपने खातों को बन्द करते हैं। उनकी इकहरा लेखा प्रणाली पुस्तकें (जिसमें उसने बैंक के लिये कोई खाता नहीं बनाया) उसकी स्थिति निम्न रूप से दर्शायी गयी है।

	31-3-2007	31-3-2008
	₹	₹
हस्तस्थ में रोकड़	2,200	3,300
व्यापार में रहतिया	20,900	31,900
देनदार	1,100	2,200
लेनदार	5,500	3,300

1-2-2007 से और को; उसने व्यवसाय के रोकड़ संदूक से अपने निजी व्ययों के लिये ₹ 270 प्रतिमाह आहरण आरम्भ कर दिये। अधिकोष (बैंक) सहित उसके खाते में अग्र लेखे किये गये हैं—

© The Institute of Chartered Accountants of India

	जमा	आहरण
	₹	₹
1-1-2007	3,30,000	—
1-1-2007 से 31-3-2008 तक	—	2,45,300
1-1-2007 से 31-3-2008 तक	2,58,000	2,97,000

उपरोक्त आहरणों में यंत्र को भुगतान करने के लिये धनादेश (चैक) द्वारा ₹2,20,000 और ₹66,000 का भुगतान वर्ष के दौरान क्रमशः 1-1-2007 से 31-3-2007 तक व 1-4-2007 से 31-3-2008 तक व्यवसाय के लिये शामिल है। 1-1-2007 को उपभोक्ताओं से धनादेश (चैक) द्वारा विक्रय मूल्य का पूर्णांक में अनुकूल होने के बाद जमा किये।

मि. रमेश का क्रमशः 31-3-2008 के लिये स्थिति विवरण बनाइए तथा वर्ष के अंत में 31-3-2008 के लिये उसका लाभ या हानि निकालिये।

11. 1 जनवरी 2007 को मि. राजा के अधिकोष (बैंक) में ₹6,00,000 थे, जब उन्होंने ने अपना व्यवसाय आरम्भ किया था। वह अपने खातों को 31 मार्च 2008 को बंद करते हैं। उनकी इकहरा लेखा पुस्तकें (जिसमें उन्होंने बैंक के लिये कोई खाता नहीं बनाया है।) उनकी स्थिति निम्न रूप से दर्शायी है—

	31-3-2007	31-3-2008
	₹	₹
हस्तस्थ में रोकड़	4,000	6,000
व्यापार में रहतिया	38,000	58,000
विविध देनदार	2,000	4,000
विविध लेनदार	10,000	6,000

वह 1 अप्रैल, 2007 से अपने घरेलू व्ययों के लिये ₹1,400 प्रति माह व्यवसाय के रोकड़ सन्दूक से आहरण कर रहे थे।

उनका अधिकोष (बैंक) खाता निम्नलिखित लेखों को दर्शाता है।

	जमा	आहरण
	₹	₹
1-1-2007	6,00,000	—
1-1-2007 से 31-3-2008 तक	—	4,46,000
1-4-2007 से 31-3-2008 तक	4,60,000	5,40,000

उपरोक्त आहरणों में क्रमशः यंत्र को क्रय एवं उपस्कर तथा उपयुक्त वस्तु धनादेश (चैक) द्वारा क्रमशः 4,00,000 व 1,20,000 का भुगतान वर्ष के दौरान क्रमशः 1-1-2007 से 31-3-2007 और 1-4-2007 से 31-3-2008 तक में शामिल है और धनादेश (चैक) द्वारा ग्राहकों से प्राप्त का विक्रय मूल्य का पूर्णांक 1 जनवरी 2007 के बाद जमा किये। पूर्ण वर्ष के लिये, अपलिखित विधि के अंतर्गत यंत्र के लिये 15% और उपस्कर व उपयुक्त वस्तु के लिये 10% की दर से ह्रास लगाया जाता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

मि. राजा का क्रमशः 31-3-2008 को स्थिति विवरण बनाइये। 31-3-2008 समाप्त वर्ष के लिये उसका लाभ निकालिये।

12. निम्नलिखित सूचनाओं से उधार बिक्री को निर्धारित कीजिये—

1-1-2008 को विविध देनदार	1,20,000
31-12-2008 को विविध देनदार	1,70,000
31-12-2008 को प्राप्य विपत्र	50,000
2008 के लिये उपभोक्ता द्वारा स्वीकृत विपत्र	1,20,000
पूर्तिकर्ता के पक्ष में बेचान किया गया विपत्र	40,000
प्राप्य विपत्र अनादृत	4,000
अनादृत विपत्र पर व्यय	100
अनादृत विपत्र के स्थान पर उपभोक्ता द्वारा नया विपत्र स्वीकार किया गया	3,100
देनदारों से संग्रहित अधिकोष (बैंक) अनादृत विपत्र का संग्रहण छोड़कर) और अनादरित धनादेश (चैक)	6,82,200
माल वापसी	13,000
प्रस्तावित बट्टा	
दिवालिया होने पर ग्राहकों का अनादृत चैक (दिवालिया ग्राहक की सम्पत्तियों से केवल 40% संग्रहित)	21,200
देनदारों के माध्यम से वापस बेचान किये गये देय विपत्र	7,200
विविध लेनदारों से समायोजित	5,000

13. "A" आपको 31 दिसम्बर, 2008 के वर्ष से सम्बन्धित अपने व्यवसाय से सम्बन्धित निम्नलिखित राशियों को जमा करता है। आपको वर्ष के अंत के लिये एक लाभ व हानि खाता तथा 31 दिसम्बर 2008 के लिये एक चिट्ठा तैयार करना आवश्यक है।

रोकड़ शेष में किसी अन्तर को आहरण के रूप में माना जायेगा—

	₹
अधिकोष (बैंक) में नगद जमा	1,50,000
अधिकोष (बैंक) में निजी लाभांश जमा	2,000
अधिकोष (बैंक) से निजी भुगतान	26,000
अधिकोष (बैंक) से माल का भुगतान	1,22,000
देनदारों से नकद प्राप्ति	2,50,000
नगद व धनादेश (चैक) से माल का भुगतान	1,60,000
मजदूरी	40,000
सुपुर्दगी व्यय	7,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

किराया एवं कर	2,000
बत्ती एवं ताप	1,000
सामान्य व्यय	4,600

सम्पत्तियाँ एवं दायित्व निम्न प्रकार से हैं—

सम्पत्तियाँ एवं दायित्व	1 जनवरी, 2008	31 दिसम्बर, 2008
	₹	₹
रहतिया	20,000	15,000
अधिकोष (बैंक) शेष	8,000	12,000
हस्तस्थ में रोकड़	300	400
व्यापारिक देनदार	14,000	20,000
व्यापारिक लेनदार	27,300	30,000
विनियोग	50,000	50,000

14. निम्नलिखित सूचनाओं से एक फर्म द्वारा कलैण्डर वर्ष के दौरान विक्रय को निर्धारित कीजिये—

	₹
प्रारम्भिक रहतिया	80,000
अंतिम रहतिया	90,000
मालिक द्वारा लागत पर लिया गया माल	10,000
आग से जलकर नष्ट हुआ माल (लागत पर)	5,000
क्रय	5,70,000
सकल लाभ अनुपात	लागत पर $33\frac{1}{3}\%$

15. निम्नलिखित सूचना से 2008 कलैण्डर वर्ष के दौरान एक फर्म द्वारा विक्रय का निर्धारण कीजिये।

	₹
प्रारम्भिक देनदार	17,000
अंतिम लेनदार	28,000
संग्रहण	2,12,000
प्रारम्भिक स्कन्ध से अंतिम स्कन्ध का आधिक्य	5,000
सकल लाभ अनुपात	25%

© The Institute of Chartered Accountants of India

16. 'ए' एक थोक विक्रय व्यापारी है। उन्होंने खातों की पुस्तकों का उचित लेखा नहीं किया है। वह निम्नलिखित सूचना की पूर्ति करता है।

(i)	31-12-2007 को स्थिति विवरण	₹
	उपस्कर तथा अन्य स्थायी सम्पत्तियाँ	80,000
	स्कन्ध लागत पर	2,50,000
	देनदार	10,000
	लेनदार	30,000
	हाथ में रोकड़	150
	अधिकोष (बैंक) में रोकड़	11,000
(ii)	बैंक पास बुक से विवरण	₹
	जमा	8,70,000
	आहरण	3,50,000
	पूर्तिकर्त्ताओं को धनादेश (चैक)	3,20,000
(iii)	कर	₹
	कर के लिये धनादेश (चैक)	30,000
	विद्युत, टेलीफॉन तथा किराया के लिए धनादेश (चैक)	54,000
(iv)	नगद भुगतान	₹
	वेतन, मजदूरी व बोनस	1,74,000
	कर्मचाय व्यय	47,000
	व्यक्तिगत खर्चे	84,000
(v)	बट्टा प्राप्ति	4,200
	बट्टा दिया	8,200

(vi) उन्होंने सभी क्रय व विक्रय उधार पर करता है। लेकिन वह सभी संग्रहों को तुरन्त बैंक में निक्षेप (Depisit) करने की प्रथा का पालन करता है। लेकिन सितम्बर 2008 में कभी उसका रोकड़ या उसके रोकड़ के हस्तस्थ रोकड़ निकाल ली जो कि वेतन के भुगतान हेतु बैंक से आहरित तथा जमा हेतु कुछ विचारणीय संग्रह दोनों का प्रतिनिधित्व करता था।

(vii) 31-12-2008 को हाथ में रोकड़ ₹500

(viii) वह बिके हुए माल की लागत पर 25% की दर से सकल लाभ कमाता है।

(ix) लेनदारों का अंतिम शेष ₹50,000

अंतिम देनदार ₹27,000

31-12-2008 को समाप्त वर्ष के लिये मि. 'ए' के अंतिम खाते बनाइये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

17. A तथा B, 1 जनवरी 2007 को ₹ 50,000 के साथ पूँजी के रूप में, समान संग्रहित करके एक व्यवसाय आरम्भ किया लेकिन लाभ विभाजन अनुपात 3:2 था। उनका आहरण क्रमशः ₹ 300 व ₹ 200 प्रति माह था। वे कोई खाते नहीं रखते थे लेकिन आपको निम्नलिखित सूचनायें दी हैं।

	31-12-2007	31-12-2008
	₹	₹
यन्त्र लागत पर	20,000	25,000
व्यापार में स्कन्ध	30,000	30,000
देनदार	50,000	60,000
रोकड़	2,000	500
लेनदार	30,000	20,000
अदत्त व्यय	4,000	3,000
बैंक शेष (पास बुक के अनुसार)	6,000	8,000

प्रत्येक वर्ष के अन्त में यन्त्र की लागत पर 10% से ह्रास का प्रावधान है। 31-12-2007 को देनदार में प्रेषण पर भेजा गया माल उपरोक्त लागत का 25% में शामिल है, और 2008 में केवल माल बेचा गया ₹ 1,000 का एक धनादेश (चैक) 31-12-2007 को जमा किया लेकिन 2-1-2008 को समाकलित (Credited) किया गया।

₹ 2,000 का एक धनादेश (चैक) 26-12-2008 को निगर्मित किया व 3-1-2009 को प्रस्तुत किया गया था। 21,000 का धनादेश (चैक) एक उपभोक्ता द्वारा 27-12-2008 को सीधे जमा किया लेकिन न तो पास बुक में और न ही रोकड़ बही में कोई लेखा नहीं है। ₹ 500 का धनादेश (चैक) दिसम्बर 2008 को अनादृत हो गया था लेकिन इसके लिये कोई समायोजन नहीं किया गया।

2005 के लिये लाभ निर्धारण करें तथा 31 दिसम्बर, 2008 को आर्थिक चिट्ठा बनाइए।

18. मि. अशोक ने निम्नलिखित सूचना दी हैं

(1) प्रारम्भिक एवं अंतिम शेष

	31-12-2007	31-12-2008
	₹	₹
स्कन्ध	1,70,000	1,80,000
देनदार	1,10,000	2,10,000
प्राप्य विपत्र	40,000	60,000
देय विपत्र	20,000	30,000
विविध लेनदार	40,000	2,20,000
अधिकोष (बैंक)	70,000	75,000
रोकड़	5,200	6,100

(2) वह सभी क्रय एवं विक्रय उधार पर करता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(3) नगद व्यवहारों का सांराश

		₹
अनादृत चैक तथा विपत्र के लिये नगद–		12,14,000
बैंक के माध्यम से सीधा संग्रहण		5,72,000
अंशों में निवेश		72,000
लेनदारों को भुगतान	नगद	1,70,000
	चैक	5,11,000
वेतन तथा मजदूरी	नगद	4,40,000
कार्यालय व्यय	नगद	80,000
विपत्र भुनाया	खाते को समाकलित (Credited)	60,000
	बट्टा	1,200
परिपक्व होने पर संग्रहित विपत्र	खाते को समाकलित (Credited)	12,000
अनादृत विपत्र	विपत्रों की राशि	5,000
	निकराई व्यय	100
धनादेश (चैक)	चैक की राशि	40,000
	बैंक प्रभार	20
पूर्तिकर्त्ताओं का ड्राफ्ट	राशि	1,00,000
	कमीशन	100

स्वामी एक गृह का निर्माण कर रहा है, जिसके लिये वह नगद लेता है लेकिन कोई खाता नहीं बनाया गया है।

	₹
परिपक्व पर विपत्र मिलना	10,000
बेचान विपत्र	12,000
बेचान किये गये देय विपत्र	5,000

(4)

विक्रय वापसी	17,000
क्रय वापसी	5,000
बट्टा प्राप्य	12,000
बट्टा दिया	24,000

(5) एक उपभोक्ता, जिसका विपत्र अनादृत हो गया था। ₹ 3,000 नगदी चुकाये और शेष के लिये नया विपत्र स्वीकार किया। यह अभी तक खातों में लेखा नहीं किया गया।

(6) एक उपभोक्ता जिसका धनादेश (चैक) दिवालिया होने के कारण अनादृत हो गया। उसकी सम्पत्तियों से केवल 20% का संग्रहित हुआ।

मिस्टर अशोक के अंतिम खाते बनाइए।

© The Institute of Chartered Accountants of India

19. इंडियन ट्रेवल एजेन्सी, इनलैण्ड ट्रान्सपोर्ट लि., भारत एयर लाइन और सरकारी रेलवे के लिए टिकटों को बेचते हैं। एजेन्सी के दौरान कमीशन की दर, टिकटों की बिक्री को टिकटों के मूल्य बिक्री पर क्रमशः 10%, 7.5% व 5% दिये जाते हैं।

फर्म 31 दिसम्बर को अपनी पुस्तकों को बंद करता है। 31 दिसम्बर 2007 को निम्न प्रकार के शेष थे—

	₹	₹
पूँजी		50,000
अंतर्देशीय परिवहन लि. का		10,000
ग्राहकों से जमा सामान्य सार्वजनिक से जमा		10,000
उपरोक्त अधिविकर्ष के लिये देय ब्याज		500
अंकेक्षण शुल्क		1,500
विज्ञापन		1,000
किराया एवं कर		500
स्थिर व उपयुक्त वस्तु	20,000	
मोटर कार	18,000	
रेल टिकटों के लिये देनदार	5,000	
एयर टिकटों के लिये देनदार	2,000	
अग्रिम में किराया दिया	1,250	
अधिकोष (बैंक) शेष	27,250	
	73,500	73,500

अन्य विवरण उपलब्ध है—

(1) अधिकोष (बैंक) विवरणों से, धनादेशों (चैकों) की वापसी और 31 दिसम्बर 2008 वर्ष के अन्त के लिये जमा रसीद है—

	₹
बैंकिंग (धनादेश व नगद)	8,97,5000
टिकटों के लिये भुगतान	
इनलैण्ड ट्रान्सपोर्ट लि.	6,20,000
भारत एयर लाइन्स	1,69,000
सरकारी रेलवे	84,000
4 तिमाहियों के लिये किराया चुकाया	5,000
विद्युत	5,000
किराया एवं कर	3,000
अपने निक्षेप पर जनता को ब्याज चुकाया	1,000
अंकेक्षण की राशि चुकायी	1,500
विज्ञापन	6,250
31 दिसम्बर 2008 को अधिकोष (बैंक) शेष	30,000

© The Institute of Chartered Accountants of India

(2) बैंकिंग जमा करने से पहले नगद प्राप्तियों से साप्ताहिक व्ययों को अदा किया।

	₹
कर्मचारियों की मजदूरी	1,100
फुटकर व्यय (कुल 52 सप्ताहों के लिये)	4,200

उपरोक्त के अतिरिक्त में मालिक बैंक में जमा करने से पहले रोकड़ प्राप्तियों में से एजेन्सी के ब्याज में 1,000 प्रतिमाह कार की देखभाल करने के लिये खर्च करता है और 2,000 प्रतिमाह निजी व्ययों के लिये आहरण करता है।

(3) 31 दिसम्बर 2008 को फर्म के दायित्वों में शामिल है—

	₹
अंकेक्षण	1,500
विज्ञापन प्रभार	1,250
किराया एवं कर	1,000
इनलैण्ड ट्रान्सपोर्ट लि.	5,500
भारत एयर लाइन्स	16,000
सरकारी रेलवे	11,000

(4) 31 दिसम्बर 2008 इंडियन ट्रान्सपोर्ट लि. के लिए उपभोक्ताओं का निक्षेप 8,000

(5) 31 दिसम्बर 2008 को एयर तथा रेल टिकटों के लिये देनदार क्रमशः ₹ 2,500 व ₹ 800 के थे।

(6) पिछले वर्षों के शेषों पर कार तथा फिक्स्चर पर क्रमशः 20% व 10% की दर से ह्रास लगाया जाता है।

(7) रोकड़ में अन्तर को यदि कोई हो तो उसे मालिक उसे आहरण के रूप में उपचारित करने के लिये सहमत है।

आपको 31 दिसम्बर, 2008 को समाप्त वर्ष के लिये बिके हुए प्रत्येक श्रेणी की टिकटों पर दर्शाया गया उपार्जित कमीशन लाभ व हानि खाता 31 दिसम्बर, 2008 के लिये आर्थिक चिट्ठा को बनाना आवश्यक हैं।

20. 1 जनवरी, 2007 पर 'A' तथा 'B' ₹ 20,000 तथा ₹ 30,000 के अंशदान से साझेदारी में प्रवेश करते हैं। 1 जुलाई, 2007 को फर्म ने ₹ 25,000 पूँजी के रूप में चुकाने पर C को प्रवेश में लिया था और 1 जनवरी, 2008 को D को प्रवेश दिया जिसने अपनी पूँजी का ₹ 12,000 चुकाये। समय के दौरान A, B, C व D साझेदार थे, वे वार्षिक वेतन क्रमशः ₹ 8,000, ₹ 8,000, ₹ 7,500 और ₹ 6,000 का भुगतान करते थे। प्रत्येक साझेदार के लिये ₹ 300 प्रतिमाह वेतन के कारण आहरण सीमित है। अंतिम रूप से बनाये गये साझेदारी समझौते में वेतन के पश्चात् प्रति 6 माह हेतु लाभ के बंटवारे हेतु प्रावधान निम्नलिखित अनुपात के रूप में है।

A–3/10, B–3/10, C–2/10, D–2/10

© The Institute of Chartered Accountants of India

खातों की उचित पुस्तकें नहीं बनी थीं, लेकिन निम्नलिखित तथ्य रोकड़ बही का विश्लेषण प्रकट करते हैं।

	छः माह की समाप्ति पर			
	30 जून 2007	31 दिसम्बर 2007	30 जून 2008	31 दिसम्बर 2008
छः माहों की अवधि समाप्ति में विक्रय पर देनदारों से संग्रहित	₹	₹	₹	₹
30 जून, 2007	36,600	6,200	4,100	2,500
31 दिसम्बर, 2008	—	1,24,200	34,500	8,200
30 जून, 2008	—	—	1,92,500	53,900
31 दिसम्बर, 2008	—	—	—	3,47,300
क्रयों के लिये भुगतान	65,871	1,52,382	1,85,699	3,38,546
किराया व अन्य स्थिर लागत	5,698	6,550	10,891	12,141
अन्य व्यय	2,620	14,120	22,620	23,341
आहरण	3,600	5,400	7,200	7,200

Trade Debtors outstanding, considered goods on 31st Dec., 2008 by period of origin were :

छः महीने समाप्त के दौरान की गई बिक्री—

30 जून 2007	31 दिसम्बर 2007	30 जून 2008	31 दिसम्बर 2008
₹	₹	₹	₹
1,600	3,100	8,600	26,700

31 दिसम्बर, 2008 को अंतिम रहतिया में ₹ 14,285 का अदत्त विपत्र शामिल है जिसका मूल्य ₹ 83,084 था।

साझेदार सहमत हुए हैं कि—

(a) किराया तथा अन्य स्थिर लागत को चार छमाही अवधि में समान विभाजित किया जायेगा।

(b) इन अवधियों के दौरान बिके हुए माल की लागत बिक्री के क्रमशः 70%, 75%, 80% और 80% मानी जा सकती है।

(c) माल की किसी भी कमी का निष्कर्ष उपरोक्त राशियों से आवेदन तथा प्रतिशतों को अन्य व्ययों में उचित जोड़ने के रूप में ध्यान में रख सकते हैं।

(d) "अन्य व्यय" बिक्री के आनुपातिक में चारों अवधियों में फैले हुए हैं।

चार अर्द्धवर्ष अवधियों के लिये व्यापारिक तथा लाभ एवं हानि खाते तैयार कीजिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India